महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक

मंज़र अली सोख़्ता

छपवाने वाले

सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी,

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

पहलीबार] सन् १९४९ [क़ीमत दो [illegible]

छापने वाले—[illegible] जायसवाल, श्याम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद

दो शब्द

इंडियन नेशनल कांग्रेस ने पिछले चौंसठ बरस में इस देशकी जो जबरदस्त सेवा की है उसे इतिहास कभी भुला नहीं सकता. एक बहुत बड़े दरजे तक कांग्रेस ने ही इस देश को जगाया, लाखों और करोड़ों जनता में संगठन और क़ुरबानी का मादा पैदा किया और आखीर में देश को अंग्रेजी राज की गुलामी से आज़ाद किया.

पर जिस तरह से अच्छे से अच्छे आदमी भी पैदा होते हैं, बड़े होते हैं, दुनिया में बड़े बड़े काम करते हैं, बूढ़े होते हैं, कमजोर होते हैं, बीमार पड़ते हैं और फिर दुनिया से चल देते हैं, ठीक यही हालत दुनिया की अच्छी से अच्छी क़ौमों, सम्प्रदायों और संस्थाओं की होती है. किसी भी संस्था में समय के साथ कमजोरी और बीमारी का आना एक क़ुदरती चीज है. ऐसा होने पर अच्छी से अच्छी संस्थाओं को सुधारने, बदलने, नया रूप देने या खतम करने तक की जरूरत पड़ जाती है या समय उनका अपने आप अंत कर देता है.

इसी असूल के अनुसार इंडियन नेशनल कांग्रेस में भी कुछ बड़े से बड़े, नेक से नेक और ऊँचे से ऊँचे देश भक्तों के होते हुए भी पिछले कुछ बरसों से कमजोरियाँ दिखाई देने लगी थीं. मुल्क के अंग्रेजी राज से आज़ाद हो जाने और कांग्रेस के हाथ में हुकूमत आ जाने के बाद से यह कमजोरियाँ बहुत ज्यादा चमकने लगीं और तेजी के साथ बढ़ने लगीं.

महात्मा गांधी सचमुच इस देश की आत्मा थे. कांग्रेस के साथ तो उनका गहरे से गहरा नाता था. कभी कभी तो बिलकुल ऐसा लगता था कि गांधी जी ही कांग्रेस हैं और कांग्रेस ही महात्मा गांधी है. वह देश की जरूरतों को भी अच्छी तरह जानते पहचानते

थे. कांग्रेस की इस गिरती हुई हालत को भी वह अच्छी तर देख और समझ रहे थे. इसके इलाज की भी उन्हें सबसे अधि. चिन्ता थी. आख़िरी बरसों में उन्होंने कांग्रेस के दूसरे नेताओं और सेवकों के साथ इस बारे में अनेक बार चरचा की. उनकी नब्ज़ देश की नब्ज़ के साथ साथ चलती थी. अपने दिल के साफ़ शफ़्फ़ाफ़ शीशे में वह देश के रूप को ठीक ठीक देखते थे. अपनी अचानक मौत के कारन वह देश और कांग्रेस के इस रोग का इलाज अपने ढंग से न कर पाये पर हमारे लिये और देश के लिये यह जानना बहुत ज़रूरी है कि गाँधी जी ने कांग्रेस के इस रोग का क्या इलाज सोचा था.

२९ जनवरी सन् १९४८ को उन्होंने "लोक सेवक संघ" का एक नया छोटा सा विधान तैयार किया. अगले दिन दोपहर के बाद उन्होंने यह विधान कांग्रेस के जनरल सेक्रेट्री को बुलाकर उसके सुपुर्द किया और कहा कि यह आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सामने गांधी जी की तरफ़ से उनके समझाव के रूप में पेश किया जाय. पर इसके चंद घंटे के बाद ही गांधी जी चल बसे. यह विधान १५ फ़रवरी सन् १९४८ के 'हरिजन' में छपा है. कांग्रेस और देश के नाम बापू की यह आख़िरी वसीयत है. विधान ख़ुद बहुत छोटा सा है पर हर देश वासी के लिये इसका जानना और समझना ज़रूरी है. इस पुस्तक में गांधी जी की यह आख़िरी वसीयत उनके परम भक्त श्री मंज़र अली सोख़्ता की पूरी पूरी व्याख्या के साथ दी जा रही है. आशा है कि ठंडे दिल से देश की भलाई सोचने वाले बहुत से भाई बहनों को अपना आगे का रास्ता तय करने में इससे बहुत बड़ी मदद मिलेगी.

—सुन्दरलाल

नई दिल्ली

१७ अगस्त सन ४८ ई०
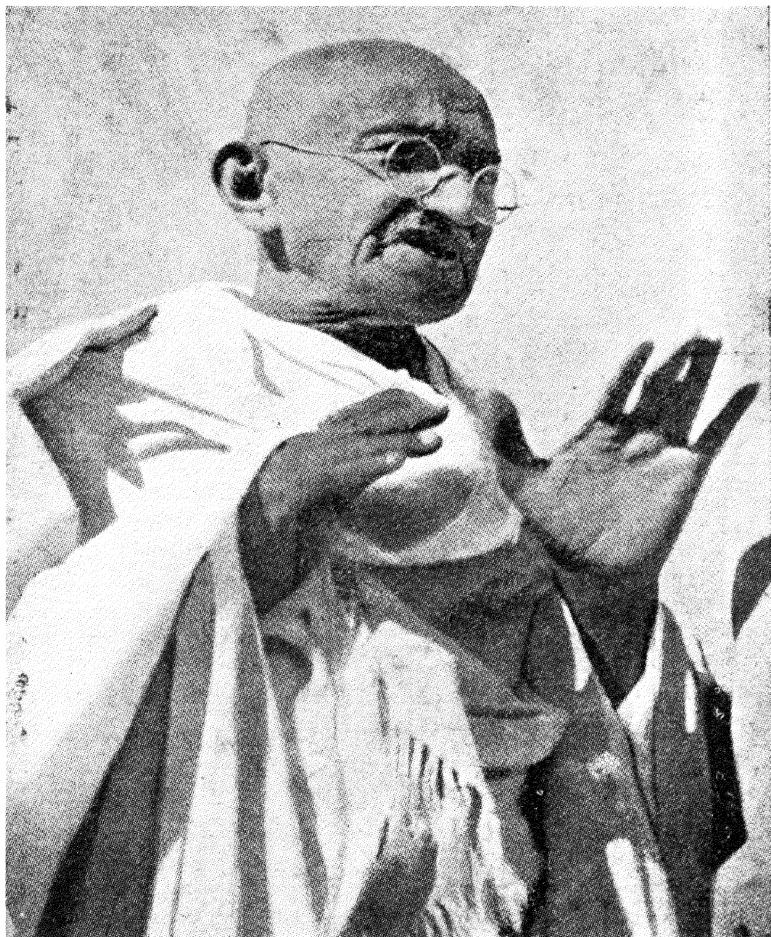
बापू

बापू के बुनियादी सिद्धान्त

महात्मा गांधी के "लोक सेवक संघ" के इस नये विधान को पूरी तरह समझने के लिये यह जरूरी है कि पहले हम उन बुनियादी सिद्धान्तों को समझ लें जिन पर बापू इन्सानी समाज को ढालना चाहते थे. हम यहाँ उनके गहरे आध्यात्मिक या रूहानी विचारों और आदर्शों में नहीं पड़ना चाहते. हम सिर्फ यह देखना चाहते हैं कि बापू इस दुनिया में हमारे समाज को क्या रूप देना चाहते थे. बापू का लोक सेवक संघ इसी दुनिया के लिये है और इसी दुनिया में लोगों के सच्चे सुख और सच्ची शान्ति से उसका सम्बन्ध है. थोड़े से शब्दों में बापू का मतलब यह था कि पच्छिमी सभ्यता और पच्छिमी साम्राजवाद के ज़ुल्मों और अनर्थों से अपने देश को और दुनिया को कैसे बचाया जावे. वह समझते थे कि सत्य और अहिंसा के हथियारों से ही पच्छिमी सभ्यता को जीता जा सकता है. इसी लिये इन हथियारों से काम लेना अपने देश वालों को सिखाना ही उन्होंने अपने जीवन का ख़ास मक़सद बना लिया था. अगर हम बापू के जीवन के इस पहलू को अच्छी तरह समझ लें तो उनका यह विधान भी हमारी समझ में आ जावेगा. इसीलिये विधान को देने से पहले हम गांधी जी के मोटे मोटे असूलों, उनके धर्म यानी सत्य और अहिंसा और पच्छिमी सभ्यता के बारे में उनके विचार, यह सब बयान कर देना चाहते हैं. सबसे पहले हम उनके धर्म को ही लेते हैं.

हज़ारों बरस पहले पूरब की सभ्यता ने दुनिया को दीन धर्म की ठोस बुनियादों पर क़ायम किया था और आदमी की ज़िन्दगी को दीन धर्म के साँचे में ही ढालना चाहा था. आज कल की पच्छिमी सभ्यता ने इन्सानी समाज की उन पुरानी बुनियादों को जड़से हिला दिया है. आज दुनिया के ९५ फ़ीसदी पढ़े लिखे लोग धर्म के उन सीधे सादे असूलों को भी, जिनका नेकी बदी से सम्बन्ध है, जैसे सच बोलना, चोरी न करना, दूसरों के साथ ईमानदारी बरतना, जिन्हें पुरानी दुनिया के लोग अटल मानते थे, फ़ज़ूल और निकम्मा समझते हैं और इन पर अमल करने वालों को पागल और दक़ियानूसी कहते हैं. वह समझ ही नहीं सकते कि आध्यात्मिक या रूहानी बातों को समझने के लिये और नेकी बदी के असूलों की असलियत जानने के लिये भी किसी तरह की तालीम या तजरबे की जरूरत है. यह सब समय का फेर है. इसका कोई झटपट इलाज हो भी नहीं सकता. बड़े-बड़े इन्क़लाबों के दिनों में इस तरह की कठिनाइयाँ पैदा होती रहती हैं. यह कठिनाइयाँ ही बढ़ कर इन्सानी समाज की बड़ी बड़ी मुसीबतों का कारन बन जाती हैं.

बापू इसी तरह के एक बहुत बड़े उलट फेर के जमाने में पैदा हुए. पुरानी सभ्यताओं के धर्म और नेकी बदी के विचार मिटते जा रहे थे. योरप के बढ़ते हुए तिजारती और राजकाजी तूफ़ान और पच्छिमी साम्राज ने इन पुरानी सभ्यताओं के इस तरह के विचारों और आदर्शों को निकम्मा, फीका और बे जान कर दिया था. गांधी जी की आत्मा इस देश को पुरानी सभ्यता के रंग में

गहरी रंगी हुई थी. दुनिया भर के अन्दर एक तरफ़ दीन और दूसरी तरफ़ दुनिया का मोह जाल या एक तरफ़ नेकी और बदी का ख़याल और दूसरी तरफ़ दुनिया परस्ती, इनके बीच खींचातानी जारी थी. ज़माने ने ज़बरदस्ती महात्मा गांधी को इस महासंग्राम के मैदान में धर्म और नेकी की तरफ़ एक महारथी के रूप में लाकर खड़ा कर दिया. देवताओं और असुरों या धर्म और अधर्म के बीच का यह संग्राम अभी तक जारी है.

गांधी जी अपने साथ दो बुनियादी ख़याल दुनिया में लाये उस समय की दुनिया के लिये यह दोनों बिल्कुल अनोखे थे. एक यह कि आत्मबल यानी रूहानी ताक़त एक बहुत बड़ी ताक़त है और दुनिया की और सब ताक़तें मिलकर भी उसका मुक़ाबला नहीं कर सकतीं. दूसरा यह कि यह आत्मबल आम लोगों में भी पैदा किया जा सकता है और इसकी मदद से दुनिया की बड़ी से बड़ी ताक़तों, उनके ज़ुल्मों और हकूमतों का अहिंसा के असूल पर चल कर मुक़ाबला किया जा सकता है. यह ताक़तें चाहे देश के अन्दर की हों चाहे बाहर की, चाहे राजकाजी हों चाहे साम्प्रदायिक.

धर्म का असली रूप

गांधी जी के सामने एक बड़ी कठिनाई यह भी थी कि धर्म का जो रूप उनके सामने था और जो दुनिया की सब धर्म पुस्तकों में असली धर्म बताया गया है वह बहुत कुछ बिगड़ चुका था दीन धर्म अपनी पुरानी जगह खो चुका था. धर्म पुस्तकों का वह मान न रह गया था. खोखले रीत रिवाजों और प्रपंचों को ही लोग

दीन धर्म समझ बैठे थे. इसी लिये बहुत से समझदार लोग धर्म से दूर भागते थे. गांधी जी धर्म का साम्राज उसके असली रूप में राज काज के ऊपर और इन्सानी जिन्दगी के सब पहलुओं पर जमाना चाहते थे.

धर्म के इस असली रूप की जो व्याख्या महाभारत में की गई है उसे हम नीचे देते हैं.

जाजलि ने ऋषि से पूछा "धर्म क्या चीज़ है ?" ऋषि ने जवाब दिया. "धर्म" शब्द "धृ" धातु से निकला है जिसका मतलब सँभाले रखना या मिलाये रखना है. धर्म से सारा इन्सानी समाज सँभला हुआ है. जो चीज़ सब को सँभाले और मिलाये रक्खे उसी को पक्की तरह धर्म समझो. किसी जानदार को दुख न पहुंचे इसके लिये धर्म का बखान किया गया है. जिस चीज़ से किसी को भी दुख न पहुँचे उसी को धर्म जानो. सब जानदारों के भले के लिये धर्म का बखान किया गया है, जिस चीज़ से सबका भला हो उसी को पक्का धर्म जानो. हे जाजलि ! जो आदमी हमेशा दिल से सबका भला चाहता हो और अपने कामों से, मन से, और वचन से सदा सबका भला करने में लगा रहता हो वही धर्म का जानने वाला है.

मनुस्मृति में मनु महाराज ने सब आदमियों के लिये, चाहे वह किसी भी देश, जाति या वर्ण के हों, धर्म की दस पहिचानें बताई हैं. धर्म की वह दस पहिचानें यह हैं.—

"धीरज रखना यानी सब्र करना, क्षमा यानी सबको माफ़ कर देना, दम यानी अपनी आत्मा पर क़ाबू, चोरी न करना, सफ़ाई, अपनी इन्द्रियों यानी नफ़्स पर क़ाबू, बुद्धि यानी अक़्ल से काम

लेना, विद्या हासिल करना; सच्चाई और गुस्सा न करना.

धर्म के बारे में अपनी शंका को दूर करने के लिये जब महाराज युधिष्ठिर ने महर्षि व्यास से पूछा कि असली धर्म क्या है तो महर्षि व्यास ने बताया—

"हे युधिष्ठिर! धीरज, क्षमा, अहिंसा, चोरी न करना, सफ़ाई, इन्द्रियों को बस में रखना, बुद्धि को ठीक रखना, विद्या हासिल करना, सच बोलना और गुस्सा न करना यही धर्म के लच्छन हैं."

बापू इसी सच्चे धर्म को दुनिया में फिर से जगाना और फैलाना चाहते थे. उन्होंने सभी मजहबों की किताबों को जी भर के और प्रेम के साथ पढ़ा था. सब धर्मों और सब धर्मों की किताबों में उन्हें एक ही सच्चाई देखने को मिली. सब मजहबों का एक सा आदर और मान उनके दिल में पैदा हो गया. वह सब मजहबों में एक ही रोशनी और एक ही असलियत को देखते थे. सब धर्म पुस्तकों को मथ कर उन्होंने इन्सानी जिन्दगी के दो बुनियादी नियम निकाले. यह दोनों नियम थे, सत्य और अहिंसा. इन्हीं को सच्चाई और प्रेम भी कहा जा सकता है.

बापू के लिये धर्म केवल पढ़ लेने या कोई रीत रिवाज पूरी कर लेने की चीज़ नहीं थी. उनके लिये धर्म जिन्दगी में ढालने को चीज़ थी. रहने सहने, खाने पीने, दूसरों से बर्ताव करने, सब कामों को वह धर्म की कसौटी पर कसते थे और अपनी जिन्दगी में धर्म के उसी तरह तजरबे या प्रयोग करते थे जिस तरह एक साइंस वाला साइन्स के तजरबे करता है. इसीलिये उन्हें आध्यात्मिक विज्ञानी या रूहानी साइन्स वाला कहा जा सकता

है. दुनिया की हर धम पुस्तक बताती है कि धर्म केवल जानने ही की चीज़ नहीं है बल्कि ज़िन्दगी के हर काम में, हर समय और हर हालत में बरतने की चीज़ है. बापू ने इसी को अपने जीवन का बुनियादी असूल बना रक्खा था. इस रास्ते पर चलने में उन्हें तरह तरह के अनुभव होते रहते थे, जिनसे वह आप भी फ़ायदा उठाते थे और दूसरों को भी फ़ायदा पहुँचाते थे. यही उनकी ज़िन्दगी का मिशन था. दक्खिन अफ़्रीक़ा में सत्य और अहिंसा के तजरबों का उन पर बहुत गहरा असर पड़ा. उन्होंने धर्म पुस्तकों में पढ़ा था कि सच्चाई और अहिंसा में वह ताक़त है जिससे हिंसा या मारकाट की बड़ी से बड़ी ताक़तों को जीता जा सकता है. बापू ने पहले तो अपने निजी जीवन में इसके तजरबे करके देखे. उन्हें इन तजरबों में पूरी कामयाबी मिली. फिर उन्होंने बहुत से लोगों को साथ लेकर इसी तरह के तजरबे शुरू किये. उन्होंने समाज के दुख दूर कराने में और राज काज के मैदान में भी सच्चाई और अहिंसा के तजरबे किये. थोड़े दिनों में उन्हें विश्वास हो गया कि सच्चाई और अहिंसा ऐसे हथियार हैं जो कभी नाकाम नहीं हो सकते और जिनसे हर तरह के ज़ुल्मों, अन्यायों और अनर्थों को दूर किया जा सकता है.

दक्खिन अफ़्रीक़ा की सरकार वहाँ के हिन्दुस्तानियों के साथ बड़े बड़े ज़ुल्म कर रही थी. बापू ने उन ज़ुल्मों का मुक़ाबला करने के लिये सत्य और अहिंसा पर चलते हुए लड़ने का एक नया ढंग निकाला जिसका नाम उन्होंने "सत्याग्रह" रक्खा. इस अनोखी लड़ाई में उन्हें वहाँ की सरकार के खिलाफ़ अनसुनी कामयाबी मिली

और बहुत बड़े पैमाने पर उन्होंने अपने देश भाइयों के दुखों को दूर कर दिया.

दक्खिन अफ्रीक़ा के तजरबों से बापू को यह भी पता चल गया कि जब तक हिन्दुस्तान आप आज़ाद नहीं होता तब तक बाहर के मुल्कों के हिन्दुस्तानियों के दुखों की जड़ नहीं कट सकती. इस लिये अब वह सत्याग्रह का सुदर्शन चक्र लिये हुए हिन्दुस्तान लौट आये; इस विचार से कि यहाँ की जनता को इस हथियार का इस्तेमाल सिखाकर उसी के ज़रिये उसे अँग्रेज़ी राज से आज़ाद करें.

हिन्दुस्तान पहुँचकर जब उन्होंने यह एलान किया कि मैं अहिंसा से अँग्रेज़ी राज को हटा दूँगा तो सारा देश और ख़ास कर यहाँ के राजकाजी नेता दंग रह गये. पढ़े लिखे हिन्दुस्तानी गांधी जी की इस बात को समझ ही नहीं सकते थे कि सरकार की बड़ी से बड़ी फ़ौजें, पुलीस और सारी ताक़तें अहिंसा और आत्म बल का मुक़ाबला नहीं कर सकतीं. किसी को विश्वास न होता था. बात यह थी कि यह लोग अपने धर्म की कथाओं को कभी का भूल चुके थे और हिन्दुस्तानी सभ्यता की वह ऊँची, आत्मिक और रूहानी चोटियाँ जिन पर यह देश किसी समय पहुँच चुका था, सदियों से इन लोगों की आँखों से ओझल हो चुकी थीं, नहीं तो हिन्दू शास्त्र इन हथियारों की तारीफ़ों से भरे पड़े हैं. मिसाल के लिये हम गोस्वामी तुलसी दास जी की रामायन से वह बातचीत नीचे देते हैं जो लंका की लड़ाई के पहले रामचन्द्र जी और विभीषन में हुई थी. इस बातचीत में रथ का एक चित्र खींचा

गया है और कुछ हथियार गिनाये गये हैं. यह सब तुलसीदास जी के मन की गढ़न्त नहीं थी. उन्होंने यह सब पुरानी धर्म की किताबों से लिया था. फिर भी तुलसीदास जी का यह चित्र इतना सुन्दर और सच्चा है और गांधी जी के सत्याग्रह का रूप इसमें इतनी अच्छी तरह चमक उठता है कि वैसा और कहीं नहीं मिलता.

विभीषन जब रावन को छोड़ कर रामचन्द्र जी के पास आये तो उन्हें नंगे सिर नंगे पैर रीछ बन्दरों से घिरा हुआ देख कर घबरा कर रामचन्द्र जी से कहने लगे—

रावन रथी बिरथ रघुबीरा,
देखि बिभीषन भयेउ अधीरा।
अधिक प्रीति मन भा सन्देहा,
बन्दि चरन कह सहित सनेहा ॥
नाथ न रथ नहिं तनु पद त्राना,
केहि बिधि जीतब बीर बलवाना ॥

रामचन्द्र जी ने इस सवालका बिभीषन को यों जवाब दिया—

सुनहुँ सखा कह कृपा निधाना,
जेहि जय होई सो स्यंदन आना ॥
सौरज, धीरज, तेहि रथ चाका,
सत्य सील, दृढ़ ध्वजा पताका ॥
बल बिवेक दम परहित घोरे,
छमा, कृपा समता रजु जोरे ॥
ईश भजन सारथी सुजाना,
बिरति चर्म सन्तोष कृपाना ॥

दान, परसु बुधि, शक्ति प्रचंडा,
वर विज्ञान कठिन को दंडा ॥
अमल अचल मन त्रोन समाना,
सम, जम, नियम, शिली मुख नाना ॥
कवच अभेद विप्र गुरु पूजा,
येहि सम विजय उपाय न दूजा ॥
सखा धर्ममय अस रथ जाके,
जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके ॥
दोहा—महा अजय संसार रिपु, जीति सकै सो वीर ।
जाके असरथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मतिधीर ॥

हम रामचन्द्र जी के इन शब्दों की ओर व्याख्या करना नहीं चाहते. हम केवल इतना कहना चाहते हैं कि इन्हीं हथियारों को रामायन ने, इन्हीं को गीता ने, इन्हीं को महात्मा गांधी ने उस राम रावन या देव असुर संग्राम में जीतने का अमोघ हथियार माना है जो संग्राम दुनिया में सदा होता रहता है. हमारी बाहर की लड़ाइयाँ इसी अन्दर की लड़ाई की छाया होती हैं. इसलिये जिन हथियारों से अन्दर की लड़ाई जीती जा सकती है वही असली और सच्चे हथियार हैं और उन्हीं से बाहर की लड़ाई भी जीती जा सकती है.

जिन अच्छाइयों को रामचन्द्र जी ने ऊपर शक्तियों के रूप में गिनाया है, उनमें से कोई ऐसी नहीं जिसे हर आदमी अपने अन्दर दा न कर सके. इन्हें अपने अन्दर पैदा करने का तरीक़ा उन पांच ात ब्रतों को पालना और साधना है जिन्हें सब मज़हबों को

पुस्तकों में आत्म बल पैदा करने का ज़रिया बताया गया है. हिन्दू शास्त्रों में इसके लिये यह पांच 'महाव्रत' गिनाये गये हैं—सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, और अपरिग्रह, यानी सच बोलना किसी को दुख न देना, नेक चलन रहना, चोरी न करना और माल जमा न करना.

इन पाँच को ही और आसानी के लिये गांधी जी ने अपनी किताब 'मंगल प्रभात' में ग्यारह व्रत बना दिया है. इनमें कोई अनोखी बात नहीं है. जिस तरह डंड, बैठक, मुगदर जिस्मानी बल पैदा करने के साधन हैं वैसे ही यह व्रत आत्म बल पैदा करने के साधन हैं. बहुत से लोग समझते हैं कि शरीर को बलवान बनाने के तरीक़ों से आत्मा को बलवान बनाने के तरीक़े बहुत ज़्यादा कठिन हैं. पर ऐसा है नहीं. बात यह है कि अब तक हमने अपनी निजी ज़िन्दगी, घरेलू ज़िन्दगी और समाजी ज़िन्दगी तीनों को बड़े दरजे तक हिंसा और अधर्म के साँचों में ढाल रक्खा है. इनमें से हर एक की जड़ हमारी छोटी छोटी ख़ुद ग़रज़ियों पर है. अगर हम दूसरे सब मनुष्यों के साथ एक कुटुम्ब के आदमियों का सा बर्ताव करने लगें तो यह साँचे भी बदल जावें और हम सबके लिये आत्म बल पैदा करने के तरीक़े भी आसान हो जावें. हम चाहें तो यह सब कुछ कर सकते हैं.

आत्मबल

आत्मबल पैदा करने के यह सारे साधन बहुत पुराने हैं. पुराने ज़माने से दुनिया के रूहानी साइंस वाले यानी सन्त, महात्मा और अल्लाह वाले, इन साधनों की छान बीन करते रहे हैं और इनके असली रूप को समझकर इनसे सब इन्सानों को बहुत से बहुत लाभ

पहुँचाने के तरीक़े निकालते रहे हैं. पर महात्मा गांधी ने जो रूप इन साधनों को दिया है और सारे देश को इनकी तालीम देने के जो ढंग निकाले हैं, जिनसे इतने बड़े पैमाने पर उन्होंने राजकाज की लड़ाइयाँ भी लड़ी हैं और उनमें कामयाबी पाई है, इस सब की मिसाल पूरब की पुरानी सभ्यता और हमारी धर्म कथाओं में भी नहीं मिलती. यही बापू का बड़ा पन और अनोखा पन था. उन्होंने अपने देश को सत्याग्रह की तालीम देकर इन्सानी ज़िन्दगी में एक ऐसे नये युग की बुनियाद डाली है जिसे इतिहास हज़ारों साल तक भी नहीं भुला सकता.

गांधी जी ने असली धर्म को फिर से ज़िन्दा ही नहीं किया, उन्होंने धर्म के और नेकी के ख़ास-ख़ास सिद्धान्तों को पहले से कहीं ज़्यादा ऊँचा ले जाकर उनके फैलाव को भी बहुत बढ़ा दिया. उन्होंने कहा कि अगर कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर चाँटा मारे तो इतना ही काफ़ी नहीं कि तुम अपना बायाँ गाल भी उसके सामने कर दो, बल्कि तुम्हारा यह भी धर्म है कि मारने वाले की आदत को भी ख़ुद अहिंसा पर क़ायम रहते हुए छुड़ा दो. इसी तरह उन्होंने बताया कि चोरी के मामले में यही काफ़ी नहीं है कि चोर को सज़ा न दी जाय, या उसे चोरी का सामान ले जाने दिया जाय या बाक़ी का माल भी उसकी नज़र कर दिया जाय, बल्कि उसकी इस बुराई को दूर करने की भी हर आदमी को कोशिश करते रहना चाहिये.

इससे भी बढ़कर बापू की एक ख़ास बात यह है कि उन्होंने सत्याग्रह को केवल एक एक आदमियों के ही सुधार का ज़रिया न

बना कर सारे समाज के सुधार का भी साधन बना दिया और उसके लिये लड़ने और काम करने के ऐसे ढंग निकाले जो बड़ी से बड़ी हकूमतों के ख़िलाफ़ काम में लाये जा सकते हैं और जिनसे बड़े बड़े पैमाने पर लोगों की भलाई, बढ़ोती उनकी रक्षा और समाज सुधार सब काम लिया जा सकता है. अपने इन्हीं तरीक़ों के तजरबे गांधी जी बराबर अपनी अहिंसा की लड़ाई में करते रहे.

स्वराज

हमने गांधी जी के धर्म के बारे में विचार और उनके सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह का असली रूप ऊपर दिखाने की कोशिश की है. आगे हम उनके उस स्वराज का रूप दर्शाना चाहते हैं जिसे वह अहिंसा के तरीक़ों से हासिल करना चाहते थे. बापू सच्चा स्वराज इसे मानते थे कि समाज के अन्दर सच्ची आत्मिकता यानी सच्ची रूहानियत और धर्म की सच्ची भावना का ही राज हो और उसी का बोलबाला हो. यानी यह कि समाज के सारे सम्बन्धों में एक दूसरे के साथ सच्चाई और अहिंसा के असूलों पर ही अमल किया जावे. अगर हमारे आपस के सब सम्बन्ध सच्चाई और अहिंसा के असूलों पर ही क़ायम हो जावें तो हममें से एक दूसरे की नफ़रत, डाह, दुश्मनी, ख़ुद ग़रज़ी जैसी बुराइयाँ सब मिट जावें. इन बुराइयों के मिट जाने पर इन्सानी समाज का जो रूप बनेगा उसी को हमारे शास्त्रों में "वसुधैव कुटुम्बकम्" यानी यह कि इस धरती के रहने वाले सब लोग एक कुटुम्ब हैं, कह कर बयान किया गया है. यही इन्सानी समाज के विकास की आख़िरी मंज़िल है. इस आदर्श को साफ़ साफ़ रूप देकर बापू इन्सानी समाज को

एक कुटुम्ब के साँचे में ढाल देना चाहते थे. यही उनके स्वराज का असली रूप था.

जिस तरह बापू के हथियारों और साधनों का असली रूप दर्शाने के लिये हमने गोस्वामी तुलसी दास जी की मदद ली है उसी तरह गांधी जी के स्वराज का सच्चा रूप दर्शाने के लिये भी हम तुलसी दास जी से ही मदद लेना चाहते हैं. रावन को जीतने के बाद रामचन्द्र जी ने जो राज क़ायम किया उसका चित्र गोस्वामी जी ने नीचे के शब्दों में खींचा है--

दोहा—बरनाश्रम निज निज धरम, निरत वेद पथलोग।
चलहिं सदा पावहिं सुख नहिं भय शोक न रोग।

चौपाई—दैहिक, दैविक, भौतिक तापा
राम राज नहिं काहुहिं व्यापा।
सब नर करहिं परसपर प्रीती,
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति रीती।
चारिहुँ चरन धरमजग माहीं,
पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं।
राम भगति रत नर अरु नारी,
सकल परम गति के अधिकारी।
अल्प मृत्यु नहिं कवनिउ पीरा,
सब सुन्दर सब निरज शरीरा।
नहिं दरिद्र कोउ दुःखी न दीना,
नहिं कोऊ अबुध न लच्छन हीना।

सब निर्दम्भ, धर्म रत पूनी,
नर अरु नारि चतुर सब गूनी।
सब गुणज्ञ पण्डित सब ज्ञानी,
सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी।
सब उदार सब पर उपकारी,
विप्र चरन सेवक नर नारी।
एक नारि व्रतरत सब झारी,
ते मन-बच क्रम पति हितकारी।

दोहा—दंड जतिन्ह कर भेद जहँ, नर्तक नृत्य समाज॥
जितहुँ मनहिं अस सुनियजग, रामचन्द्र के राज॥

बापू राम राज का नाम बहुत लिया करते थे. रामायन से उन्हें अथाह प्रेम था. वह उसे बार बार सुना करते थे. इसलिये बहुत मुमकिन है कि जिस स्वराज को बापू रामराज बताते थे उस पर तुलसीदास जी के इस चित्र की गहरी छाप हो.

इसमें कोई अजीब बात भी नहीं है, क्योंकि अगर हम इस चित्र में से कविता के अलंकारों को अलग कर दें तो इस चित्र में और दुनिया के दूसरे आदर्श राज के अच्छे से अच्छे चित्रों में जो आज कल चालू हैं कोई बुनियादी फ़र्क़ नहीं है. प्रजातंत्र यानी जमहूरियत का नाम रटने वाले, ऐसे ही समाजवादी यानी सोशलिस्ट और साम्यवादी या कम्युनिस्ट सबके सब स्वराज को अपने अपने ढंग से जो आख़िरी और सबसे ऊँचा रूप देते हैं. वह तुलसीदास जी के इस

चित्र से बहुत अलग नहीं है. यह सब चित्र एक दूसरे से मिलते हैं.

इसी के साथ साथ इन दोनों तरह के चित्रों में एक बड़ा फ़र्क़ भी है पच्छिमी नेता स्वराज के अपने सब चित्रों में भौतिकता यानी मद्दा परस्ती को और बाहु बल को सबसे बड़ी जगह देते हैं. वह बाहु बल को ही यानी हाथियारों और जिस्मानी ताक़त को ही समाज की रक्षा, उसके सुधार और उसकी तरक़्क़ी का सबसे बड़ा साधन बताते हैं. दीन धर्म या नेकी बदी और ईमानदारी की इनके यहाँ कोई जगह नहीं. इसके ख़िलाफ़ बापू दीन धर्म और नेकी बदी पर ही सारा ज़ोर देते हैं. रामराज का जो चित्र हमने ऊपर दिया है जिसे हमने बापू का सपना बतलाया है उसे अगर हम ध्यान से देखें तो उसमें यही बात दिखाई देगी. हमने जो दस बारह चौपाइयाँ चुनी हैं उनमें धर्म के असली रूप ही तरह तरह से दिखाया गया है—जैसे—

निज निज धर्म निरत..................

चलहिं स्वधर्म निरत.............

चारिहुँ चरन धर्म जग माहीं,

सकल परमगति के अधिकारी.

..............न लच्छन हीना.

.................सर्वनिर्भय धर्मरत पूनी,

सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी.................सब पर उपकारी.

एक नारि व्रत रत..... ....

धर्म के चार चरन जिनकी ऊपर बात आई है यह हैं–दान, तप-

हैं जो वह समय समय पर स्वराज लेने के लिये जरूरी बताते थे. धर्म में बापू ने एक बहुत बड़ी और मार्के की चीज़ और बढ़ाई है. वह कहते हैं कि नेकी के लिये इतना ही काफ़ी नहीं है कि हमारी नियत ठीक हो और जिस मक़सद तक हम पहुँचना चाहते हैं वह पाक और अच्छा हो. यह भी उतना ही जरूरी है कि जिन तरीक़ों और साधनों से हम उस लक्ष्य तक पहुँचने की कोशिश करें वह तरीक़े और साधन भी शुद्ध और पाक हों. बापू का कहना था कि नापाक साधन आदमी की नियत और लक्ष्य दोनों को नापाक बना देते हैं. इसलिये कोई नापाक या गिरा हुआ साधन जल्दी में या अमली निगाह से कितना ही काम का क्यों न मालूम होता हो अन्त में वह हमें नुक़सान ही पहुँचावेगा.

सत्य और अहिंसा

बापू ने सच्चाई और अहिंसा को सदाचार का बुनियादी असूल मान लिया था. इसलिये उन्होंने इस पर ज़ोर दिया कि हमारे काम करने के सब ढंग और साधन भी सत्य और अहिंसा की कसौटी पर खरे उतरने चाहियें. बापू इसे बहुत ज़रूरी समझते थे. कहीं किसी सूरत और किसी हालत में भी वह इन बातों में कभी कच्चे-पन को गवारा नहीं कर सकते थे. हम इसे नामुमकिन कह दें या व्यवहार और असलियत के विरुद्ध मानें, पर बापू का यही अटल विश्वास था और दुनिया में यही उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी. जिस शान और हिम्मत के साथ इस बात को उन्होंने अपने जीवन और अपनी सब योजनाओं में अमली जामा पहनाया और निभाया उसकी मिसाल दुनिया के बड़े से बड़े लोगों की ज़िन्दगियों

मिलना कठिन है. इससे भी बढ़ कर ३० साल तक ४० करोड़ लोगों की लगातार अगुवाई करते हुए हिमालय की तरह अनोखे असूल पर खुद अटल रूप से जमे रहना और अपने सारे देश को और संसार को साफ़ शब्दों मे इसी पर जमें रहने के लिये कहते और बढ़ावा देते रहना, इतिहास की एक ऐसी नई घटना है जिसने सारी दुनिया के माथे को अथाह प्रेम और आदर के साथ उनके सामने झुका दिया. माना कि अमली रूप में उनके देश ने या संसार ने इस ऊँचे सिद्धान्त को नहीं अपनाया, पर इसमें भी शक नहीं कि यह सिद्धान्त अटल और अमर हैं और बापू में जो कुछ आत्म बल था वह इसी सिद्धान्त को अपने जीवन का मूल आधार बना लेने की वजह से था. जहाँ तक उनके हाड़ मांस का सम्बन्ध है उनमें कोई अनोखा पन नहीं था. उनके जीवन में अगर कोई अनोखा पन था तो यही था कि वह इन सिद्धान्तों पर अटल रूप से जमे रहते थे, और छोटा बड़ा कोई काम इनके ख़िलाफ़ न करते थे. इसलिये उनके सिद्धान्तों की क़दर न करना और उनके हाड़ मांस को पूजना ऐसा ही है जैसा ईश्वर को छोड़ कर मिट्टी को पूजना.

बापू के सामने स्वराज का जो रूप था और जो जगह सत्य और अहिंसा के असूलों को इंसानी ज़िन्दगी में वह देना चाहते थे, वह दुनिया की आजकल की हवा के बिलकुल ख़िलाफ़ थी. हम ऊपर कह चुके हैं कि बापू एक बड़े इन्क़लाब के ज़माने में पैदा हुए थे. सो आँख खोलते ही उन्हों ने देखा कि दुनिया के इतिहास में पहली बार एक ऐसी नई सभ्यता ने योरप के देशों में जन्म लेकर सारी दुनिया पर क़ाबू पा लिया था जो अपने आदर्शों, असूलों

और योजनाओं में पुरानी एशियाई सभ्यताओं से बिल्कुल उलटी थी. पुरानी सभ्यतायें दीन धर्म और इन्सानियत के आदर्शों को सामने रख कर चलती थीं और नेकी बदी, दूसरों का भला, त्याग, सेवा, सच्चाई, ईमानदारी और अहिंसा जैसे असूलों को इन्सानी ज़िन्दगी के सबसे अनमोल रत्न मानती थीं. उन सभ्यताओं का एक ही लक्ष्य या मक़सद रहता था और वह यह कि जिस तरह भी हो सके इन्सानी ज़िन्दगी में इन अच्छाइयों को बढ़ाया और अमली रूप दिया जावे! समाज सुधार और समाज की रचना का सारा काम उन्होंने अपने ऋषियों, मुनियों, नबियों, वलियों, अल्लाह वालों और ईश्वर भक्तों के हाथों में सौंप रखा था. ऐसे लोगों की ही वह संस्थायें होती थीं और उन्हीं के वह इदारे होते थे जो इन्सानी समाज को धर्म और नेकी के ठीक रास्ते पर रखने का काम करते थे. राज काज को और राज काज में लगे हुए लोगों को वह एक तरह से वैसा ही समझते थे—जैसा क़साई, चमार, हथियार बनाने वाले या इसी तरह के पेशों के लोगों को. इसी लिये दीन धर्म की बातों में या समाज रचना या समाज सुधार के कामों में राजा को या राज काज वालों को दख़ल देने का कोई हक़ नहीं था. इनका काम केवल देश की रक्षा करना और समाज की जो बन पड़े सेवा करना ही था.

पच्छिमी सभ्यता

पच्छिमी सभ्यता अपने यहाँ के धर्म-मज़हबों से घोर युद्ध करके और उनको मिटा कर अपने सिंहासन पर बैठी थी. उस सभ्यता में

राज काज ही सबसे बड़ी चीज़ थी. इसलिये पच्छिमी सभ्यता में धर्म के उन चार चरनों यानी दान, ज्ञान, दया और तप को, जिन पर पुरानी सभ्यताओं ने अपनी सारी इमारत खड़ी की थी, काट कर फेंक दिया और उनकी जगह चार ऐसी चीज़ों को दी जिन्हें पुरानी सभ्यता ने केवल राज काज तक ही रहने दिया था, यानी साम, दाम, दंड और भेद. पुरानी सभ्यताओं ने इन चारों को राज काज में भी आधे मन से ही रहने की इजाज़त दी थी. यह चारों असूल सत्य और अहिंसा से ठीक उल्टे थे इसलिये धर्म के मैदान में राज काज नीचा समझा जाता था.

पच्छिमी सभ्यता ने इंसानी समाज के इस पुराने तरीक़े को उलट दिया. नतीजा यह हुआ कि सारे समाज की काया पलट गई. समाजी जिन्दगी के हर पहलू में गिरावट, बेचैनी, एक दूसरे से डाह, दुश्मनी और तरह तरह के सत्यानाशी उलट फेर होने लगे. पच्छिम के बेदीन साइंस वालों ने प्रकृति यानी क़ुदरत की नये सिरे से छान बीन की और इंसानी जिन्दगी को मथकर वह इस नतीजे पर पहुँचे कि क़ुदरत का सबसे अटल क़ानून यही है कि जिसमें ताक़त या पुरुषार्थ है वही जिन्दा रह सकता है. इसी असूल को "सर वाईवल आफ़ दी फ़िटेस्ट" कहते हैं. पुरानी सभ्यतायें धर्म, सदाचार, सत्य, अहिंसा, दूसरों का भला करना, सेवा, प्रेम, नम्रता, क्षमा, धीरज जैसी चीज़ों को ही सच्चे पुरुषार्थ की बुनियाद समझती थीं. पच्छिम ने इसके ख़िलाफ़ बाहुबल, बेदर्दी, ख़ुदग़रज़ी आपाधापी और एक दूसरे से डाह को इन्सानी स्वभाव के बुनियादी असूल मान कर इन्हीं पर सारे समाज को क़ायम करना चाहा.

नतीजा यह हुआ कि जिसकी लाठी उसकी भैंस का असूल, जिसे जंगल का क़ानून कहते हैं, सभ्य इन्सानों की ज़िन्दगी का असूल बन गया.

पच्छिमी सभ्यता का यह सारा रुख़ और यह व्यवहार इन्सानियत से गिरा हुआ और इन्सानी समाज को मिटा देने वाला है. इसी के साथ साथ पच्छिम के नये दार्शनिकों और फ़लसफ़ियों ने "वसुधैव कुटुम्बकम्" की जगह एक और नया असूल गढ़ डाला. उसका नाम रखा "दी ग्रेटेस्ट गुड आफ़ दी ग्रेटेस्ट नम्बर" (यानी ज़्यादा से ज़्यादा आदमियों का ज़्यादा से ज़्यादा भला). इस नये असूल ने इन्सानी समाज के टुकड़े टुकड़े कर दिये और सबके भले की जगह, क़ौमों, मुल्कों, फ़िरक़ों, सम्प्रदायों, जातियों, पार्टियों और अपने अपने बलों की भलाई पर ज़ोर दिये जाने की बुनियाद डाली. स्वार्थ और ख़ुदग़रज़ी एक कुदरती और जायज़ चीज़ समझी जाने लगी. इस तरह पच्छिमी राजनीति ने दुनिया में इस तरह की सैकड़ों अलग अलग शक्तियों का एक सिलसिला जारी कर दिया जो एक दूसरे को काटने और सारी दुनिया को विनाश और बरबादी की तरफ़ ले जाने लगीं. पुरानी सभ्यता ने अपनी समझ में इस तरह की ताक़तों को हमेशा के लिये ख़त्म कर दिया था. अब इस मुर्दे में एकबारगी फिर से जान पड़ गई. पुरानी सभ्यता अपने को बेबस समझने लगी. यह नई शैतानी बीमारी महामारी की तरह सारी दुनिया में फैलने लगी. पच्छिमी सभ्यता के रूप में इसने सारी दुनिया पर सिक्का जमा लिया. यह महामारी अमरीका, आस्ट्रेलिया, अफ़्रीक़ा, जिस देश में भी पहुँची वहाँ के पुराने रहने

वालों की नस्लों की नस्लें इसने मिटा डालीं. जो थोड़े से अधमरे बच गये उन्हें डयू'हलींगरेशेज़ के बचे खुचे अजायब घरी नमूने बना दिया. करोड़ों इन्सान अपने घरों और अपने देश में अमन से रहते हुए भी नापैद कर दिये गये. कुछ की बाबत जो ज्यादा सख्त जान साबित हुए जैसे अफ्रीक़ा के काफिर, यह शिकायत की गई कि वह "अभी तक मिटने से इन्कार कर रहे हैं !" नई सभ्यता के बड़े बड़े विद्वानों और जानकारों ने इनके मिटते जाने का कारन यह बताया कि "उनमें सभ्यता की टक्कर को बर्दाश्त करने की शक्ति ही नहीं रह गई थी—इसलिये उन्हें कोई मिटने से बचा नहीं सकता था."

इस नई शैतानी सभ्यता ने तिजारत को जीवन का सब से बड़ा लक्ष्य बताया. पुरानी सभ्यताओं ने तिजारत को तीसरे दर्जे पर रक्खा था. पहले ब्राह्मण दूसरे राजा और तीसरे वैश्य. इस उलटे पन का नतीजा यह हुआ कि राजा से लेकर दरबान तक और जनता का हर आदमी व्योपारी बन गया. गाँवों के लोग सिमट सिमट कर शहरों में ६० फीसदी और ८० फीसद तक आ बसे. गाँवों की सारी जिन्दगी मटियामेट हो गई. बड़े बड़े डरावने कारख़ानों और कोयला खाने और धुआँ उगलने वाली चिमनियों ने जन्म लिया. मशीन राज की बुनियादें गहरी और मजबूत पड़ गईं. इन बड़े बड़े कारख़ानों की पैदावार को खपाने के लिये नये नये बाजारों और मण्डियों की जरूरत हुई. दुनिया भर के बाजारों पर क़ब्ज़ा जमाने के लिये बन्दूक़ों, तोपों, गोलों, जहरीली गैसों और ऐटमबमों की जरूरत पड़ी. बड़ी बड़ी जंगी सेनायें बनीं जिनकी मदद से

पच्छिमी साम्राज शाही ने दुनिया भर पर अपना क़ब्ज़ा जमा लिया.

इस बढ़ते हुए ब्योपार, बढ़ती हुई तिजारत और फैलते हुए साम्राज को बनाये रखने के लिये भलाई बुराई के भी नये नियम गढ़ने पड़े. पच्छिम के पण्डितों ने इसके लिये एक और नया असूल, एक नया ऐटमबम तैयार किया, यह नया ऐटमबम यह है—All is fair in love and war यानी प्रेम में और लड़ाई में, इन दोनों में जो कुछ भी कर लिया जाय, जायज़ है. इस नये देवता की पूजा के लिये नये मन्दिरों की ज़रूरत पड़ी. पच्छिमी सभ्यता के इन पण्डितों ने व्यवहारिकता (प्रेक्टिकल इज़्म) और वास्तविकता (रियल इज़्म) के बड़े बड़े, और सुनहरे नये मन्दिर बनाना और इन मन्दिरों की विकराल वेदी पर धर्म के चारों चरनों दान, ज्ञान, दया और तप की क़ुर्बानी देना शुरू कर दिया. इस तरह पुरानी सभ्यता के ऊँचे से ऊँचे सिद्धान्तों को थोथे प्रपंच कह कर उन्हें मिटा दिया और अपने शैतानी नाच के लिये दुनिया का मैदान साफ़ कर लिया.

इस नई सभ्यता ने अपने से बाहर के सब देशों को दो हिस्सों में बाँटा. एक असभ्य और दूसरे अर्द्ध सभ्य यानी एक जंगली और दूसरे नीम जंगली. नीम जंगली देशों में उन्होंने चीन और हिन्दुस्तान को शामिल किया. जंगली देशों के लोगों को मिटा कर उनकी ज़मीनों, खानों और जंगलों पर इन्होंने क़ब्ज़ा किया और नीम जंगली क़ौमों को पूरी तरह सभ्य बनाने के लिये उनको अपने

हिन्दुस्तानी सभ्यता इतिहास के शुरू से लेकर हमेशा बाहर के लोगों राजाओं, क़ौमों, मज़हबों और सभ्यताओं का दिल से स्वागत करती रहती थी. हर परदेसी हमारे यहाँ दया और प्रेम का हक़दार समझा जाता था. यह देश दुनिया भर के दुखियों का, चाहे वह किसी देश, धर्म या सम्प्रदाय के हों, मेहमान घर बना हुआ था. अन्दर या बाहर किसी को दुख पहुँचाना यह अपने धर्म के ख़िलाफ़ समझता था. इस देश ने सदा सब के साथ मां का सा प्रेम रखा. इसी प्रेम के बल पर उसने करोड़ों को अपनी सभ्यता के गहरे रंग में रंग कर हैवानों को इन्सान, ज़ालिमों को दयावान और अर्द्ध सभ्यों को सुसभ्य बना दिया. पर पच्छिम के मेहमानों पर अपना सब कुछ न्योछावर करके भी हमारा देश उन्हें अपना न बना सका. उनका शिकारियों और जोंकों का सा रूप आख़ीर तक जैसे का तैसा बना रहा.

इस देश के राजाओं ने अपने बाहुबल से पच्छिम के हमले का मुक़ाबला किया. बाहुबल हिन्दुस्तानी सभ्यता नहीं थी. महात्मा बुद्ध के बाद हमारी सभ्यता ने बाहुबल को राज काज से भी बाहर निकाल देने की कोशिश की थी. हमारी सभ्यता अपनी अनोखी धर्मी और रूहानी लहरों से सदा सारे संसार को सींचती और लहलहाती रही थी. अगर इस देश की सभ्यता पच्छिम से भी बढ़कर डरावनी जहरीली गैसों और ऐटमबम बना कर उनके जरिये पच्छिम को जीत लेती तो इससे योरप का नाश तो होता या न होता इतना ज़रूर होता कि हमारी सभ्यता दुनिया के लिये योरप की सभ्यता से भी ज़्यादा ख़तरनाक बन जाती. इसका दूसरा कोई

नतीजा हो ही नहीं सकता था. हमारा देश इस रास्ते पर पड़ जाता तो हमारी सभ्यता का पाक मिशन, उसका अनोखा और ऊँचा आदर्श सदा के लिये ख़त्म हो जाता. पच्छिम की गुलामी से आज़ाद होने की जगह वह अनन्त समय के लिये उसकी गुलाम और बाँदी बन जाती. हमारी सभ्यता की आत्मा इसे नहीं सह सकती थी. इसलिये इसे पच्छिम के मायावी जाल, वहाँ की माद्दा परस्ती को छोड़कर, फ़ौजों, तोपों, गैसों और बमों की मदद न लेकर, अपनी आध्यात्मिक और नैतिक यानी रूहानी और एख़लाक़ी गहराइयों में ग़ोता लगाना पड़ा. हमारी सभ्यता ने दो सौ बरस तक इन गहराइयों का मंथन किया. उसने अपनी उन पुरानी शक्तियों का जगाया जिनका रामचन्द्र जी ने विभीषण को ब्यौरा दिया था. इन शक्तियों को वह रूप देकर जिससे वह सारी दुनिया को इन नई आफ़तों से बचा सकें, हमारी सभ्यता ने और हमारे देश ने महात्मा गांधी को जन्म दिया और उन्हें इन शक्तियों के तजरबे करना सिखलाया. बापू हिन्दुस्तानी सभ्यता के धर्म प्रेम और उसकी रूहानियत के साक्षात् अवतार थे. वह उनका जीता जागता नमूना थे. संसार की सेवा करना इस देश का सदा से पाक मिशन रहा. इस मिशन को पूरा करना ही महात्मा गांधी का काम था.

पच्छिमी सभ्यता और बापू

बापू को पच्छिमी सभ्यता के इस बेदीनीपन और उसकी हैवानियत से बड़ी नफ़रत थी. उन्हें डर था कि अगर अँग्रेज़ी राज चला गया और पच्छिमी सभ्यता इस देश में रह गई तो अनन्त

काल के लिये देश को इस सभ्यता की ग़ुलामी में रहना पड़ेगा. क्योंकि पच्छिमी सभ्यता के रंग में रंगा हुआ देशी राज अगर एक बार देश में जम गया तो उसकी जड़ें विदेशी राज की जड़ों से कहीं ज़्यादा गहरी पड़ जायँगी. इसलिये गांधी जी को हाकिमों के काले या गोरे होने की इतनी चिन्ता नहीं थी जितनी इस बात की कि जो राज भी हो वह देश के पुराने सच्चे धर्मीपन और नेकी की बुनियादों पर क़ायम हो.

पच्छिमी सभ्यता के इस असूल को कि "पहले अपनी इच्छाओं और ज़रूरतों को बढ़ाओ और फिर उन्हें पूरा करने में अपनी सारी शक्ति लगा दो" बापू सह नहीं सकते थे. वह यह देखते थे कि इसी तालीम ने पच्छिम में भोगविलास और ऐश परस्ती का वह तूफ़ान खड़ा कर दिया है जिसके रहते आदमी अपना असली भला बुरा समझ ही नहीं सकता. जब तक यह तूफ़ान शान्त न हो दुनिया की मुसीबतें दूर नहीं हो सकतीं और न दुनिया को टिकाऊ शान्ति मिल सकती है. वह समझते थे कि दिल दिमाग़ और आचार विचार की ग़ुलामी तन की और धन की ग़ुलामी से कहीं ज़्यादा बुरी और ख़तरनाक है. सच यह है कि मन की ग़ुलामी में ही तन की ग़ुलामी की जड़ें गहरी जाती हैं और अधिक पक्की हो जाती हैं. किसी ने एक बार बापू से पूछा कि आपके और पंडित नेहरू के राजकाजी विचारों में क्या अन्तर है. उन्होंने जवाब दिया कि "बहुत थोड़ा सा अन्तर है; प० जवाहरलाल जी चाहते हैं कि अंग्रेज़ देश से चले जायँ और अंग्रेज़ियत रह जाये. मैं चाहता हूँ कि अंग्रेज़ियत चली जाय अंग्रेज़ रह जायं." इससे बापू के ठीक ठीक विचारों का पता चलता है.

अपने "हिन्द स्वराज" में उन्होंने पच्छिमी सभ्यता के बारे में अपने विचार साफ़ साफ़ दिये हैं. हम इन्हें उन्हीं के शब्दों में नीचे देते हैं वह लिखते हैं—

"आज कल की सभ्यता के मोह जाल में फँसे हुए लोग भला उसके खिलाफ़ क्यों लिखेंगे? वह तो उल्टे ऐसी बातें और दलीलें खोजाने की कोशिश करेंगे जिनसे उनकी बातों का समर्थन हो. पहले तो हमें इस पर विचार करना चाहिये कि इस सभ्यता की खास पहिचानें क्या हैं.

"एक सच्ची पहिचान तो इसकी यह है कि आज कल सभ्य कहलाने वाले लोग तन के सुख को ही अपनी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा मक़सद मानते हैं.

"किसी देश के लोग अगर पहले बहुत कपड़े और कोट बूट पहनने के आदी नहीं थे और फिर अँग्रेज़ी कपड़े पहनने लगे तो समझा जाता है कि यह जंगली पन से निकल कर अब सभ्य होने लगे.

"योरप के लोग पहले हाथ से काम करते थे और मामूली हल से अपने काम के लायक़ खेत जोत लेते थे. अब भाप की मशीनों के सहारे हल चला कर एक ही आदमी सैकड़ों बीघे ज़मीन जोत डालता है और बहुत सा अन्न पैदा कर सकता है. यह बढ़ी हुई सभ्यता की पहिचान समझी जाती है.

"पहले बैलगाड़ियों पर दिन भर में १२ कोस की मंज़िल तय होती थी अब रेल गाड़ियों में दिन भर में लोग ४०० कोस की उड़ान मारते हैं. यह सभ्यता का बड़ा ऊँचा दरजा माना जाता है.

"कहते हैं कि बढ़ते बढ़ते जल्दी ही वह दिन आवेगा, जब लोग हवाई जहाज़ों पर सवार होकर दो चार घड़ी में ही जिस देश में चाहे पहुँच जावेंगे.

"बटन दबाते ही पहनने के कपड़े सामने आ जायगे, दूसरा बटन दबाते ही ताज़ा अखबार सामने आ जायगा, तीसरा बटन दबाते ही हवा खाने के लिये मोटर आ खड़ी होगी, इशारा करते ही तरह तरह के खाने परोसे हुए सामने आ जायँगे. मतलब यह कि मशीन के बल पर छोटे बड़े सारे काम सहज ही में अपने आप होने लगेंगे.

"पहले लोग जानवरों की खाल पहनते थे और भाले बर्छी से लड़ते थे, आज लोग भाले बर्छी की जगह एक पर एक छ: गोलियाँ चलाने वाले पिस्तौल रखते हैं.

"पहले लोग जब लड़ते थे तो गुत्थमगुत्था हो जाते थे. अब पहाड़ की आड़ में मशीनगन के पीछे खड़ा हुआ एक आदमी पलक मारते मारते हज़ारों की जान ले सकता है. यही सभ्यता है.

"पहले लोग आज़ादी के साथ जब जी चाहा खुली जगहों में काम धन्धे करते थे. अब हज़ारों आदमी जमा होकर अपना पेट पालने के लिये बड़े बड़े कारखानों और खानों में काम करते हैं. उनकी हालत जानवरों से भी गई बीती है. अपनी जान हथेली पर रख कर बड़े जोखम के कामों में उन्हें पिलना पड़ता है और वह भी करोड़ पति साहूकारों की जेबें भरने के लिये.

"पहले लोगों को मार मार कर ज़बरदस्ती गुलाम बनाया जाता था आज उन्हें धन और धन से मिलने वाले ऐश आराम का लालच

देकर गुलाम बनाया जाता.................है. अधिक क्या कहूँ..................
यही सभ्यता की पहिचाने हैं और अगर कोई इन बातों को सभ्यता की पहिचान न माने तो उसे निरा अनाड़ी माना जाता है.

"यह सभ्यता न तो दीन धर्म का विचार करती है और न नेकी बदी पर ध्यान देती है. इस सभ्यता के हिमायती बड़ी गंभीरता के साथ कह डालते है कि दीन धर्म सिखाना हमारा काम नहीं है!

"हिन्दुस्तान में जहाँ यह पागल सभ्यता नहीं पहुँची है वहाँ अपनी वैसी ही हालत है जैसी कभी पहले थी. जिन लोगों को देश की लगन हो उन्हें मैं यह सलाह दूंगा कि आप पहले अपने देश के उस हिस्से में जाइये जहाँ अभी तक रेल की पहुँच नहीं हुई है और छः महीने तक वहीं घूम फिर कर सच्ची देश भक्ति अपने अन्दर पैदा करिये. उसके बाद स्वराज की बातें करियेगा.

"यह सभ्यता ऐसी है कि अगर हम धीरज रखें तो अन्त में इस सभ्यता की आग सुलगाने वाले खुद ही इसमें जल मरेंगे.

"इस्लाम की निगाह से इस सभ्यता को शैतानी सभ्यता कहना होगा, और हिन्दू धर्म ने इसे घोर कलियुग कहकर बयान किया है."

पच्छिमी सभ्यता का इतना सुन्दर चित्र बापू के लेखों में हमने और कहीं नहीं देखा. जो पेशीनगोई बापू ने इसमें की है कि इस सभ्यता की आग सुलगाने वाले आप ही इसमें जल मरेंगे, इसे कहे अभी ४० बरस ही हुए हैं. पर इतने थोड़े समय में उन्होंने और हमने इस इतनी बड़ी सभ्यता को खुद अपनी आग में जलते हुए अपनी आँखों से देख लिया. बापू कोई ज्योतिषी नहीं थे. उन्होंने

यह भविष्य बानी नेकी और बदी के बढ़ने घटने और एक दूसरे पर इनके असर को देखकर और उनके नतीजों को सामने रखकर बिल्कुल एक विज्ञानी की तरह हिसाब लगा कर की थी. हमें माद्दी साइंस में यानी ऊपर के जड़जगत और उसकी खोज करने वाले लोगों के बताये हुए नियमों और क़ानूनों में श्रद्धा है, इसलिये कि इन नियमों के नतीजे साफ़ और उसी समय दिखाई दे जाते हैं. पर अध्यात्म यानी रूहानी विद्या के जानने वालों ने नेकी बदी की ताक़तों के तजरबे करके और उनके असर और नतीजों को दुनिया में देख कर जो नियम और क़ानून बना दिये हैं उन पर हमें इतना भरोसा नहीं होता. क्योंकि इनके नतीजे जरा देर में निकलते हैं और इनका सम्बन्ध बाहर की चीजों से कम और हमारे अन्दर के जीवन से अधिक है. विज्ञान या साइंस की निगाह से इससे बड़ी भूल हम नहीं कर सकते. फिर भी हमें अपने साइंसदाँ होने का अभिमान है ! जब तक हम इन नियमों की असलियत को और उनके अटल होने को नहीं मानेंगे और अपने सब कामों, ब्योपार व्यवहार और राज काज को इन्हीं नियमों पर और इनका ध्यान रखते हुए नहीं ढालेंगे तब तक दुनिया की कोई ताक़त हमें दुखों और बरबादी से नहीं बचा सकती.

पार्लिमेण्टी राज

हम बापू के ख़ास ख़ास असूलों को बयान कर चुके. इस हिस्से को ख़त्म करने से पहले अब हम पार्लीमेन्टी राज के सम्बन्ध में बापू की राय और दे देना चाहते हैं, क्योंकि पच्छिमी सभ्यता से उसका गहरा सम्बन्ध है, और गांधी जी ने अपने विधान में इस

पार्लीमेन्टी राज का ख़ास तौर से ज़िक्र किया है. पच्छिम की इस सभ्यता ने ही आजकल के पार्लीमेन्टी राज को जन्म दिया है, इसलिये इस पार्लीमेन्टी राज में अपनी जन्म देने वाली मां के सारे ऐब कूट कूट कर भरे हुए हैं.

अब हमें देखना चाहिये कि यह पार्लीमेन्टी राज कब से और कैसे चला. इसका जन्म इङ्गलिस्तान में हुआ था. इङ्गलिस्तान के राजा ने जनता पर अपना अधिकार जमाये रखने और जनता से अधिक से अधिक टैक्स वसूल करने के लिये उस देश में पार्ली-मेन्टी राज चलाया था. धीरे धीरे पार्लीमेन्ट का बल बढ़ता गया, यहाँ तक कि उसने देश के राजा का गला काट कर उसकी गद्दी लेली. इंगलिस्तान की देखा देखी इस तरह के उलट फेर थोड़े से समय के अन्दर लगभग सारे योरप में होने लगे और पार्लीमेन्टी राज का सिक्का सारी दुनिया पर जम गया और आज भी जमा हुआ है.

दुनिया के आम लोगों में पार्लीमेन्टी राज की इतनी चाह क्यों है इसका कारन यह है कि यह राज आम जनता का राज समझा जाता है. इसी लिये हर देश की जनता पागलों की तरह इसके पीछे दौड़ती है और ख़ुशी ख़ुशी इसे अपने राजा की जगह दे देती है. इसमें जनता इस तरह राजा बनाई जाती है कि लाखों आदमी अपना एक प्रतिनिधि या नुमाइन्दा या ओटिया चुनते हैं इसलिये कि वह इनकी ओर से राज करे. इन लाखों आदमियों में से १०० पीछे ६५ न उसे जानते हैं न पहिचानते हैं. फिर भी वह उनका नुमाइन्दा माना जाता है. चुने जाने के बाद यह नुमाइन्दा

उनकी बात भी नहीं पूछता, न उन्हें कोई असली फ़ायदा पहुँचा सकता है. क्योंकि वह तो इसी तरह के तीन चार सौ नुमाइन्दों में से एक होता है. इस तरह एक राजा की जगह तीन चार सौ राजा और मन्त्रियों या वज़ीरों की शकल में दस बीस महाराजा या सम्राट बन जाते हैं और जनता बेचारी वैसी की वैसी "चेरी" ही रह जाती है. राज काज चलाने का ख़र्चा पहले से सैकड़ों गुना बढ़ जाता है. सरकारी नौकरों की गिनती, तनख़्वाहें और भत्ते अलग बढ़ जाते हैं. इन नौकरों और अफ़सरों की तानाशाही में फ़र्क़ नहीं आता, शान शौकत के आडम्बर पुराने सम्राटों को भी शर्माते हैं और यह कहलाता है जनता का राज !

पार्लिमेन्टी राज और बापू

बापू इस सारे मायावी प्रपन्च को जो भोली जनता को राजा बनने का लोभ दे देकर उसके बे हिसाब चूसे जाने का रास्ता खोल देता है, जड़से बदल देना चाहते थे. बापू अपने को सच्चा डेमोक्रेट यानी सच्चा लोकतन्त्री कहते थे. डेमोक्रेसी यानी लोक राज का उनके सामने एक ही रूप था और वह यह था कि जनता नाम के लिये नहीं बल्कि सचमुच आप अपनी राजा हो और अपना सारा कारबार ख़ुद करे. बापू के सामने इसका एक ही तरीक़ा था, वह था डी सेन्टर लाइज़ेशन यानी विकेन्द्री करन या ग़ैर मरकज़ीयत, जिसका मतलब यह है कि हुकूमत की सारी ताक़त को एक जगह जमा न करके चारों तरफ़ दूर दूर तक बाँट दिया जावे. देश को इतने छोटे छोटे हलक़ों में बाँट दिया जावे कि जिनमें जनता अपने जाने

बूझे लोगों को अपना ओटिया या राजा बना सके, वह ओटिया या पंच अपने हल्के की सभी राज काजों और दूसरी जरूरतों को जनता की मदद से पूरा कर सके और झगड़ा फ़िसाद करने वालों से अपने हलक़े की रक्षा कर सके.

पार्लीमेन्टी राज में नुमाइन्दगी का ढोंग तो है ही, इस ढोंग से बढ़कर चुनाव का ढंग है. यह चुनाव का ढंग जनता को चारों तरफ़ से मिटाने और बरबाद करने वाला है. इसमें हर तरह की बेईमानी, धोका, फ़रेब, जुर्म ज्यादती अन्याय, फ़ज़ूल ख़र्ची और दुश्मनी का एक सोता खुल जाता है. इस चुनाव ने देश के देश बरबाद कर दिये. इसकी बुराइयाँ दिनों दिन बढ़ती जा रही हैं, पर इसके सुधार की कोई सूरत ही पैदा नहीं होती. बापू इसके सुधार का एक ही ढंग बताते थे. यह कि वोटरों की जानकारी को और उनके चलन को, उनमें नेकी और बदी, भले और बुरे के विचार को इतना ऊँचा कर दिया जावे और इन गुणों को अपने अन्दर बनाये रखने की जनता में इतनी शक्ति आ जावे कि वह हमेशा ऐसे लोगों को ही वोट दे जो नेक हों, त्यागी हों, दूसरों की सेवा और उनका भला करने वाले हों और जिनमें, ईमानदारी सादगी और नम्रता हो. जब तक जनता में यह शक्ति पैदा नहीं होती, तब तक पार्लीमेंटी राज जनता के लिये राजाओं के राज से ज्यादा बुरा साबित होगा !

जहाँ तक देश के मरकज़ी राज को मज़बूत रखने का सवाल है, वहाँ तक गांधी जी तीन बातें चाहते थे. एक यह कि जनता के

बँटवारे से हिन्दू और मुसलमानों की दुश्मनी खत्म हो जायगी. नतीजा यह हुआ कि एक देश और एक राज की जगह दो देश और दो राज एक दूसरे के दुश्मन खड़े हो गये. जहाँ तक अपने देश के अन्दर के हिन्दू और मुस्लिम सम्बंधों का सवाल था वहाँ तक फूट की सारी पुरानी बुनियादें अपनी जगह पर बनी रह गईं. इससे बड़ी मुसीबत आज तक संसार में किसी देश पर नहीं आई थी. यह हमारे पार्लीमेंटी राज पाने और जमाने की शुरुआत थी.

इस घटना ने बापू की सारी पुरानी कोशिशों और जीतों को ही नहीं बल्कि उनके जीवन के मिशन ही को जलाकर खाक कर दिया. उनके जीवन की गहरी से गहरी बुनियादें हिल गईं. मगर लोगों में यह खयाल आम तौर पर फैला हुआ है कि इस बँटवारे में बापू का भी हाथ था. इस खयाल की बुनियाद इस विश्वास पर है कि अगर बापू सचमुच रोकना चाहते तो इस तरह की घटना उनकी मर्जी के खिलाफ इस देश में हो ही नहीं सकती थी. यह खयाल बिलकुल ग़लत है. बापू ने आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी की बैठक में लोगों को जो सलाह दी थी उससे यह खयाल और भी बढ़ गया. बापू ने साफ़ कहा था कि मैं हमेशा से बँटवारे के खिलाफ़ था और आज भी हूँ, पर तुम अगर इस बँटवारे को रद्द करना चाहते हो तो तुम्हें पहले पंडित जवाहर लाल, सरदार पटेल और इनके साथियों से ज्यादा त्यागी, ईमानदार और तजरबेकार नेता उनकी जगह लेने के लिये ढूंढ लेने चाहियें. क्योंकि तुम्हारे इस बंटवारे को रद्द कर देने के बाद यह लोग वर्किंग कमेटी या राज की कुर्सियों पर नहीं रह सकेंगे. उन लोगों ने बापू से कह दिया था कि लोगों ने हमारा

कहना न माना तो हम वर्किंग कमेटी या सरकार में नहीं रहेंगे.

यह उस समय की सच्ची सच्ची हालत थी. आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी बँटवारे को रद्द कर सकती थी, पर उसके सामने सवाल यह था कि इसका देश पर क्या असर पड़ेगा. देश के बँटवारे ने एक बड़ा ख़तरा खड़ा कर दिया था. इस ख़तरे से बचने के लिये वह अगर वर्किंग कमेटी को और मंत्री मण्डल को तोड़ कर नई कमेटी बनाती जिसमें पंडित नेहरू, सरदार पटेल और उनके साथी न होते तो देश का इतना बड़ा संगठन और शक्ति जो इसकी सारी विरोधी शक्तियों का ४० साल से मुक़ाबला कर रही थी, टुकड़े-टुकड़े हो जाती. उस समय इनकी ख़ाली जगह को ठीक ठीक भर सकना कोई आसान बात न थी. अगर यह जगह ठीक न भर सकती तो हो सकता था कि देश में अराजकता का ऐसा तूफ़ान आ जाता जो मुद्दतों के लिये देश की आज़ादी और टिकाऊ राज की उम्मीदों का ख़ात्मा करके फिर से विदेशियों का अधिकार जमा देता. इस हालत में बापू आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी को कोई भी दूसरी सलाह देने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर नहीं ले सकते थे. उनकी इस सलाह की बिना पर बँटवारे की ज़िम्मेदारी उन पर डालना बिलकुल बेजा है. सच यह है कि उस समय बापू राजनीति में बिलकुल बेबस हो रहे थे. सन् १६४२ के आन्दोलन के बाद से उनका असर कांग्रेस पर से बड़ी तेज़ी के साथ घट रहा था क्योंकि कांग्रेस के बहुत से नेता और कार्यकर्ता अब बापू के असूलों और प्रोग्रामों का खुला विरोध करने लगे थे. इन हालतों को देख कर बापू ने कांग्रेस को यह सलाह भी दी थी कि वह अपने क्रीड (मक़सद) को बदल ले और उसमें से

"आयश्च" और "शान्तिमय" शब्दों को निकाल दे. बापू ने यह भी सलाह दी थी कि कांग्रेस अपने मेम्बरों और अधिकारियों के लिये खादी पहनना जरूरी न रक्खे. जहाँ तक हुकूमत का सम्बन्ध था उसके सब काम खुले तौर पर हर बात में बापू के आदर्शों और असूलों के खिलाफ़ जा रहे थे. फ़ौजों और पुलिस पर खर्चा अन्धाधुन्ध बढ़ रहा था. देश के भीतरी इन्तजाम में बृटिश सरकार से ज़्यादा बड़े पैमाने पर गोलियों और डंडों का प्रयोग हो रहा था. बापू कहते थे कि अगर तुम बिना पुलिस और फ़ौज को इस तरह इस्तेमाल किये अमन अमान क़ायम नहीं रख सकते तो तुम्हें हुकूमत से इस्तीफ़ा दे देना चाहिये. पर उनका यह कहना "नक़्क़ार खाने में तूती की आवाज़" के समान था. फ़ौजी राज के साथ साथ मशीन युग जल्दी से जल्दी देश में लाने की चारों तरफ़ धूम मची हुई थी. हुकूमत अपने सारे साधन और शक्ति इसमें लगा रही थी. 'नेशनलाइज़ेशन' का मतलब होता है देश के बड़े बड़े धन्धों पर सरमाया दारों का क़ब्ज़ा होने की जगह उन्हें नेशन के यानी राष्ट्र के हाथों में सौंप दिया जावे. इसमें राष्ट्र का मतलब लिया गया सरकार और इस नेशनलाइज़ेशन ने देश की हर जरूरत की चीज़ को कन्ट्रोल कर लेने का रूप ले लिया था. इसका असर देश के सुख चैन और सदाचार को ताऊन और प्लेग की तरह खाये जा रहा था. बापू देश में आत्म-बल और स्वावलम्बन (अपने पैरों पर खड़ा होना) की शक्ति पैदा करने के लिये हर गांव को एक आज़ाद रिपब्लिक बना देना चाहते थे. इसके खिलाफ़ हुकूमत हिटलर और मुसोलिनी की तरह सभी शक्तियों और साधनों को अपनी मुट्ठी में

कर लेने पर तुली हुई थी. बृटिश राज की फ़जूल खर्ची और शान शौकत, कांग्रेसी सरकार को विरसे में मिली थी, और वह इस चक्कर से किसी तरह बाहर निकलने को तैयार न थी. सरकार का असर सारे कांग्रेस संगठन पर पड़े बिना नहीं रह सकता था और कांग्रेस का असर सारे देश पर पड़ना लाज़िमी था. इसलिये जिसे देखो वह दौलत और ताक़त की खोज में उचित और अनुचित सभी तरीक़ों से अपना मतलब पूरा कर लेने की धुन में डूबा हुआ था. ताक़त और दौलत तो मुल्क में नपी तुली होती है और इसके उम्मीदवार अनगिनत. इसलिये कांग्रेस बल्कि सारा देश गन्दी से गन्दी पार्टी बाज़ियों का अखाड़ा बन गया था. देश में बेईमानी, दग़ा फ़रेब, रिशवत और तरह तरह की लूट का बाज़ार गरम था.

यह सारा घर फूँक तमाशा बापू की आँखों के सामने बराबर नाचता रहता था. जब तक बृटिश राज क़ायम था उन्हें इस हालत से खुली और सीधी टक्कर लेने का मौक़ा नहीं था. आज़ादी मिलते ही मुल्क के बँटवारे ने वह भयंकर हालत पैदा कर दी कि जिससे बापू के लिये किसी दूसरी तरफ़ ध्यान देना बिल्कुल नामुमकिन हो गया. इस हालत से सीधी और आख़िरी टक्कर लेने का ख़याल उनके दिल से कभी दूर नहीं होता था. धीरे धीरे इसी ख़याल ने उनके लोक सेवक संघ का रूप लिया और इसे जन्म देने के लिये उन्होंने अपना आख़िरी विधान बनाया.

इस विधान को ग़ौर से देखने से पता चलता है कि बापू इसके बनाने के समय तय कर चुके थे कि या तो काँग्रेस और उसकी हुकूमत पूरी तरह अपने ग़लत रास्तों को छोड़ कर देश और देश की सभ्यता

की सच्ची रक्षा के मार्ग पर चले, अधर्म छोड़ कर सच्चे धर्म का पथ पकड़े और नहीं तो बापू इससे अलग होकर अपनी सारी शक्ति इनको ग़लत रास्ते पर चलने से रोकने में उसी तरह लगा देंगे जिस तरह उन्होंने अंग्रेजी सरकार के आतंक और अन्यायों को मिटाने में लगाई थी. लोक सेवक संघ की योजना कांग्रेस और उसकी हुकूमत के लिये बापू की आख़िरी नेक सलाह थी. इसके एक एक शब्द से बापू के अपने दिली इरादों की झलक साफ़ नज़र आती है.

इस विधान को इन्डियन नेशनल कांग्रेस के जनरल सिक्रेटरी को देने के चार घण्टे बाद ही बापू का देहान्त हो गया. ईश्वर को यह मन्ज़ूर न था कि वह आप अपने इस प्रण को पूरा करें. लेकिन इस विधान के इस तरह जीते रहने का प्रबन्ध हो जाना, यह भी ज़ाहिर करता है कि ईश्वर इसे बापू के साथ मारना नहीं चाहते थे. देश में ऐसी ज़हरीली हवा पैदा हो गई थी कि जिसे बापू की क़ुर्बानी के सिवा और दुनिया की कोई शक्ति बदल नहीं सकती थी. यह हालत न बदलती तो बापू के विधान के लिये देश में मुद्दतों तक कोई जगह ही नहीं हो सकती थी. बापू ने अपना फ़र्ज़ अदा करके इस विधान को अमली जामा पहनाने के लिये ज़मीन तैयार कर दी थी. अब इसे समझने, चलाने और कामयाब बनाने की ज़िम्मेवारी उन लोगों पर है जो बापू से प्रेम रखते थे और जो उनके आदर्शों, सिद्धान्तों और योजनाओं को अपने देश और संसार के लिये बरकत समझते हैं.

विधान का मसविदा

यहाँ पर हम बापू के लोक सेवक संघ के विधान का लफ़्ज़ी तरजुमा, जिस रूप में उन्होंने इसे आल इंडिया कॉंग्रेस कमेटी के सामने रखना चाहा था और जिसमें यह १५ फ़रवरी १९४८ के 'हरिजन' में छपा है, नीचे दे रहे है.

विधान का तरजुमा

हिन्दुस्तान के दो टुकड़े तो हो गये, फिर भी इन्डियन नेशनल कांग्रेस ने राजकाजी आज़ादी हासिल करने के जो साधन निकाले थे उन साधनों से हिन्दुस्तान ने राजकाजी आज़ादी ले ली है, इसलिये कांग्रेस की आज कल की शक्ल सूरत का यानी इस सूरत का जिसमें वह प्रचार का एक ज़रिया और पार्लीमेन्टी मशीन बन गई है. अब कोई काम नहीं रह गया है. हिन्दुस्तान को अब शहरों और क़स्बों का ख़याल हटाकर सात लाख गाँव के लिये समाजी (सोशल), सदाचारी (मोरल) और माली (इकोनामिक) आज़ादी हासिल करनी है. हिन्दुस्तान जैसे जैसे अपने इस जन-राज के लक्ष्य की तरफ़ बढ़ेगा वैसे वैसे सिविल यानी शहरी ताक़त फ़ौजी ताक़त के ऊपर क़ाबू पाने के लिये ज़रूर पूरी पूरी टक्कर लेगी. राजकाजी पार्टियों और फ़िरक़ेवाराना संस्थाओं की लाग डाँट हिन्दुस्तान को तन्दुरुस्त नहीं रहने दे सकती. इनसे देश को बचा कर रखना ही होगा. इन कारनों से और इसी

तरह के दूसरे कारनों से आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी मौजूदा कॉंग्रेस संगठन को तोड़ देने और नीचे लिखे क़ायदों के अनुसार 'लोक सेवक संघ' का सुन्दर रूप लेने का फ़ैसला करती है. मौक़े की जरूरत के मुताबिक़ इन नियमों में अदल बदल किया जा सकेगा.

हर ऐसे पाँच बालिग़ मरदों या औरतों की एक पंचायत, जो या तो गाँव के होंगे या जिनके मन में गाँव की लगन होगी, एक इकाई मानी जायगी.

इस तरह की दो पास पास की पंचायतें मिलकर अपने में से ही चुने हुए एक नेता के अधीन एक काम करने वाला जत्था बनायेंगी.

जब इस तरह की सौ पंचायतें हो जायँगी तो उनके पचास पहले दरजे के नेता अपने में से एक को दूसरे दरजे का नेता चुनेंगे. इसी तरह होता रहेगा. इस बीच पहले दरजे के नेता दूसरे दरजे के नेता के अधीन काम करेंगे. दो दो सौ पंचायतों के पास पास काम करने वाले गिरोह बनते रहेंगे, जब तक कि यह सारे हिन्दुस्तान में न फैल जायँ. बाद की पंचायतों का हर गिरोह पहले गिरोह की तरह अपने में से दूसरे दरजे का एक नेता चुन लेगा. दूसरे दरजे के सब नेता मिल कर सारे हिन्दुस्तान के लिये सेवा करेंगे और अलग अलग अपने अपने इलाक़ों के लिये सेवा करेंगे. दूसरे दरजे के नेता जब कभी जरूरत समझेंगे अपने में से एक को 'सरदार' चुन सकेंगे जो जब तक चाहेगा सब गिरोहों की क़ायदे बन्दी करेगा और उनकी अगवाई करेगा.

(चूँकि सूबे या ज़िले अभी आख़िरी तौर पर नहीं बने हैं और अभी अदल बदल रहे हैं, इसलिये सेवकों के इस गिरोह को सूबा या ज़िला कौंसिलों में बाँटने की कोशिश नहीं की गई, और सारे हिन्दुस्तान के ऊपर अधिकार उस गिरोह या उन गिरोंहों को दिया गया है जो उस समय तक बन चुके हों. यह बात ध्यान में आ जानी चाहिये कि सेवकों के इस दल को जो कुछ अधिकार या ताक़त मिलेगी वह उस सेवा से मिलेगी जो वह ख़ुशी और समझदारी के साथ अपने मालिक की करेंगे. उनका मालिक सारा हिन्दुस्तान है.)

१—हर काम करने वाले को अपने हाथ के कते सूत की या आल इन्डिया चरख़ा संघ की तसदीक़ की हुई खादी पहनने की आदत होनी चाहिये और यह जरूरी है कि वह नशे की चीज़ों से बिलकुल परहेज़ करता हो. अगर वह हिन्दू है तो यह ज़रूरी होगा कि उसने अपनी निजी ज़िन्दगी में या अपने कुटुम्ब में हर सूरत और हर शक्ल में छुआछूत को छोड़ दिया हो, यह भी ज़रूरी होगा कि उसे साम्प्रदायिक एकता (फ़िरक़ेवाराना इत्तहाद) के आदर्श में विश्वास हो, सब धर्मों के लिये उसमें बराबर का आदर और मान हो और नस्ल, धर्म या मर्द औरत के फ़र्क़ का ख़याल न करते हुए सबको बराबर के मौक़े मिलने और सबका बराबर का दरजा समझे जाने में भी उसे विश्वास हो.

२.—वह अपने अधिकार के अंदर के हर गाँव वाले से मिले जुलेगा.

३.—वह गाँव वालों में से काम करने वाले भरती करेगा,

उन्हें काम करना सिखाएगा और उन सबका रजिस्टर रखेगा.

४.—वह अपने रोज़ रोज़ के काम का रोज़नामचा लिखकर रखेगा.

५.—वह गाँव का इस तरह से संगठन करेगा कि हर गाँव अपनी खेती और दस्तकारी के ज़रिये अपने पैरों पर ख़ुद खड़ा हो सके और अपना काम अपने आप चला सके.

६—वह गाँव के लोगों को सफ़ाई रखने और तन्दुरुस्त रहने की तालीम देगा और गाँव वालों में तन्दुरुस्ती के बिगड़ने और बीमारी पैदा होने को रोकने के लिये सब तदबीरें करेगा.

७.—वह हिंदुस्तानी तालीमी संघ की तय की हुई नीति के अनुसार "नई तालीम" के ढंग पर जन्म से लेकर मौत तक गाँव वालों की तालीम का इन्तज़ाम करेगा.

८.—वह इस बात को देखेगा कि जिन लोगों के नाम क़ानूनी वोटरों के रजिस्टर में दर्ज होने से रह गये हैं वह उस रजिस्टर में ठीक ठीक दर्ज कर लिये जावें.

९.—जिन लोगों में अभी तक वोटर बनने की क़ानूनी योग्यता नहीं है उन्हें वह इस बात के लिये बढ़ावा देगा कि वह उस योग्यता को हासिल करें ताकि उन्हें वोट का अधिकार मिल जावे.

१०.—ऊपर के कामों के लिये और दूसरे ऐसे कामों के लिये जो समय समय पर इनमें बढ़ा दिये जावें, संघ के बनाये हुए क़ायदों के मुताबिक़ वह अपना फ़र्ज़ ठीक ठीक अदा करने के लिये अपने को ख़ुद साधेगा और योग्य बनायेगा.

संघ नीचे लिखी स्वाधीन संस्थाओं को अपने साथ मिलायेगा.

(१) आल इण्डिया चरखा संघ

(२) आल इण्डिया ग्राम उद्योग संघ

(३) हिन्दुस्तानी तालीमी संघ

(४) हरिजन सेवक संघ

(५) गो सेवा संघ

धन

अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये संघ गांव वालों से और दूसरे लोगों से धन जमा करेगा जिसमें खास जोर इस पर रहेगा कि ग़रीब लोगों से पैसा पैसा जमा किया जावे.

मो० क० गांधी

नई दिल्ली २९-१-४८

विधान की प्रस्तावना (तमहीद)

यह प्रस्तावना इन दर्द भरे शब्दों से शुरू होती है—"मुल्क के दो टुकड़े हो गये" इससे बड़ा हादसा बापू के जीवन में कोई दूसरा नहीं हुआ था. लाज़मी था कि उनके दिल और दिमाग़ पर गहरे से गहरा असर डाले. यह भी लाज़मी था कि उन्हें इस बँटवारे में अपने सारे आदर्शों, असूलों और काम करने के तरीक़ों का ख़ात्मा दिखाई देता हो. अगर तीस साल की सत्य और अहिन्सा की लड़ाई से यह नतीजे पैदा हो सकते हैं तो उनके वह सारे दावे जो वह आत्मबल और सत्याग्रह के बारे में दुनिया के सामने पेश

करते रहे थे, बिलकुल बे बुनियाद थे. अगर वह बे बुनियाद नहीं थे तो यह सूरत क्यों पेश आई ? बापू के सामने यह सवाल सबसे अहम सवाल था और उन्होंने इस विधान के पहले जुमले में इसका पूरा जवाब दे दिया है. उनके शब्दों से यह साफ़ टपकता है कि आज़ादी की क़ीमत या रिश्वत के रूप में हमने देश के दो टुकड़े किये हैं. सत्य और अहिंसा के लिहाज़ से इससे बड़ी बदएख़लाक़ी (दुराचार) नहीं हो सकती और जब हम यह सोचें कि कांग्रेस के बड़े से बड़े नेता आख़ीर वक़्त तक बराबर मुल्क को यह विश्वास दिलाते रहे थे कि किसी सूरत में भी वह देश का बँटवारा नहीं सह सकेंगे तो इस बदएख़लाक़ी की सियाही और भी बढ़ जाती है. लेकिन दरअसल इस दुराचार, इस सत्य और अहिंसा की जान बूझ कर पामाली करने का ज़िम्मेदार कौन है ? इसका जवाब एक ही सकता है कि यह ज़िम्मेदारी पूरी पूरी बापू की है जिनके असूलों और तरीक़ों पर कांग्रेस काम कर रही थी और जो उसके असली और सच्चे रहनुमा थे. जैसा हम ने कहा है, इस ग़लत फ़हमी का जवाब बापू ने अपने इस विधान के शुरू के फ़िक़रे में दे दिया है—

"देश के दो टुकड़े तो हो गये, फिर भी इंडियन नेशनल कांग्रेस ने राजकाजी आज़ादी हासिल करने के जो साधन निकाले थे उन साधनों से हिन्दुस्तान ने आज़ादी हासिल कर ली है."

इतने साफ़ शब्दों में हिन्दुस्तान की तीस साल की सियासी

कशमकश और लड़ाई में जो असूल और तरीक़े इस्तेमाल किये गये उनकी पूरी जिम्मेदारी से बापू ने इससे पहले कभी इतने साफ़ और खुले शब्दों में अपने आप को अलग नहीं किया. बापू किसी मामले में अपनी जिम्मेदारी क़बूल करने से डरने वाले इन्सान नहीं थे. जिम्मेदारियाँ क़बूल करने की जो शानदार मिसालें उन्होंने दुनिया के सामने पेश की हैं उन्हें इन्सानी दुनिया आसानी से भुला न सकेगी. इसलिये इस जिम्मेदारी से बापू को अपने को अलग करने पर हमें और भी गहरी निगाह डालने की कोशिश करनी चाहिये. हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि सारी दुनिया के दिल पर यह ख़याल जमा हुआ है कि कांग्रेस बापू के असूलों और तरीक़ों पर चलती थी और उन्हीं से उसे इतनी शानदार जीत हुई कि बिना ख़ून ख़राबी के और अपनी मरज़ी से अंग्रेज़ी सरकार देश से चली गई. बापू की इससे ज्यादा कामयाबी और क्या हो सकती है. लेकिन बापू इसको अपनी सबसे बड़ी हार समझते हैं और कहते हैं कि उनका इसमें कोई हाथ न था. जो कुछ किया है कांग्रेस ने अपनी पालसी और अपने तरीक़ों से किया है और इस वास्ते इस सारी बुराई भलाई की वही जिम्मेदार है.

हम पहले दिखा चुके हैं कि कांग्रेस और बापू के बीच हमेशा कितने गहरे मतभेद रहे और कैसे कांग्रेस उनकी सलाहों और असूलों का त्याग कर वह रास्ते अपनाती रही जिसे बापू असत्य और हिंसा के रास्ते कहते थे. लेकिन कांग्रेस के नेताओं के दिल में बापू के लिये इतना गहरा प्रेम और इतनी श्रद्धा थी और वह उन्हें इसी प्रेम और श्रद्धा के साथ इस तरह अपना रहनुमा बनाया

करते थे और साथ ही साथ अपने असूल और अमल में उनके ख़िलाफ़ चलने पर इतने ख़ूबसूरत और गहरे परदे डालते रहते थे कि दुनिया यह महसूस नहीं कर सकती थी कि वह किस हद तक बापू के सारे अहिंसात्मक असूलों और साधनों के ख़िलाफ़ काम कर रहे हैं. इसीलिये हिन्दुस्तान और दुनिया के लोगों को सदा इस बारे में गहरी से गहरी ग़लत फ़हमियाँ होती रहती थीं. लेकिन इस बुनियादी बेअसूली और ग़लत तरीक़ों का आख़िरी नतीजा इतना भयानक और शर्मनाक हुआ कि बापू को इस सारे राज़ की असली हक़ीक़त को खोल कर दुनिया के सामने रख देने की सख़्त ज़रूरत महसूस हुई. बापू को यह ख़तरा पैदा हो गया कि ऐसा न हो कि आने वाली दुनिया की पीड़ित और मज़लूम क़ौमें कांग्रेस के रास्ते को सत्य और अहिंसा का रास्ता समझ कर अपनी आज़ादी और मुक्ती के लिये जो राह अपनाएँ उनसे उनके लिये ऐसे ही भयानक ख़तरे और बरबादियाँ पैदा हो जायँ. इसी लिये अपनी इस आख़िरी वसीयत में बापू ने इस मसले को हमेशा के लिये साफ़ कर दिया है. इसके बाद भी अगर कोई उनकी इस शिक्षा की तरफ़ से आँखें चुराता है या बेपरवाही बरतता है तो इसकी ज़िम्मेदारी ख़ुद उसी पर है.

बापू हमेशा अपने इस ख़याल को हर मौक़े पर अपने तरीक़े पर ज़ाहिर करते रहते थे. बदक़िस्मती से कांग्रेस ने कभी बापू की शिक्षा के इस पहलू पर ध्यान नहीं दिया. इसका आख़िरकार नतीजा यह निकला कि दुनिया की सबसे बड़ी जीत उसके लिये भयानक बरबादियों का एक न ख़तम होने वाला सिलसिला अपने साथ

जाई. इसका जितना दुख और जितना दर्द बापू को था, किसी दूसरे को नहीं हो सकता था. उसी ने उन्हें इस विधान के बनाने पर मजबूर किया जिसमें उन्होंने कांग्रेस को उसकी गलतियों पर आखिरी बार चेतावनी दी है और कांग्रेस और देश को वह रास्ता दिखाया है जिस पर चलकर अपने गुनाहों का बहुत कुछ प्रायश्चित्त हो सकता है.

कांग्रेस के काम के तरीक़ों से अपने आपको बरी करके बापू ने उसके सामने वह नतीजे पेश किये हैं जो उसके ग़लत कामों से पैदा हुए हैं. सब से पहले उन्हों ने यह दिखाया है कि इनसे खुद उसका बुरा हाल हो गया है. उनके शब्द यह हैं—

"कांग्रेस की आज की शक्ल व सूरत का, यानी इस सूरत का जिसमें वह प्रचार का एक ज़रिया और पार्लीमेन्टी मशीन बन गई है."

बापू का कहना है कि राजकाजी आज़ादी पाने के बाद, जो दुनिया की सबसे बड़ी ताक़त समझी जाती है, कांग्रेस देश की सच्ची सेवक और सुधारक बनने की जगह पार्लीमेन्टी हुकूमत चलाने की मुर्दा मशीन और उसका गुन गान करने का साधन बन कर रह गई है. आखिर यह दर्दनाक तबदीली उसमें क्यों पैदा हो गई. इसका कारन यह है कि राजकाजी आज़ादी का सही इस्तेमाल करना उसके बस से बाहर हो गया है. आज़ादी एक शक्ति है जिससे अपनी क़ाबलियत के अनुसार अच्छे और बुरे दोनों काम लिये जा सकते हैं. यह खुद कोई नेमत नहीं है. इसका सही इस्तेमाल अच्छे से अच्छे नतीजे

पैदा कर सकता है. इसका ग़लत इस्तेमाल इसे दुनिया का सबसे बड़ा ख़तरा बना सकता है.इसलिये अगर कांग्रेस का आदर्श एख़लाक़ और सदाचार होता और उसने बापू के सन्देश को सही तौर पर समझने की और उस पर अमल करने की कोशिश की होती तो वह इस ताक़त को पाने के बाद इसका सही इस्तेमाल कर सकती थी. उसने अपनी इस ज़बरदस्त शक्ति को और उन सारे ज़रियों और साधनों को जो उसने इसको भेंट कर दिये,योरप की शैतानी सभ्यता की अंधी पैरवी में ख़र्च करना अपना पेशा बना लिया और इस राह में पहला विनाशकारी (हिलाकात आमेज़) क़दम यह उठाया कि बिना ज़रूरी सुधार और तबदीलियों के पार्लीमेन्टी हुकूमत क़ायम करके उसे एक बेजान मशीन की तरह चलाने लगी.बापू की तीस साल की इस शिक्षा को कि हमारे देश के लिये अंग्रेज़ी सरकार उतना बड़ा ख़तरा नहीं है बल्कि हमारी अंग्रेज़ियत है, हमारी राजकाजी ग़ुलामी नहीं है बल्कि हमारी सदाचारी,आर्थिक और नैतिक ग़ुलामी है, उसने ठीक उस मौक़े पर जब कि उससे पूरा फ़ायदा उठाने का समय आया इस तरह भुला दिया जैसे इस देश में यह ख़याल कभी पैदा ही नहीं हुआ था . इसी का नतीजा है कि देश के दो टुकड़े हो गये, इसी का नतीजा है कि दो टुकड़े हो जाने के बाद वह सारी मुसीबतें और ख़तरे जिन को दूर करने के लिये यह टुकड़े किये गये थे, उसी जगह पर आज भी पहले की तरह बल्कि और भी ख़राब रूप में बाक़ी हैं. उनके साथ-साथ देश में वह नई हालतें पैदा हो रही हैं कि अगर अब भी इस पच्छिमी पार्लीमेन्टी हुकूमत के तरीक़ों में सुधार न किया और पच्छिमी सभ्यता के असूलों,तरीक़ों और पालिसी के

न छोड़ा तो पच्छिमी ग़ुलामी का जुआ दोबारा देश के कंधे पर आजायेगा और जनता, कांग्रेस और कांग्रेसी सरकार सब उन मुसीबतों में पड़ जायँगी जिनके मुक़ाबले में उनकी पिछली बरबादी माँद पड़ जायगी. पच्छिमी सभ्यता की अंधी पैरवी से देश में वही नतीजे पैदा होंगे जो आज योरप में पैदा हो रहे हैं. बदकारी, दग़ा फ़रेब, नफ़रत, ख़ुदग़रज़ी, लूट मार और हर तरह के घरेलू झगड़े जो योरप की तहज़ीब की ख़ासियत हैं, देश में अपना घर बनालेंगी.

चीन और बरमा वग़ैरा की सी हालत इस देश में भी पैदा हो सकती है इस लिये कांग्रेस को इस रास्ते को छोड़ देना चाहिये. उसे यह महसूस करना चाहिये कि वह अपने पुराने रास्ते से बिलकुल हट गई है और इस लिये अपने मौजूदा रूप में किसी मानी में भी देश के लिये कारआमद नहीं रही.

बापू के शब्द यह हैं—

"कांग्रेस की आजकल की शक्ल सूरत का, यानी इस सूरत का जिसमें वह प्रचार का एक ज़रिया और पार्लीमेन्टी मशीन बन गई है, अब कोई काम नहीं रह गया."

सवाल यह है कि बापू की निगाह में कांग्रेस का पुराना उपयोग या काम क्या था और अब वह क्यों और कैसे ख़तम हो गया. बापू की निगाह में कांग्रेस का पुराना उपयोग यह था कि चाहे कितने ही ग़लत तरीक़े से क्यों न हो, उसने अहिंसात्मक ढंग पर बापू के सत्याग्रह के प्रोग्राम को बड़ी ही बहादुरी, बेग़रज़ी और

नुमाइन्दे सदाचारी और त्यागी हों. दूसरी यह कि इन नुमाइन्दों से सच्ची सेवा ले सकने की जनता में शक्ति हो. तीसरी यह कि इन्हें जब चाहे बदल सकने का भी जनता को अधिकार हो. पर आज कल की हालत में इन तीनों बातों का हो सकना नामुमकिन है इसलिये बापू राज के ऊपरी रूप को इतनी बड़ी चीज़ नहीं मानते थे. वह किसी भी राज के अच्छे बुरे होने की सबसे बड़ी कसौटी यह मानते थे कि वह राज धर्म और नेकी के रास्ते पर चलता है या नहीं, जनता का सच्चा सेवक है या नहीं, सचमुच उसमें जनता ही राजा है या नहीं.

पार्लमेंटी राज में चुनाव से भी बुरी चीज़ इसकी वह दलबन्दी है, जिसे पार्टी सिस्टम कहा जाता है. इस राज में दो पार्टियों का होना देश के फ़ायदे के लिये ज़रूरी माना जाता है. इसके बिना पार्लमेंटी राज चल ही नहीं सकता. कम से कम दो पार्टियाँ तो होनी ही चाहियें जिनका यह जन्मसिद्ध और क़ुदरती हक़ हो कि वह एक दूसरे को गिराने और मिटाने की कोशिश करती रहें. इस तरीक़े ने मार काट और ख़ूनी इन्क़लाबों को ज़रूरी बना दिया है. इस पार्टी बाज़ी से सारे देश के सदाचार को और देश के असली फ़ायदे को जो धक्का पहुँचता है उसका कोई अन्दाज़ा नहीं किया जा सकता. पार्टीबाज़ी देश भर में अमर होकर गाँव गाँव और कोने कोने में फैल जाती है. हर आदमी का यह क़ानूनी फ़र्ज़ और धर्म हो जाता है कि वह न्याय अन्याय, सच झूट या ख़ुद अपने ईमान तक का ख़याल न करते हुए अपनी पार्टी वाले को ही वोट दे.

इन बुराइयों के अलावा पार्लीमेन्टी राज में पच्छिमी सभ्यता की तरह बनावट, झूट और फ़रेब भरा हुआ है. इस तरह का राज सिर से पाँव तक बुराई और हैवानियत में डूबा रहता है. इसीलिये बापू को जितनी नफ़रत पच्छिमी सभ्यता से थी उतनी ही पार्लीमेंटी राज से थी. उन्होंने इसके सम्बन्ध में भी अपनी किताब "हिन्द स्वराज्य" में नीचे लिखे शब्दों में अपने विचार ज़ाहिर किये हैं. वह लिखते हैं—

"इङ्गलैंड की इस समय जो हालत है उसे देखकर तो सचमुच दया आती है, और मैं तो ईश्वर से मनाता हूँ कि वैसी हालत भारत की कभी न हो. जिसे आप पार्लीमेंटों की मां कहते हैं वह इङ्गलैंड की पार्लीमेंट तो बाँझ और वेश्या है. यह दोनों शब्द कड़े हैं पर उसपर पूरी तरह लागू होते हैं." (२४, २१)

"..................पर आज इतना तो सभी स्वीकार करते हैं कि पार्लीमेंट के मेम्बर ढोंगी और स्वार्थी होते हैं..................जिस दल का जो मेम्बर होता है, वह उसी दल को आँख बन्द करके अपना वोट देता है, क्योंकि "डिसिप्लिन" यानी क़ायदेदारी के ख़याल से वह ऐसा करने के लिये मजबूर है. कोई इससे अपवाद रूप निकल जावे तो उसे बाग़ी और उसके काम को बग़ावत समझा जाता है.................." (पन्ना ३६)

पार्लीमेंटी राज के लिये मरते दम तक बापू की यही राय रही. इसके संबन्ध में भी उन्होंने जो भविष्यबानी की थी यानी यह कि अगर पार्लीमेंटी राज इस देश में क़ायम हो गया, तो इस देश

का नाश हो जायगा, यह भविष्यबानी उनकी पच्छिमी सभ्यता वाली भविष्यबानी से भी ज्यादा जल्दी सची साबित हो रही है.

बापू पार्लीमेंटी हुकूमत के ख़िलाफ़ थे. फिर भी पच्छिमी सभ्यता की चका चौंध ने इस देश के पढ़े लिखे लोगों को उसके लिये ऐसा बावला कर दिया था कि बापू इन्हें उसकी तरफ़ जाने से किसी तरह भी न रोक सके. देश के नेताओं ने अपनी सारी शक्ति इस बात पर लगा दी कि बापू अपने स्वराज की तहरीक का मक़सद साफ़ शब्दों में पार्लीमेन्टी राज को मान लें. इन नेताओं का ख़याल था कि अगर स्वराज का रूप इस तरह साफ़ कर दिया गया तो अंग्रेजों की तरफ़ से भी विरोध कम हो जावेगा और दूसरे देशों को भी हिन्दुस्तान की तरफ़ से इतमीनान हो जावेगा. श्री महादेव देसाई ने "हिन्द स्वराज" के अक्तूबर सन् १९३८ के एडीशन की प्रस्तावना में बापू के नीचे लिखे शब्द नक़ल किये हैं :—

"इस किताब में आज कल की सभ्यता की बड़ी निन्दा की गई है. यह सन् १९०८ में लिखी गई थी. पर आज तो इस बारे में मेरा विश्वास और भी पक्का है."

"पर मैं अपने पाठक का इस तरफ़ खास ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि आज मेरा लक्ष्य (मक़सद) वह स्वराज नहीं है जिसका बयान इस पुस्तक में हुआ है. मैं मानता हूँ कि हिन्दुस्तान उसके लिए पूरे तौर से तैयार नहीं है. ऐसा कहना ढिटाई तो मालूम होगी पर मुझे पक्का विश्ववास यही है कि मैं खुद तो उसी स्वराज के लिये काम करता हूँ जिसका चित्र इस किताब में खींचा गया है. पर हम सब लोग मिल कर जो काम कर रहे हैं वह हिन्दुस्तान

होने पता था. बापू जानते थे कि उनके इस ढंग से जनता में बड़ी ग़लतफ़हमी पैदा होती है. दिन रात इसकी शिकायतें उनके पास पहुँचती रहती थीं. पर वह कभी एक क़दम भी अपने रास्ते से नहीं हटे. वह हट सकते भी नहीं थे. सत्य और अहिंसा का यही अजीब रास्ता था जिसपर चलते रहना वह अपना धर्म मानते थे.

इसी तरह पार्लीमेंटी राज के ख़िलाफ़ होते हुए भी उन्होंने कांग्रेस को पार्लीमेंटी राज हासिल करने में मदद दी. वह कांग्रेस के प्रोग्राम में से असहयोग आन्दोलन को निकाल देने के ख़िलाफ़ थे फिर भी देश वालों की इच्छा के अनुसार उन्होंने इसे निकाल दिया. कौंसिलों में जाने के वह दिल से ख़िलाफ़ थे, फिर भी उन्होंने कौंसिलों में जाने का सुझाव ख़ुद पेश किया था. स्वराज पार्टी से बुनियादी फ़र्क़ होते हुए भी उन्होंने उसकी ऐसी मदद की कि पं० मोती लाल नेहरू और श्री चित्तरंजन दास फिर से उनके भक्त बन गये. बापू का जीवन इस तरह की मिसालों से भरा पड़ा है.

अब हम बापू के उन सब विचारों को मोटे तौरे पर बयान कर चुके जिनको जान लेना हमारी राय में बापू के नये विधान को समझने में मदद देगा. हम इन विचारों को मानें या न मानें, हम इन्हें नेक समझें या ग़लत, हम इन्हें गये बीते ज़माने की तरफ़ दुनिया को पीछे घसीटने की कोशिश कहें या नई दुनिया को लाने का जतन कहें, हम इन्हें सच्चे ज्ञान और व्यवहार दोनों का इत्र और निचोड़ समझें या नासमझी की और अनहोनी बातें मानें, हमें

यह मानना ही पड़ेगा कि बापू के मरते दम तक इस सम्बन्ध में यही विचार रहे.

हम अगर आगे के लिये देश की तामीर के काम में बापू के विचारों और तरीक़ों से मदद लेना चाहते हैं तो इन विचारों के शुद्ध रूप को समझ लेना हमारा फ़र्ज़ है, ताकि इनसे जो शक्ति देश में पैदा हो सके उसे हम अपने देश और अपने समाज की तामीर में पूरी तरह काम में ला सकें.

राज काज की शक्ति से और दुनिया की दूसरी बाहरी शक्तियों से ठीक ठीक काम लेने के लिये आत्मबल और सदाचार की ज़रूरत होती है. नहीं तो यह शक्तियाँ हमें ऊँचा ले जाने की जगह गिरावट की तरफ़ ले जाती हैं. बापू के तरीक़ों को हमने शुद्ध रूप में नहीं बरता. फिर भी हमने जिस दरजे तक उन पर अमल किया उससे भी देश में एक अनोखी ताक़त, जागृति, निडरता और इतनी बड़ी सरकार से टक्कर लेने और नुक़सान सहने की शक्ति हममें पैदा हो गई. पर सच्चा सदाचार, सच्चा त्याग और आत्मबल पैदा न हो सके. नतीजा यह हुआ कि आज़ादी तो मिल गई, पर उसकी क़ीमत हमें मुल्क के बँटवारे और बापू की जान ले लेने की सूरत में भरनी पड़ी. इससे ज़्यादा बदनसीबी हमारे लिये और क्या हो सकती थी. अगर अब भी हमारी आंखें न खुलीं तो हमें इससे भी ज़्यादा क़ीमतें अदा करनी पड़ेंगी. इन आफ़तों से बचने और सच्ची उन्नति के रास्ते पर पैर जमा कर चलने का एक ही तरीक़ा है. वह यह है कि नेकी और बदी के असूलों में, नेक कामों के नेक नतीजों और

बुरे कामों के बुरे नतीजों में हमें पक्का विश्वास हो. हम इन असूलों को अटल असूल मानें, और दुनिया की बड़ी से बड़ी ताक़तों के सामने, या यह सोचकर कि इन असूलों पर अमल करना कठिन है हम किसी भी संसारी या राजकाजी मतलब को पूरा करने के लिये नेकी बदी के ऊँचे असूलों का क़ुरबान करने के लिये तैयार न हों.

विधान क्यों बना ?

लोक सेवक संघ के विधान का मसौदा बापू ने ३० जनवरी सन् १९४८ के तीसरे पहर को अपनी मौत के चार घन्टे पहले इंडियन नेशनल कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी को इस हिदायत के साथ दिया था कि वह आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के सामने मन्जूरी के लिये पेश किया जावे. उन्होंने अपना यह इरादा भी ज़ाहिर किया था कि मैं इस विधान पर पांच छै लेख 'हरिजन' में लिख कर इसके अलग-अलग पहलुओं को समझाने की कोशिश करूँगा. इससे पता चलता है कि बापू के सामने यह विधान कितनी बड़ी चीज़ थी. सच यह है कि महीनों ही नहीं मुद्दतों के सोच विचार के बाद वह उस नतीजे पर पहुँचे थे जो इस विधान के रूप में उन्होंने देश के सामने रखा.

इस विधान में उन्होंने कांग्रेस को यह सलाह दी है कि वह अपना आजकल का संगठन तोड़ कर 'लोक सेवक संघ' का रूप ले ले. कांग्रेस जैसी पुरानी शक्तिशाली और इतनी बड़ी संस्था को इस तरह की सलाह देना बहुत अजीब सा दिखाई देता है. और जब हम यह जानते हैं कि बापू हर क़दम कितने सोच कर और ज़िम्मेदारी के साथ उठाया करते थे तो इसकी गहराई और भी बढ़ जाती है.

यह गहरा क़दम बापू ने क्यों उठाया ?

इस फ़ैसले के संबन्ध में बापू से और कांग्रेस और हुकूमत के सभी बड़े बड़े नेताओं से मुद्दतों बात चीत होती रही. आम तौर से यह लोग बापू के इस विचार के बिल्कुल विरुद्ध थे. वह कांग्रेस को तोड़ देना देश के लिये बहुत बुरा समझते थे. इससे ज़्यादा बुरा और ख़तरनाक उन्हें यह दिखाई देता था कि वह देश का राज किसी दूसरी पार्टी के हाथों में दे दें. उन्हें डर था कि दूसरी पार्टियाँ राज पर क़ब्ज़ा पाकर इसे ठीक ठीक न चला सकेंगी. पंडित जवाहर लाल नेहरू ने वर्धा की रचनात्मक कानफ्रेन्स (मार्च सन् १९४८) में कहा था कि "अपने नये विधान से बापू हमें राजगद्दी से ही नहीं बल्कि राजनीति के मैदान से ही बाहर ले जाना चाहते हैं. लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी हम यह न समझ सके कि आख़िर हम इसको किसे सौंपें."

इसमें शक नहीं कि यह एक बड़ा गहरा सवाल है. इससे पहले भी यह सवाल कांग्रेस के नेताओं को कई बार परेशान कर चुका था. असेम्बलियों और कौंसिलों के अन्दर रह कर अंग्रेज़ी राज का मुक़ाबला ज़्यादा कामयाबी से किया जा सकता है या इनसे बाहर रह कर, अन्दर जाने के बाद इनसे बाहर आकर लड़ाई ज़्यादा कामयाब होगी, या इन्हें अपने हाथों में रखते हुए, इस तरह बहुत से सवाल समय-समय पर देश के सामने पहले भी आ चुके थे. इन मौक़ों पर बापू की सदा एक ही सी राय होती थी, वह यह कि कांग्रेस का इनसे बाहर रहने में ही ज़्यादा भला है. फिर भी इस सम्बन्ध में बापू को कई बार दूसरों की राय के सामने झुकना पड़ा. ऐसे मौक़े पर बापू ने यह साफ़ कह दिया कि वह अपने

मंज़ूरी ख़ुशी से नहीं मजबूरी से दे रहे हैं. जब अंग्रेज़ों के समय में कॉंग्रेस के लिये कौंसिलों और असेम्बलियों से बाहर रहना इतना कठिन था तो अँग्रेज़ी राज के चले जाने पर, देश के पूरी आज़ादी हासिल होने के बाद कांग्रेस के नेताओं की समझ में राज गद्दी को छोड़ देना कैसे आ सकता था. कांग्रेस के इस गहरे झुकाव को जानते हुए भी और उस जोश को सामने रखते हुए भी जो राज-नैतिक आज़ादी मिल जाने से देश में पैदा हो गया था बापू ने फिर भी राजगद्दी को छोड़ देने का सवाल कांग्रेस के सामने रख देने का फ़ैसला किया, और आख़ीर समय तक इस फ़ैसले पर जमे रहे.

सच यह है कि जिस दिन से बापू राज काज के मैदान में आये तब से लेकर आख़ीर तक उनके विचारों और आदर्शों और कॉंग्रेस के विचारों और आदर्शों में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ रहा है. हम ऊपर कह चुके हैं कि कांग्रेस के साथ बुनियादी मतभेद होते हुए भी बापू लगभग तीस साल तक अंग्रेज़ी हुकूमत से लड़ने में कॉंग्रेस की अगुआई करते रहे. इस सारे समय में कांग्रेस के बहुत से विचार, रंग ढंग और योजनाएँ बापू के असूलों, विचारों और योजनाओं से उलटी थीं फिर भी जहाँ तक हो सका कॉंग्रेस बापू के असूलों पर चलने की कोशिश करती रही. गो कि यह कोशिश खोखली और ऊपरी होती थी. इस की वजह यह थी कि बापू के मुक़ाबले का कॉंग्रेस के पास दूसरा नेता न था और न ऐसी कोई योजना थी जिससे कॉंग्रेस जनता को और संगठित करके अंग्रेज़ी राज से टक्कर ले सकती. इसी लिये ख़ुशी या नाख़ुशी बापू के

बताए हुए साधनों को ही वह इस्तेमाल कर सकती थी. इस इस्तेमाल में यह उन्हें इतना अदल बदल और तोड़ मरोड़ डालती थी कि उनका सारा रंग सा बिगड़ जाता था और इन साधनों की आत्मिक और नैतिक शक्ति नष्ट हो जाती थी. कहने को यह योजनायें बापू की होती थीं मगर असलियत में उनकी सलाहों और सिद्धान्तों का उन में बहुत कम अंश रह जाता था.

अजीब बात यह है कि ज्यों ज्यों बापू की ताक़त का असर बढ़ा और उनकी कामयाबियों के नक़्शे हमारे सामने आते गये त्यों त्यों देश के नेताओं और सिपाहियों की श्रद्धा बापू की अहिंसा की योजनाओं और हथियारों में घटती गई. सन् १६३० और ३२ के आन्दोलनों के बाद बापू और कॉंग्रेस के असूली मतभेद ने एक विकट रूप ले लिया. इन आन्दोलनों में बहुत सी बातें ऐसी हुई जिन्हें बापू नाजायज़ समझते थे. जैसे पिकेटिंग में टाँगें पकड़ लेना, लेटकर लोगों को रोकना, तरह तरह के हिंसा के नारे लगाना. हर तरह के आदमियों से जेल भरने की कोशिश करना, पकड़ जाने के डर से अपनी जायदादें दूसरों के नाम कर देना, काँग्रेस तक को बिल्कुल नंगा कर देना, मुक़दमों में नाम और पते झूटे बताना, पुलिस की ज़्यादतियों में "लाल पगड़ी हाय हाय !" "रोटी का कुत्ता हाय ! हाय !!" चिल्लाना. जेलों के अन्दर जाकर हमने जो कारनामे किये, उनकी सच्ची कहानी अगर दुनिया सुन पाये, तो हैरान हो जाय. जेल जाने वालों की गिनती बढाने के लिये हम जो जो जायज़ या नाजायज तरकीबें करते थे उन पर किसी को भी अभिमान नहीं हो सकता. छिपकर अख़बारों और बुलेटीन निकालने का और

अंडर ग्राउन्ड हो जाने का आज भी हमें घमन्ड है. ऐसी ही बहुत बातें थीं जिन्हें बापू सत्य और अहिंसा के खिलाफ़ समझते थे और दिल से चाहते थे कि हम इन्हें छोड़ दें. इतना ही नहीं कि हमने उनकी सलाह न मानी, हमने इस असूल ही से इन्कार किया कि यह सत्य और अहिंसा के खिलाफ़ या काँग्रेस की क्रीड के खिलाफ़ हैं.

काँग्रेस की क्रीड में केवल जायज़ और शान्तिमय साधनों के काम में लाने की इजाज़त दी गई है. काँग्रेस की इस क्रीड को कि जायज़ और शान्तिमय साधनों से पूरा स्वराज हासिल किया जाय, बापू ने ही बना कर काँग्रेस से मन्ज़ूर करवाया था. इस क्रीड (मक़सद) के असूल का बदल जाना बापू नहीं सह सकते थे. हमने दावा यह किया कि ऊपर दी हुई यह सारी बातें जायज़ और शान्तिमय हैं. बापू का कहना था कि यह क्रीड मेरी बनाई हुई है और इस लिये इन शब्दों के जो मानी मैं समझता हूँ वह ही ठीक समझे जाने चाहियें, और मैंने क्रीड में जायज़ और शान्तिमय शब्द "सत्य" और "अहिंसात्मक" शब्दों के लिये इस्तेमाल किये हैं. लोगों ने उनकी बात नहीं मानी. आखिरकार यह मामला आल इण्डिया काँग्रेस कमेटी के सामने बम्बई में पेश हुआ. आल इण्डिया काँग्रेस कमेटी ने भी बापू की यह बात नहीं मानी. इसी पर बापू को काँग्रेस की मेम्बरी से इस्तीफ़ा देना पड़ा. वह किसी ऐसी राजनैतिक संस्था में रहना, जिसका रास्ता साफ़ तरीक़े पर सत्य और अहिंसा का न हो, ठीक नहीं समझते थे.

बापू के अलग हो जाने के बाद काँग्रेस उनके असर से और भी आज़ाद हो गई. उसने बापू की योजनाओं की तरफ़ ध्यान

देना और भी कम कर दिया. बापू के राजनैतिक चेले यह महसूस करने लगे कि अब हम बलिग़ हो गये हैं और देश की ज़िम्मेदारी हमें अपनी समझ और अपने सिद्धान्तों के अनुसार निभानी चाहिये कठिन से कठिन और गम्भीर से गम्भीर मौक़ों पर इन्होंने बापू की इच्छाओं और सलाहों का नेकनियती और हिम्मत के साथ ख़ुद विरोध किया, इस सबके होते हुए भी बापू काँग्रेस की वैसी ही दिल से सेवा करते रहे.

जो लोग बापू के सिद्धान्तों और आदर्शों के प्रेमी थे वह उनके इस तरीक़े से परेशान रहते थे. नहीं मालूम कितनी बार उन्होंने बापू पर यह जोर डाला कि वह अपने सिद्धान्तों में सच्चे दिल से विश्वास रखने वालों की पार्टी अलग बनायें और उसको साथ लेकर देश में अपने विचार के अनुसार स्वराज क़ायम होने की बुनियादें डालें. बापू जानते थे कि ऐसी संस्था और ऐसे लोगों का साथ देना जिनके असूल उनके ख़िलाफ़ हों, जनता के लिये बापू के सिद्धान्तों और योजनाओं को पूरी तरह समझना नामुमकिन बना रहा है. फिर भी वह सदा अपनी इसी नीति पर चलते रहे और कभी काँग्रेस से अलग हो कर इन्होंने अपना दल अलग नहीं बनाया. यही उनका स्वभाव था, यही सत्य, अहिंसा का रास्ता था और इसी को वह अपना धर्म समझते थे.

इसी के साथ साथ अगर उन्हें एक बार यह यक़ीन आ जाता था कि कोई संस्था जनता के भले के ख़िलाफ़ काम करती है या जनता के भले के लिये उसकी ज़रूरत नहीं रही तो बापू उससे अलग हो जाते थे और कोई दूसरी संस्था बना कर या किसी बनी

बनाई संस्था को बढ़ा कर अपना काम चलाते थे. होमरूल लीग को उन्होंने खत्म करके काँग्रेस के लिये मैदान साफ़ कर दिया था. हिन्दी साहित्य सम्मेलन से अलग होकर उन्होंने दूसरी संस्था (हिन्दुस्तानी प्रचार सभा) से अपना काम चलाया था. साबरमती के सत्याग्रह आश्रम को उन्होंने अपने ही हाथों से तोड़ दिया. गांधी सेवा संघ को, जो केवल उनके भक्तों का संघ समझा जाता था, और जरूरी न समझ कर खत्म कर दिया. उनका दिल जितना नरम था उतनी ही उसमें कड़ाई भी थी. यही कारण था कि वह सत्य पर अटल रूप में जमे रहते थे. काँग्रेस पर से उनकी श्रद्धा दिनों दिन घटती जा रही थी. जब तक काँग्रेस देश की आजादी के लिये अंग्रेजी सरकार से लड़ रही थी, देश के लिये उसकी बहुत बड़ी जरूरत थी. अँग्रेजी राज के देश से उठ जाने और देश को आजादी मिल जाने ने इस सारी हालत को बिलकुल बदल दिया. सबसे बड़ा असर इसका यह पड़ा कि सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, असहयोग जैसी चीजों की काँग्रेस और उसकी हुकूमत को कोई ज़रूरत ही बाक़ी न रही. यह चीजें काँग्रेस के लिये उतनी ही ख़तरनाक हो गईं जितनी यह अँग्रेजी सरकार के लिये थीं. बापू के सारे मिशन का, जहाँ तक उसका राजकाज से सम्बन्ध था, काँग्रेस के लिये खातमा हो गया. आजादी मिलते ही देश की सरकार के सामने दूसरे देशों के साथ सम्बन्ध का सवाल सबसे बड़ा सवाल हो गया और पुलिस और फ़ौजों का इस राज के लिये वही बड़प्पन हो गया जो पच्छिमी देशों में है. अहिंसा के असूल, विचार, साधन और योजनायें देश के जीवन से ऐसी मिट गईं जैसे यह कहीं थी ही

नहीं. इसके साथ बापू के असर का कांग्रेस और उसकी हुकूमत पर से बिल्कुल मिट जाना लाज़िमी था. आज़ादी मिल जाने के बाद काँग्रेस के ज़िम्मेदार नेता बापू की सलाहों को बेकार और अपने लिये एक रुकावट महसूस करने लगे. बड़े से बड़े मौक़ों पर उन्होंने सलाह लेना तक बन्द कर दिया और जब लेते भी थे तब अगर वह उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ होती थी तो वह उसकी परवाह नहीं करते थे. बापू पर इन बातों का गहरा असर था. वह इसकी चर्चा बराबर किया करते थे. उनकी प्रार्थना के प्रवचनों में भी यह शिकायतें मौजूद हैं.

बापू ने पच्छिमी सभ्यता के लिये सन् १९०९ में भविष्यबानी की थी कि यह अपने दुराचार की आग में आपही भस्म हो जायगी. उनकी इस भविष्यबानी को पच्छिम की दो बड़ी लड़ाइयों ने क़रीब क़रीब पूरा करा दिया. जो कुछ रह गया है उसके लिये तीसरी की तैयारी बड़े ज़ोर शोर से हो रही है. इसी तरह उन्होंने इस देश के लिये यह भविष्यबानी की थी कि अगर पार्लीमेंटी राज यहाँ जम गया तो यह देश बिलकुल बरबाद हो जायगा. पच्छिमी सभ्यता से भी कहीं ज़्यादा उनका यह ख़याल सच्चा साबित हुआ. आज़ादी पाने और पार्लीमेंटी राज जमाने की आशा ने हमारे ऊँचे से ऊँचे, नेक से नेक, त्यागी और तजरबेकार नेताओं को इतना मोह लिया कि उन्होंने इस आज़ादी और हुकूमत को ऐसी क़ीमत पर ख़रीदा जो आज तक किसी देश को देनी नहीं पड़ी थी. देश के टुकड़े करके आज़ादी मिली, नतीजा यह हुआ कि देश की जीती जागती जनता भी टुकड़े टुकड़े हो गई. ख़याल यह था कि इस

पच्छिमी समाजी, सदाचारी, माली गुलामी से बचा सके.

पार्लिमेन्टी राज अपने आपको उन दोषों से पाक नहीं कर सकता, जो उसके जन्म के दिन से ही उसकी फ़ितरत (प्रकृति) और ख़मीर में शामिल हैं. सच्चा देश सुधार उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक उसके सारे पच्छिमी तरीक़े न बदल दिये जायें. पच्छिम के इन दुराचारी तरीक़ों को बदले बिना इस देश के सात लाख बदनसीब गाँव शहरी और पच्छिमी सभ्यता के विनाश कारी असर से न बच सकेंगे. पच्छिमी सभ्यता गाँव को शहर बनाना चाहती है. वह गाँव की सारी दौलत और साधनों को समेट कर हिन्दुस्तान के कारख़ानों और उनके करोड़पति मालिकों की मदद करना चाहती है. लेकिन जब तक पच्छिमी हुकूमतें छोटी मशीनें बनाने वाली बड़ी मशीनें इतने बड़े पैमाने पर न दें, यह मक़सद पूरा नहीं हो सकता और पच्छिमी हुकूमतें इस तरह खुद अपनी आत्म हत्या करने पर राज़ी नहीं हो सकतीं. इसी लिये उसे अपनी इस विनाश कारी कोशिश में 'माया' और 'राम' दोनों को खोना पड़ेगा. हाँ यह हो सकता है कि अगर हिन्दुस्तान की पार्लिमेन्टी हुकूमत के पास फ़ौजें और ऐटमबमों की ताक़त होती तो यह दूसरे देशों से अपनी ज़रूरत की चीज़ें ज़बरदस्ती ले सकती या उन्हें अपनी चीज़ें दे सकती थी. लेकिन बदनसीबी से हथियारों के मामले में यह मशीनों से भी ज़्यादा पच्छिम की महुताज है और यह समझना कि पच्छिम इसे अपने मुक़ाबले के लिये हथियारबन्द करदेगा, एक पागल पन की बात होगी.

पच्छिम की हिन्सात्मक और विनाशकारी पालिसी और तरीक़ों

को छोड़ देने से ज्यादा एक और अहम पहलू अपने काम करने के मौजूदा तरीकों को छोड़ देने के लिये बापू ने कॉंग्रेस के सामने रखा है. उनके शब्द यह हैं—

"हिन्दुस्तान जैसे जैसे अपने इस जन-राज के लक्ष्य की तरफ़ बढ़ेगा वैसे वैसे सिविल यानी शहरी ताक़त फ़ौजी ताक़त के ऊपर क़ाबू पाने के लिये जरूर पूरी पूरी टक्कर लेगी. राज काजी पार्टियाँ और फ़िरक़ेवाराना संस्थाओं की लाग डाट हिन्दुस्तान को तन्दुरुस्त नहीं रहने दे सकती. इनसे देश को बचा कर रखना ही होगा।"

पच्छिमी सभ्यता योरप की तरह हमेशा के लिये इस देश को भी एक न ख़त्म होने वाली कशमकश, बेचैनी और बरबादी के दायरे में घेरे रखेगी और इसमें और बाहरी ताक़तों में एक अनमिट टक्कर क़ायम रखेगी. लेकिन इससे ज्यादा विनाशकारी पहलू यह है कि पार्लिमेन्टी हुकूमत के दो पार्टी सिस्टम का क़ुदरती नतीजा यह है कि ख़ुद मुल्क के अन्दर यह तरीक़ा हिन्सात्मक राज काजी इन्क़लाबों के बीज बराबर बोता रहता है. आये दिन राज काजी तूफ़ान उठते हैं और हुकूमतों को ताक़त के ज़ोर से बदलने की कोशिशें होती रहती हैं. इन कोशिशों में देश का हर गिरोह और हर तबक़ा हिस्सा लेता रहता है और इस तरह बारी बारी से कभी यह कभी वह एक दूसरे के हाथों से जख़्मी और बरबाद होते रहते हैं. योरप का आख़िरी चार साल का तजरबा इस बात का

सबूत है और उसके हर देश के घरेलू झगड़ों की एक सी कहानी और उसकी ठंडी और गरम लड़ाइयों की कहानियों से इतिहास के पन्ने रँगे हुए हैं.

पार्लिमेन्टी हुकूमत की यह ख़ासियत योरप से कहीं ज़्यादा इस देश के लिये ख़तरनाक और नाशकारी साबित होगी. राजकाजी पार्टियों के साथ साथ यहाँ फ़िरक़ेवाराना जज़्बात और दलबन्दियाँ बड़े से बड़े पैमाने पर मौजूद हैं और पुरानी संस्थाओं के अलावा इस क़िस्म की नई नई ख़तरनाक पार्टियाँ रोज़ाना जन्म ले रही हैं. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अभी हमें एक दूर की बेरंग धुंधली तसवीर की तरह नज़र आ रहा है, मगर आज भी महाराष्ट्र में ब्राह्मण अब्राह्मण या आदि वासी तहरीकों के कारन सैकड़ों ब्राह्मण गाँव छोड़ छोड़ कर शहरों में आकर रहने पर मजबूर हो रहे हैं. और जहाँ तक हमारा ख़याल है शोषित संघ के आन्दोलन ने यू० पी० में आख़िरी पंचायतों के चुनावों से यह साबित कर दिया है कि अगले चुनाव तक ही यह ख़तरनाक तहरीक एक इन्क़लाबी रूप ले लेगी. इधर तो यह जज़्बाती तूफ़ान पैदा हो रहे हैं, उधर से कम्युनिस्ट आन्दोलन की इन्क़लाबी घटायें इन तूफ़ानों को सारी दुनिया में फैला देने की भयानक आवाजें सुना रही हैं और इस सबसे ज़्यादा दुख की बात यह है कि हम जो सदियों से निहत्थे और बेहथियार थे आज अपनी इस भूक और हवस को मिटाना अपना पहला क़ौमी फ़र्ज़ समझ रहे हैं और जैसे कोई अपनी चिता के लिये आप लकड़ियाँ जुटाता हो, हम आँखें बन्द करके चारों तरफ़ हथियार जमा करने और बाँटने और फ़ौजी और

अधफौजी घेरे बनाकर अपनी मौत का खुद इन्तजाम कर रहे हैं. बापू ने इन भयानक हालतो से कांग्रेस को आगाह किया है कि आज की हालतों में मुल्क की सिविल और फौजी ताक़तों का आपस में टक्करें लेना जरूरी है और सियासी व फ़िरक़ेवाराना पार्टी बाज़ियाँ इन टक्करों में वह खूँखारी और बरबादी पैदा करेंगी जिससे देश के जीवन की बुनियादें हिल जायँगी. इसलिये कांग्रेस का इस नाशकारी माहौल (वातावरण) से बाहर आकर इसके बचाव का सामान करना चाहिये.

बापू का कहना है कि जैसे-जैसे हिन्दुस्तान अपने इस जन-राज की मंज़िल की तरफ़ बढ़ेगा वैसे-वैसे उसकी सिविल ताक़तें लाज़िमी तौर पर उसकी फ़ौजी ताक़तों पर क़ाबू पाने के लिये उनसे टकरायेंगी. कांग्रेस के लिये अच्छा यह है कि वह राजकाजी पार्टी बन्दियों और फ़िरक़ेवाराना दल बन्दियों की गन्दी खींचा-तानी से बिलकुल अलग रहे.

इन सारे तूफ़ानों से बचने के लिये, जिनका हमने ऊपर ज़िक्र किया है, और इनसे देश को बचाने के लिये बापू ने कांग्रेस को लोक सेवक संघ बन जाने की सलाह दी है. उनके शब्द यह हैं—

"इन कारनों से और इसी तरह के दूसरे कारनों से आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी मौजूदा कांग्रेस संगठन को तोड़ देने और नीचे लिखे क़ायदे के अनुसार लोक सेवक संघ का सुन्दर रूप लेने का फ़ैसला करती है."

इसमें शक नहीं कि इससे ज्यादा इन्क़लाबी सलाह कांग्रेस के

लिये दूसरी नहीं हो सकती थी. कांग्रेस जैसे महान और शानदार संगठन को यह सलाह देना कि वह खुद अपने हाथों से अपना गला घोंट दे, बापू का ही काम था. बापू को खुद इसपर मुश्किल से ही यक़ीन रहा होगा कि वह उनकी इस सलाह पर अमल भी करेगी. लेकिन अगर हम बापू के जीवन पर गहरी निगाह डालें, और कांग्रेस से उनका जो संबन्ध था, उसे सामने रखें तो हमें मानना पड़ेगा कि कांग्रेस मानती या न मानती, बापू उसको कोई दूसरी सलाह नहीं दे सकते थे.

हम कह चुके हैं कि बापू के राज काजी जीवन के शुरू से उनकी मौत के दिन तक उनके और कांग्रेस के विचारों और तरीक़ों में हमेशा ज़मीन आसमान का फ़र्क़ रहा है. यही कारन था कि वह उनकी सलाहों और तरीक़ों से पूरा फ़ायदा न उठा सकी. यह फ़र्क़ बहुत गहरा, असूली और सच्चा था. इसको समझने के लिये बापू के काम करने के तरीक़ों पर गहरी नजर डालनी चाहिये.

क़ौमी जीवन के नाज़ुक से नाज़ुक मौक़ों पर बापू ने बार-बार कांग्रेस और देश को यह सलाह दी है कि वह राज से कोई संबंध न रखे और सरकारी दायरों से बिलकुल अलग रहे, वह कौंसिलों और असेम्बलियों में बिलकुल न जाय, वह चुनाव में हिस्सा न ले, वग़ैरा वग़ैरा. कांग्रेस ने कभी इन सलाहों को माना कभी न माना पर बापू अपने इस ख़याल को हमेशा उसके सामने रखते रहे. इसके पीछे बापू का एक बुनियादी असूल था, जिसे अंग्रेजी हुकूमत के समय एक हद तक कांग्रेस ने मंज़ूर कर लिया था. वह यह कि सरकार से अलग रहना, सरकार का मुक़ाबला करने के लिये जनता की ताक़त को बढ़ाना है. और जो जमात हुकूमत को काबू में

करके उसे बदलना, सुधारना और सीधे रास्ते पर लाना चाहती वह जब तक आप हुकूमत के दायरों से दूर और बाहर न रहेगी वह कभी जनता की सच्ची अगवाई न कर सकेगी और न उसमें हिम्मत के साथ सरकार का मुक़ाबला करने की शक्ति पैदा कर सकेगी.

कांग्रेस बापू की इस बुनियादी हिदायत को कि पार्लामेंटी हुकूमत का सुधार उसके अन्दर रहकर नहीं हो सकता, उसका सुधार उसके बाहर रहकर ही हो सकता है, नहीं समझ सकी. बापू दरअसल कांग्रेस को अंग्रेज़ी सरकार को निकालने का साधन नहीं बनाना चाहते थे. वह अपने तौर पर उसके लिये इससे बहुत ऊँची जगह चुन चुके थे और उन्हें आशा थी कि अँग्रेज़ी सरकार से जीतने के वक़्त तक काँग्रेस में इतनी नैतिक बुलन्दी और दूर अन्देशी पैदा हो जायगी कि वह उनके असली मक़सद को समझ सके और उनपर अमल कर सके. वह यह चाहते थे कि कांग्रेस जनता की रक्षा और तरक़्क़ी का और देश की सरकार को जनता का सच्चा सेवक और जनता को देश का राजा और मालिक बनाये रखने का एक टिकाऊ साधन और ताक़त बन जावे, बापू के लिये सच्चे स्वराज का यही पहला क़दम था.

कांग्रेस दुनिया की अकेली और महान संस्था थी जिसने थोड़ी बहुत बापू की रहनुमाई में नैतिक प्रोग्राम अपना कर दुनिया के सब से बड़े साम्राज का बिना फ़ौज और हथियारों के मुक़ाबला किया था. उसने बेमिसाल त्याग और बेग़रज़ सेवा से अपने देश भाइयों के दिल पर क़ाबू पालिया था. बापू इस महान संस्था में उसके पुराने भाव फिर से जगाना चाहते थे. सेवा संघ बन जाने की सलाह

देने से उनका यह मतलब न था कि उसकी सरकार के मंत्री और नेता गाँव में बैठकर चरखा कातने को अपना काम बना लें. वह यह भी नहीं चाहते थे कि उसके सरकार से हट जाने के बाद उसकी जगह कोई तानाशाही या फ़िरक़ेवाराना सरकार क़ायम हो जाय, बल्कि वह काँग्रेस को राज गद्दी से हटा कर देश रक्षा और देश सुधार के काम उसके सुपुर्द करके तानाशाही या देश द्रोही सरकार के क़ायम होने की सम्भावना को ही सदा के लिये मिटा देना चाहते थे. उनका ख़याल था कि काँग्रेस अगर राज काज को तज कर देश सेवा के मैदान में फिर से आजाय तो देश की कोई भी पार्टी अकेले या मिलकर सरकार का काम काँग्रेस की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कुछ दिनों के लिये भी नहीं चला सकती. उसके बाहर आजाने से उसका त्याग देश में एक एख़लाक़ी या नैतिक हलचल मचा देता, वह फिर एक बार जाग उठता. काँग्रेस की ग़ैर मामूली संगठन शक्ति थोड़े ही अरसे में जनता के जज़्बों, विचारों और संगठनों में ऐसा ज़बरदस्त इन्क़लाब पैदा करती कि दुनिया की कोई भी हुकूमत, चाहे वह कितनी ही ख़ुद ग़रज़, दुनिया परस्त और देश की दुश्मन क्यों न होती, कांग्रेस के असर और क़ाबू के बाहर देर तक नहीं रह सकती थी, उसके लिये इसके सहयोग और मदद के बिना सरकार चलाना बिलकुल नामुमकिन हो जाता. दर असल इस तरह देश में एक ऐसी एख़लाक़ी या सदाचारी हुकुमत क़ायम हो जाती जो यहाँ की राजकाजी हुकूमत से ऊँची होती और हमेशा उसके सुधार और रहनुमाई का फ़र्ज़ अदा कर सकती. इस लिये जो सूरत पंडित जवाहर लाल नेहरू को ऐसी डरावनी नज़र आती

थी वही बापू की राय में देश को उसके सारे मौजूदा खतरों और झगड़ों से हमेशा के लिये बचा लेने का अकेला ज़रिया थी.

बापू काँग्रेस को तख्त से उतारना नहीं चाहते थे बल्कि देश का सच्चा नुमाइन्दा और असली राजा बनाना चाहते थे. और इस तरह उन हिन्सात्मक राजकाजी इन्कलाबों का सदा के लिये खात्मा कर देना चाहते थे जिन्हें पार्लीमेन्टी हुकूमत क़ुदरती तौर पर पैदा करती है. और इस तरह वह इस हुकूमत का पच्छिमी जामा उतारकर उसे अपने देश की पोशाक पहिना देना चाहते थे. लेकिन आल इंडिया काँग्रेस कमेटी के रहनुमा उनके इन जज्बात और विचारों को समझने से लाचार थे क्योंकि पच्छिमी सभ्यता उनमें से बहुत सों पर अपना गहरा रंग जमाये हुए थी और पच्छिमी पंडितों ने उन्हें यह तालीम दी है कि राजकाजी इन्क़लाब क़ुदरत और इन्सानी फितरत या मानव प्रकृति के लाज़िमी करशमे हैं—और बापू के सत्य और अहिन्सा का सबक़ क़ुदरत के क़ानूनों और इन्सानी स्वभाव दोनों के खिलाफ है. इन्हीं विचारों के कारन आल इंडिया काँग्रेस कमेटी ने बापू की आखिरी वसीयत—उनके लोक सेवक संघ के विधान—को जब वह प्रस्ताव के रूप में उसके सामने पेश हुआ तो नामंज़ूर कर दिया.

सत्याग्रह और रचनात्मक प्रोग्राम

विधान की प्रस्तावना के बाद बापू ने अपने लोक सेवक संघ का संगठन बताया है. मसविदे से पता चलता है कि बापू इस विधान की मदद से राजकाजी दायरे से बाहर एक ऐसा गिरोह पैदा कर देना चाहते थे जो जनता का सच्चा सेवक हो और जनता का इस तरह और इस पैमाने पर संगठन कर दे कि जनता हर विरोधी ताक़त से, चाहे वह देशी हो या विदेशी, अपना बचाव कर सके. इससे पहले कि हम इस विधान की दफ़ाओं को एक एक करके बयान करें, हम कुछ ऐसी बातें कहना चाहते हैं जिनसे इसके समझने और इस पर अमल करने में आसानी होगी.

इस विधान को समझने की कोशिश में हमें इस बात का खास ध्यान रखना चाहिये कि यह विधान बापू की ५० साल की जिन्दगी की आखिरी कड़ी है. यह उनके उस मक़सद को हासिल करने का आखिरी प्रोग्राम है जिसकी तरफ़ बढ़ने की वह ५० साल से कोशिश कर रहे थे, और जिसकी बहुत सी मंज़िलें वह तय कर चुके थे. इसलिये अगर हम इस प्रोग्राम को बापू के आदर्शों, असूलों और आन्दोलनों से अलग करके देखना चाहें तो हम इसके असली मतलब को नहीं समझ सकेंगे. इसके समझने के लिये यह ज़रूरी है कि हम बापू के जीवन की पूरी तस्वीर अपने सामने रखें.

हमने ऊपर बापू के जीवन के कई मक़सदों की चर्चा की है पर सचमच यह कौन कह सकता है कि बापू की जिन्दगी का

असली मक़सद क्या था. कोई कहेगा कि ईश्वर को साक्षात करना यानी उसका दीदार हासिल करना था. कोई कहेगा आत्मदर्शन या "सेल्फ़ रियलाइज़ेशन" था. कोई कहेगा कि इन्सान की ख़िदमत करना था. कोई कहेगा कि मुल्क को आज़ाद करना था. कोई कहेगा कि पच्छिमी सभ्यता के नाशक और शैतानी पहलुओं से हिन्दुस्तान को और इसके ज़रिये से इन्सानी दुनिया को बचाना था. सच यह है कि यह सारे मक़सद उनके सामने थे. और यह सब एक ही सचाई के अलग अलग पहलू हैं, इनमें कोई एक दूसरे के ख़िलाफ़ नहीं. एक ही आदमी इन सब मक़सदों को हासिल करने की एक साथ कोशिश कर सकता है.

पर जहाँ तक हमारा सवाल है हम इस विधान में बापू को दुनिया के एक सेवक की तरह देखेंगे, और इसमें भी उनकी ज़िन्दगी के उस हिस्से को सामने रखेंगे जो ख़ास तौर से राज काज से सम्बन्ध रखता है. बापू का यह विधान इस सारे सिलसिले की आख़िरी कड़ी है. यह सिलसिला दक्खिन अफ़रीक़ा से शुरू हो चुका था. वहीं बापू के सामने वह सूरतें आईं और वह उन नतीजों पर पहुँचे जिनसे उनकी आगे की ज़िन्दगी का सारा प्रोग्राम तय हो गया. हम इन नतीजों में से कुछ, जो हमारी इस समय की चर्चा से सम्बन्ध रखते हैं, नीचे देते हैं—

१. पच्छिमी सभ्यता एक शैतानी सभ्यता है.

२. पार्लीमेन्टी राज का आजकल का ढांचा और रंग ढंग इन्सानी दुनिया को मिटा देने वाला है.

३. इस सभ्यता और इस तरह के राज में एक एख़लाक़ी

इन्क़लाब यानी नैतिक क्रांति होना इन्सान की भलाई के लिये ज़रूरी है.

४. यह इन्क़लाब तलवार से या किसी भी हिन्सा के तरीक़े से पैदा नहीं किया जा सकता है. इस तरह की इन्क़लाबी कोशिशें इन्सान की तबाही और बरबादी को और भी बढ़ा देंगी.

५. किसी शैतानी ताक़त को उससे बड़ी शैतानी या हैवानी ताक़त खड़ी करके उसके ज़रिये से मिटाना ग़लत है, क्योंकि इससे शैतानियत बढ़ेगी, कम नहीं हो सकती.

६. हैवानियत का मुक़ाबला सिर्फ़ इन्सानियत से हो सकता है. क्योंकि मानव प्रेम की शक्ति तलवार की शक्ति से ज़्यादा बलवान और ज़्यादा असर वाली है.

७. अगर मानव प्रेम को सत्याग्रह का रूप दिया जावे और सत्याग्रह से एक बड़े पैमाने पर सदाचार की शक्ति पैदा कर दी जावे तो दुनिया की कोई हिन्सा की शक्ति इसके सामने खड़ी नहीं रह सकती.

८. दुनिया में एख़लाक़ी यानी नैतिक इन्क़लाब दो ही तरीक़ों से पैदा हो सकता है.

एक तो खुद हुकूमत का दिल बदल जाने से दूसरे जनता में इतनी जागृति, शक्ति और संगठन पैदा हो जाने से कि वह हुकूमत की सच्ची मालिक बन सके और हुकूमत को एक सच्चा सेवक बने रहने पर मजबूर कर सके.

९. ऊपर की दोनों बातें सत्याग्रह और रचनात्मक प्रोग्राम की

मदद से पूरी हो सकती हैं. हिन्दुस्तान की हवा इस प्रोग्राम के लिये बड़ी मददगार है. अगर हिन्दुस्तान में एक गिरोह त्यागी सेवकों यानी सत्याग्रहियों का तैयार हो जावे तो इन दोनों बातों में एक न एक अच्छी तरह पूरी हो सकती है.

इन बुनियादी विचारों को बापू दक्खिन अफ़रीका से अपने साथ लाये थे. सत्याग्रही तैयार करने की बुनियाद दक्खिन अफ़रीका में फ़िनिक्स आश्रम की शक्ल में पड़ चुकी थी. हिन्दुस्तान में आते ही बापू ने सत्याग्रह आश्रम खोला और भारत को सत्याग्रह की मदद से आज़ाद करने के लिये जो दूसरी तैयारियाँ ज़रूरी थीं, शुरू कर दीं. पर जब बापू रौलट ऐक्ट वाले आन्दोलन के सिलसिले में पहली बार राजकाजी मैदान में उतरे तो एक नई कठिनाई उनके सामने आई जिसे उन्होंने दक्खिन अफ़रीका में महसूस न किया था.

रौलट ऐक्ट वाले आन्दोलन के शुरू होते ही पंजाब और कई दूसरी जगहों पर बलवे हो गये. लोगों ने सरकार की हिंसा का हिंसा से जवाब दिया. इसी पर बापू ने अपने आन्दोलन को रोक दिया. इस सम्बन्ध में उन्होंने बम्बई में अपने दुख और अपनी कठिनाइयों को इन शब्दों में ज़ाहिर किया—"मुझसे एक हिमालय पहाड़ के बराबर ग़लती हो गई है." बापू ने अपनी ग़लती यह बतलाई कि मैंने एक नैतिक हथियार को बिना उसे काम में लाने की तालीम दिये मुल्क के हाथों में दे दिया.

अगर हम इस बुनियादी बात को ध्यान में रखें, तो हमें सत्याग्रह और रचनात्मक प्रोग्राम में क्या सम्बन्ध है, यह अच्छी तरह समझ

में आ सकता है. बापू कहते हैं कि सत्याग्रह नैतिक और रूहानी हथियार है, इसलिये जितना यह हिंसा के मिलाव से पाक और साफ़ रखा जाये, उतनी ही इसकी ताक़त बढ़ती है और उसी पैमाने पर यह भलाई का सोता बन जाता है. हिंसा का मिलाव इसकी एखलाक़ी और तामीरी ताक़त को नष्ट करके इसमें उलटे नाश और बरबादी के बीज पैदा कर देता है.

ज़ाहिर है कि बापू के तामीरी प्रोग्राम का मतलब यह था कि वह मुल्क को जगाकर उसमें ऐसा सदाचार और ऐसा संगठन पैदा कर दे कि जिससे इसके रहने वालों में सत्याग्रह का हथियार काम में लाने की ताक़त पैदा हो सके. बापू की इस बात को मुल्क और कांग्रेस न समझ सके. बापू को इसी बात पर ख़िलाफ़त और स्वाराज के ज़ोरदार आन्दोलनों को सब बड़े बड़े कांग्रेसी लीडरों की इच्छा के खिलाफ़ अहमदाबाद में दुबारा रोकना पड़ा. चौरी चौरा की हिन्सा के इलाज की सूरत में बापू ने वह तामीरी प्रोग्राम मुल्क के सामने रखा जो बारदोली प्रोग्राम के नाम से मशहूर हुआ और जिसे मरते दम तक बापू अपना बुनियादी और असली तामीरी प्रोग्राम कहते थे.

उनके इस प्रोग्राम को अगर हम ध्यान से देखें, तो हमें उनके इस आख़िरी विधान के समझने में बहुत मदद मिल सकती है. यह प्रोग्राम हमारी सोई हुई सदाचार की ताक़तों को फिर से जगाने के लिये वैसा ही था जैसा लक़वे के मारे हुए हाथ पैरों के लिये दवा की मालिश. यह मुल्क में आत्मबल पैदा करने का एक ज़बर-दस्त और सबसे अच्छा तरीक़ा था. बापू ने इसमें वही ढंग बरता

है जो किसी एक आदमी के सदाचार को ठीक और ऊँचा करने के लिये बरता जाता है. यानी अपनी कुछ नैतिक कमजोरियों को जो सबसे ज्यादा दिखाई देने वाली और बुनियादी हों उन्हें सामने रख कर उनके दूर करने पर अपनी सारी शक्ति लगा देना. अपने बारदोली प्रोग्राम के बनाने में बापू ने देश की ज़िन्दगी के एक एक पहलू से एक एक चीज चुन ली है. आर्थिक से चरखा, मजहबी से हरिजन उद्धार, राष्ट्री से हिन्दू, मुस्लिम एकता, एखलाक़ी से शराबबन्दी और दिमाग़ी सुधार के लिये तालीम. जिस तरह धर्म के चार चरण कहे जाते हैं उसी तरह यह पाँच बातें क़ौमी ज़िन्दगी के पाँच तामीरी पहलू हैं.

बापू का खयाल था कि अगर मुल्क इनमें से एक पर भी अपनी सारी शक्ति लगा कर उसे पूरा कर लेगा तो इसमें इतनी जागृति, संगठन और आत्मबल पैदा हो जायगा कि फिर इसके सत्याग्रह यानी इच्छा शक्ति का कोई हुकूमत मुक़ाबला नहीं कर सकेगी. पर जैसा हमने कहा कांग्रेस बापू की तहरीकों के इस पहलू को न समझ सकी. न तो उसको बापू के सत्य और अहिंसा में विश्वास था और न वह किसी नैतिक जीवन की जरूरत महसूस करती थी. इसलिये उसने बापू के सत्याग्रह के केवल राजकाजी पहलुओं से मदद ली और उसके एखलाक़ी पहलुओं को बेदर्दी से टालती रही. कांग्रेस की आजकल की गिरी हुई नैतिक हालत इसी ग़लती का नतीजा है जिसे दुनिया देखकर हैरान है. इसी का यह भी नतीजा है कि मुल्क के दो टुकड़े हो गये और हमने बापू को भी हाथ से खो दिया.

यह ख़तरे शुरू से ही बापू के सामने थे. कांग्रेस और मुल्क को अपने रचनात्मक प्रोग्रामों की तरफ़ से बेपरवाह देख कर उनके दिल को दुख होता था. एक बार उन्होंने अपने इस दुख को इन शब्दों में ज़ाहिर किया था.

"मैं हज़ारवीं बार दोहरा रहा हूँ कि अगर हम रचनात्मक प्रोग्राम को एक अच्छे पैमाने पर पूरा न कर सकेंगे तो हमें स्वराज नहीं मिल सकता. अगर मिल भी जाय तो हम उसे रख नहीं सकेंगे. अगर रख भी सकेंगे तो उसका वह रूप न होगा जिसका हम सपना देख रहे हैं."

बापू की इस तड़प का कोई असर मुल्क पर न पड़ा. मुश्किल यह थी कि सत्य और अहिंसा का जो रूप और उससे जो आशाएँ वह मुल्क के सामने रख रहे थे, उन पर मुल्क को किसी तरह भरोसा न होता था. पच्छिमी सभ्यता देश के सब लोगों पर गहरा असर डाले हुए थी. यह असर लोगों की तबीयतों को एख़लाक़ी और रूहानी बातों की तरफ़ जाने ही न देता था. इधर बापू के लिये सत्य और अहिंसा की शक्ति ऐसी साफ़ थी कि जैसी हमारे हाथ पाँव की शक्ति. वह इसके हर पहलू और इसकी पूरी ताक़त को जानते थे. यही कारन था कि वह बेचैन थे कि मानव जाति इससे जल्दी से जल्दी पूरा फ़ायदा उठा सके. इसीलिये बापू सत्याग्रह और तमीरी प्रोग्राम दोनों पर एक सा ध्यान और एक सा ज़ोर देते थे और उन्होंने काँग्रेस या मुल्क की लापरवाही की ज़रा भी परवाह न की. हम दिखा चुके हैं कि काँग्रेस बापू से कैसे बराबर दूर ही होती गई. इसी के साथ बापू की सारी रचनात्मक कोशिशें कमज़ोर

होती गईं क्योंकि यह कोशिशें भी अंगरेज़ी राज से लड़ाई के दिनों में काँग्रेस के ही काम पर शुरू की गई थीं. बापू की कठिनाई यह थी कि वह न तो काँग्रेस को पूरी पूरी मदद देने से रुक सकते थे क्योंकि इससे काँग्रेस अँग्रेज़ी राज के मुक़ाबले में कमज़ोर पड़ जाती, न उसके सुधार के लिये कोई सख़्त क़दम उठा सकते थे क्योंकि इसमें दोरुख़ी लड़ाई शुरू हो जाती और मुल्क की ताक़त और ध्यान दोनों बँट जाते. रचनात्मक कामों को पूरी ताक़त के साथ चलाने के लिये उनमें सत्याग्रह के पहलू का होना ज़रूरी था. क्योंकि बापू के यह दोनों प्रोग्राम एक जान और दो क़ालिब और एकही ढाल के दो पहलू थे. नतीजा यह हुआ कि बापू के सारे रचनात्मक प्रोग्राम आहिस्ता आहिस्ता मुरझाने और बेजान होने लगे.

रचनात्मक काम करने वाले भी इस असर से न बच सके. यह लोग बापू की तहरीकों के जानकारों की सूरत में चारों तरफ़ फैले हुए थे. बापू आम तौर से इनको राजकाज की बुराइयों और खेंचा तानी से अलग रखने की कोशिश करते थे. पर समय समय पर इन्हें अपनी रिज़र्व सेना की तरह राजकाजी सत्याग्रहों में ले लिया करते थे. इसलिये एक तो इन्हें सत्याग्रह से कोई सीधा सम्बन्ध न रहता था. दूसरे अगर यह कांग्रेस के साथ सत्याग्रह में हिस्सा लेते थे तो इनके और कांग्रेस वालों के तरीक़ों में बहुत कम फ़र्क़ होता था. तीसरे जो बातें इनका सब से ज्यादा दिल तोड़ देती थीं वह यह थीं कि बापू कांग्रेस और उसके उन नेताओं का, जो रचनात्मक काम को फ़ज़ूल और बुढ़ियों का काम समझते थे, हमेशा साथ देते रहते थे. उनकी ताक़त को तरह तरह से

बढ़ाते रहते थे और जहाँ कहीं रचनात्मक काम करने वालों और इन कांग्रेसी नेताओं में कोई टक्कर हो जाती थी, बापू बहुत करके कांग्रेसी नेताओं की ही तरफ़ दारी करते थे. अँग्रेज़ी सरकार इनके रचनात्मक काम में सीधे बहुत कम दख़ल देती थी, इसलिये रचनात्मक काम के मैदान में वह हालत ही न पैदा होती थी जिसमें सत्याग्रह करने की ज़रूरत हो, और हुकूमत के हमलों के मुक़ाबले में उनमें संगठन और आत्मबल पैदा हो.

बेग़रज़ सेवा से आत्मबल पैदा होता है पर उसी हालत में जब सत्याग्रह और तामीर का प्रोग्राम दोनों हमारे सामने एक साथ हों. एक से हम तामीर यानी रचना करें और दूसरे से इस अपनी तामीर को उन शक्तियों से बचा कर रखें जो उसे बिगाड़ना चाहती हैं और नई ज़मीनें साफ़ करें और रास्तों की रुकावटों को हटाते रहें. यह सब बातें बराबर जारी रहना ज़रूरी हैं. आत्मबल अपने आप पैदा नहीं होता, इसे पैदा करने के लिये दिल की सफ़ाई और अपने ऊपर क़ाबू इन दोनों की ज़रूरत होती है. केवल चरखे कातना या कोई बात भी केवल रसम पूरी करने के लिये करना एक बेजान रिवाज या रूढ़ि की सूरत ले लेता है, जब तक इनके पीछे किसी ऊँचे मक़सद को पूरा करने का विचार न हो. अगर हम चरखे को पच्छिमी सभ्यता पर विजय पाने और अपने मुल्क को ग़ुलामी से आज़ाद कराने के मक़सद को दिल में लेकर कातते हैं और अपने आर्थिक जीवन से हर ऐसी रुकावट को दूर करने की कोशिश करते हैं, और इस कोशिश की कामयाबी के लिये अपना सब कुछ क़ुरबान करने के लिये तैयार

हैं तब हममें आत्मबल और संगठन शक्ति पैदा होगी. लेकिन अगर हम केवल चरखा संघ के मेम्बर के फ़र्ज़ की तरह या बापू की ख़ुशी के लिये या लोगों पर साबित करने के लिये कि हम गांधी वादी हैं, कातते हैं तो इससे आत्म बल पैदा होने की जगह हमारी एख़लाक़ी ताक़त और भी कमज़ोर और बरबाद हो जाती है. केवल रचनात्मक काम करने से उस काम के अच्छे से अच्छे नतीजों को विरोधियों से बचा कर रखने की ताक़त हममें पैदा नहीं हो सकती. यह ताक़त तब पैदा होती है जब रचनात्मक काम के साथ-साथ हम में यह ख़याल भी बना रहे कि हमें अपनी जान देकर भी उसे बचाकर रखना है यानी रचनात्मक काम के साथ-साथ सत्याग्रह की शक्ति अपने अन्दर पैदा करना भी ज़रूरी है.

बाहरी विरोधी शक्ति से कामयाबी के साथ टक्कर लेने की ताक़त हममें तभी पैदा हो सकती है जब उसके मिटाने का खयाल हर समय हमारे सामने रहता है. और इस ख़याल को हम नेकनीयती के साथ हर वक़्त अपनी ज़िन्दगी में अमली रूप देने की कोशिश करते रहते हैं. अगर यह पहलू हमारी रचनात्मक सेवा में नहीं है तो हम अपने आस पास कोई अच्छा इन्क़लाब पैदा नहीं कर सकते. हमारे रचनात्मक आन्दोलन यह सूरत न ले सके. अगर यह सूरत पैदा हो गई होती तो हमारी राष्ट्री ज़िन्दगी के हर पहलू में एक बड़ा इन्क़लाब पैदा हो गया होता.

कुछ समय से और ख़ास कर आख़िरी दिनों में बापू ज़ोरों से महसूस कर रहे थे कि उनके सारे रचनात्मक काम बे जान और फीके हो रहे हैं. उनमें वह नैतिक शक्ति बाक़ी नहीं रही जो उनकी

असली जान और रूह हैं. मिसाल के तौर पर खादी के आन्दोलन ने कोई इन्क़लाबी सूरत लेने के बजाय केवल घटिया दरजे के व्योपार और व्योपारी की शकल लेली थी. लोगों को अपनी तरफ़ खींचने के बजाय खादी से उन्हें और भी नफ़रत होती जाती थी. खादी की बड़ी-बड़ी संस्थाओं को लोग खुले बन्दों ईस्ट इण्डिया कम्पनी कहते थे. हरिजन सेवा की तहरीक हरिजनों को कुछ आसानियाँ और दिलवाने तक रह गई. उसने हिन्दू समाज और धर्म पर वह असर न डाला जिसकी बापू को उम्मीद थी. बापू कहा करते थे कि अगर हिन्दुओं ने हरिजन आन्दोलन के असली मतलब को समझ लिया और इसे अपनी जिन्दगी में सच्चे दिल से जगह दे दी तो हिन्दू समाज एक नया जन्म ले लेगा. वह कहते थे कि जब तक हिन्दू समाज के माथे से यह कलंक का टीका न मिटेगा तब तक हिन्दू समाज नफ़रत व खुद ग़रज़ी का सोता बना रहेगा और सच्चे हिन्दू मुस्लिम इत्तहाद की गहरी बुनियादें किसी सूरत में क़ायम न हो सकेंगी.

हिन्दू मुस्लिम एकता के आन्दोलन में भी बापू अपने दिल का मतलब लोगों को न समझा सके. इसमें उनका इतना क़सूर न था. मुल्क इतना ऊँचा उठ ही नहीं सकता था कि उनकी सलाहों और उनके आन्दोलनों से पूरा फ़ायदा उठा सके. पच्छिम के असर ने निकम्मा और अन्धा कर दिया था.

बापू शान्ति सेना के संगठन को हिन्दू मुस्लिम दंगों के ख़त्म कर देने का असली और आख़िरी इलाज मानते थे. पर इस प्रोग्राम

को अमली रूप देने के लिये वह अपने प्यारे से प्यारे शागिर्दों को भी राज़ी न कर सके. मुद्दतों पहले उन्होंने शान्ति सेना के ख़याल को "गांधी सेवा संघ" के सालाना जलसे (राम गढ़) में रखा था. पर गांधी सेवा संघ के मेम्बरों ने इसे अमली बात न समझ कर उस पर काम करने से इन्कार कर दिया था. हो सकता है कि और बातों के साथ-साथ इस बात ने भी गांधी सेवा संघ के क़रीब-क़रीब तोड़ दिये जाने में बड़ा हिस्सा लिया हो. आख़िरी दिनों में जब हिन्दू मुस्लिम दंगे इतनी बुरी सूरतें ले रहे थे, बापू ने शान्ति सेना का चरचा फिर से शुरू किया था. उस ज़माने में उनके एक चेले ने उन्हें लिखा कि "बापू ! हिन्दू मुस्लिम दंगों में निहत्थे घुस कर जान देने की सलाह आप हमें मुद्दतों से दे रहे हैं. पर आज तक आप ने यह हमें खुद करके नहीं दिखाया. गो कि आप अपनी सलाहों पर सब से पहले ख़ुद अमल करते हैं." बापू ने इसका जवाब दिया था कि "मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे इसका मौक़ा और तौफ़ीक़ (सौभाग्य) दे."

इसी तरह गाँव की दस्तकारियों को फिर से जिलाने के आन्दोलन ने भी कभी कोई अमली सूरत ही न ली क्योंकि रचनात्मक काम करने वालों में से जो जिस काम में लगा हुआ था वह उसी को अपना हद और इति श्री समझता था. उसकी किसी दूसरी तरफ़ निगाह ही न जाती थी.

खादी के काम में बापू के सबसे ज्यादा काम करने वाले लगे हुए थे. बापू ने इनको खादी के व्यापारी रूप को तोड़ देने की सलाह दी और यह कहा कि खादी की पैदावार को बढ़ाने की चिन्त

न कर के इसे सिर्फ़ स्वावलम्बन तक महदूद कर दें, यानी हर गाँव अपनी जरूरत का कपड़ा ख़ुद बना ले. इन काम करने वालों ने बापू की इस सलाह को अमली नहीं समझा और अपने-अपने कामों से इस्तीफ़ा देने के लिये तैयार हो गये. बापू ने उनसे कहा कि तुम अपना काम करो मैं अपने लिये दूसरे काम करने वाले ढूँढ लूँगा.

यह सारे पहलू बापू के सामने थे. जहाँ मुल्क की मिटाने वाली ताक़तें दिन दिन ज़ोर पकड़ती जाती थीं वहाँ तामीरी प्रोग्रामों की यह कमज़ोरियाँ बापू की सबमें बड़ी परेशानी थी. बापू बराबर अपनी कठिनाइयों पर क़ाबू पाने के ख़याल में डूबे रहते थे. अपने पुराने नक़शों में अदल बदल करते थे और फिर उन्हें तजरबे की कसौटी पर कसते रहते थे. हर तरह कोशिश करके वह किसी आख़िरी नतीजे पर पहुँचना चाहते थे. काँग्रेस बिलकुल उनके असर से बाहर हो गई थी. इससे उनके सारे पुराने सम्बन्ध टूटते जा रहे थे और बापू के सामने यह सवाल था कि काँग्रेस के साथ नये सम्बन्ध किन बुनियादों पर क़ायम करें. मुद्दतों से उनका दिमाग़ और ध्यान किसी ऐसे प्रोग्राम की खोज में था जिसमें उनको इन सारी कठिनाइयों का कोई हल निकले और वह अपनी सारी शक्तियों को एक जगह करके और अपने सम्बन्ध को उनमें से हर गिरोह के साथ और साफ़ करके अपने मक़सद को पूरा करने की एक ज़बरदस्त और आख़िरी कोशिश करें.

अन्त को बापू की इन सब कोशिशों का नतीजा दिखाई दिया. बापू के सामने एक नये मिले जुले आन्दोलन का ढाँचा आ गया. जिसका बुनियादी असूल यह था कि देश के सारे रचनात्मक

संगठनों और आन्दोलनों को तोड़ कर एक अकेला संगठन क़ायम हो, गाँव की ज़िन्दगी के हर पहलू को अलग अलग न लेकर गाँव की पूरी ज़िन्दगी में एक सदाचारी, माली और समाजी इन्क़लाब पैदा करने की कोशिश की जाय.

इस नई तहरीक का ढाँचा मुद्दतों से बापू के सामने बन चुका था और इस ढाँचे की चरचा वह अक्सर समग्र ग्राम सेवा के रूप में किया करते थे. इसके बाद उनके सामने केवल यह सवाल बाक़ी रह गया था कि वह इस नये आन्दोलन को देश के सामने किस रूप में रक्खें. पर मुल्क की हालत उन्हें दम भर भी मुहलत नहीं लेने देती थी. फिर भी बापू ने यह विधान तैयार कर ही लिया, इसका मसविदा बनाने और आल इण्डिया काँग्रेस कमेटी के सिक्रेटरी को देने के कुछ दिन पहले उन्होंने वर्धा में एक रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं की कान्फ्रेंस बुलाने का इन्तज़ाम किया था. इस विधान से साफ़ ज़ाहिर है कि काँग्रेस इसे मन्ज़ूर करती या न करती, इसके चलाने और कामयाब बनाने की ज़िम्मेदारी इसी कानफ्रेन्स के कार्यकर्त्ताओं को उठानी पड़ती. क्योंकि मामूली राज काज में डूबे हुए काँग्रेस वालों के लिये कोई जगह इसकी कमेटियों में नहीं रखी गई थी. पर बापू के मर जाने ने यह सारा क़िस्सा ही ख़त्म कर दिया. उनके मरने के बाद काँग्रेस के लिये इस विधान की तरफ़ कोई ध्यान देना बिलकुल नामुमकिन था. रचनात्मक काम करने वालों के लिये अपनी मौजूदा शक्ल में यह विधान केवल आल इण्डिया काँग्रेस कमेटी के लिये एक सुझाव था जिससे उनका कोई सम्बन्ध नहीं था. बापू के मरने के

बाद वर्धा में रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं की कानफ्रेन्स हुई. हो सकता था कि उसके सामने यह सवाल आता. पर उस कान्फ्रेन्स की बागडोर काँग्रेस और हुकूमत के बड़े बड़े लोगों के हाथों में रही. इसलिये उस कान्फ्रेन्स का इधर ध्यान जाने की कोई सूरत ही नहीं रही.

समग्र ग्राम सेवा और स्वावलम्बन

हमने ऊपर यह दिखाने की कोशिश की है कि बापू के सत्याग्रह और रचनात्मक प्रोग्राम का असली रूप क्या है और इनमें क्या सम्बन्ध है और बापू ने अपना यह आखिरी विधान क्यों बनाया. इस विधान में इन दोनों का विचार क्यों और किस तरह रखा गया है. हमारी सुधार की कोशिशें अगर सत्य और अहिंसा पर क़ायम हैं तो उसमें यह दोनों पहलू यानी रचनात्मक काम और सत्याग्रह अलग-अलग किये ही नहीं जा सकते. हमने यह भी कहा है कि बापू ने बहुत दिन सोचने के बाद अपने नये आन्दोलन को समग्र सेवा का रूप दिया था. अपने और आन्दोलनों की तरह इस आन्दोलन को चलाने के लिये भी बापू ने गाँव ही को केन्द्र या मरकज़ बनाया.

यहाँ आगे बढ़ने से पहले हम दो शब्दों को साफ़ करदेना चाहते हैं जो आज कल के राज-काज और विधानों में बहुत बरते जा रहे हैं एक सेन्टरेलाइज़ेशन जिसे केन्द्रीकरण या मरकज़ीयत कहते हैं. दूसरा डीसेन्टरेलाइज़ेशन जिसे विकेन्द्रीकरण या ग़ैर मरकज़ीयत कहते हैं. पहले का मतलब यह है कि किसी देश या राज में राज की सारी शक्तियों और अधिकारों को जहाँ तक हो सके एक सेन्टर, केन्द्र या मरकज़ में जमा कर दिया जावे जिसमें देश की मरकज़ी

सरकार खूब बलवान हो. दूसरे का मतलब यह है कि राज की ताक़त और अधिकारों को दूर दूर तक अलग अलग इलाक़ों में बाँट दिया जावे, जिसमें हर इलाक़े वालों को अपने यहाँ के सब कामों में ज़्यादा से ज़्यादा आज़ादी हो.

बापू का यह अटल विश्वास था कि जमहूरियत यानी लोकराज में मरकज़ीयत की कोई जगह नहीं हो सकती. मरकज़ीयत देश की दौलत, ताक़त और वसीलों को थोड़े से आदमियों के हाथों में जमा कर देती है. लोकराज का मतलब यह है कि यह सब चीजें अधिक से अधिक के ही नहीं बल्कि जहाँ तक हो सके सब आदमियों के हाथों में बराबर-बराबर पहुँच सकें. इतिहास के शुरू से आज तक आदमी की सारी समाजी और राजकाजी जिन्दगी का झुकाव मरकज़ीयत से जमहूरियत यानी ग़ैरमरकज़ीयत की तरफ़ रहा है. तानाशाही (आटोक्रेसी), मुल्लाशाही (थीओक्रेसी), रईसशाही (एरिसटोक्रेसी), धनवानशाही (प्लटोक्रेसी), नौकरशाही (बूरोक्रेसी), समाजवाद (सोशलिज़्म) और साम्यवाद (कम्यूनिज़्म) रहते हुए दौलत और ताक़त के हिस्सेदारों की गिनती बराबर बढ़ती रहती है.

सच यह है कि यह सारा झुकाव इन्सानी बराबरी यानी सच्चे भाई चारे की तरफ़ तेज़ी के साथ जा रहा है. लोकराज और इन्सानी भाईचारा दोनों एक ही सच्चाई के दो नाम हैं. लोकराज का मक़सद दुनिया की दौलत, ताक़त और वसीलों को सब इन्सानों में बराबर-बराबर बाँट देना है. हज़ारों साल का तजरबा हमें

यह बताता है कि अगर दौलत, ताक़त और वसीले किसी खास गिरोह के हाथ में जमा हो जाते हैं तो वह गिरोह उन्हें इन्साफ़ के साथ और निस्वार्थ होकर सब हक़दारों तक कभी नहीं पहुँचा सकता. फिर यह हक़दार अपना संगठन करके अपना हक़ उस मरकज़ी ताक़त से छीन लेने के लिये हद दरजे की कोशिश करते हैं. यही उन सब ख़ूँख़ार राजकाजी इन्क़लाबों और तूफ़ानों का कारन है जिनसे इन्सानी दुनिया कपकपा रही है और यह तूफ़ान किसी तरह ख़त्म नहीं हो सकते जब तक यह बँटवारा इन्साफ़ और इन्सानियत की बुनियादों पर पूरा नहीं हो जाता.

इसे पूरा करने की दो ही सूरतें हैं. एक तो यह है कि वह गिरोह जो दौलत, ताक़त और वसीले अपने हाथ में लिये है अपने अन्दर इतना ऊँचा सदाचार पैदा करले कि वह जनता का निस्वार्थ और विनीत सेवक बन जावे और अपने लिये किसी तरह का कोई निजी फ़ायदा न रखकर, और न अपने जरिये किसी दूसरे को नाजायज़ फ़ायदा पहुँचा कर सारी ताक़त और वसीलों को हक़दार जनता में बराबर-बराबर इन्साफ़ के साथ बांट दे. पर हमने देख लिया कि कांग्रेस जैसी त्यागी जमात भी जिसने ३० साल तक ऊँचे से ऊँचे सदाचार की तालीम पाई थी, हुकूमत और ताक़त मिलने के बाद इस ऊँचे आदर्श को न निभा सकी. इससे हमें यह आख़िरी सबक़ मिलता है कि यह रास्ता कठिन और लगभग नामुमकिन है और दुनिया की यह मुसीबत मरकज़ीयत के रहते हुए किसी तरह दूर नहीं हो सकती.

दूसरा रास्ता यह है कि विकेन्द्रीकरण यानी ग़ैरमरकज़ीयत इस तरह आख़िरी दरजे तक पहुँचा दी जाय कि मरकज़ी हुकूमत के हाथों में कम से कम ताक़त, कम से कम दौलत और कम से कम वसीले रह जावें. इसके साथ-साथ जनता में इतनी जागृति, इतना संगठन, इतना सदाचार और इतना आत्म-बल पैदा हो जावे कि वह हुकूमत को पूरी तरह सदाचार के असूलों पर चलने के लिये मजबूर कर सके. इसके लिये जनता का अहिंसा और सत्य के रास्ते पर चलना ज़रूरी है क्योंकि हिंसा का रास्ता न्याय और इन्सानियत की हदों के अन्दर नहीं रह सकता.

जनता के अन्दर यह ऊँचा सदाचार एक ही हालत में पैदा हो सकता है. वह यह है कि हम जनता के दिलों में लोकराज का सच्चा मतलब जमा दें. हम जनता में यह पक्का विश्वास और भाव पैदा कर दें कि दुनिया की दौलत, ताक़त और वसीलों में सब आदमियों का बराबर का हिस्सा हो, और इन चीज़ों का इन्साफ़ के साथ बँटवारा किसी सूरत में भी अपनी ज़रूरतों को बढ़ाने और अपने पड़ोसियों से बढ़कर आरामतलबी की तरफ़ जाने से पूरा नहीं हो सकता. यह बँटवारा हमारा सब का धरम है. यह हमारे दीन का एक हिस्सा है. इस धर्म को पूरा करने में हमें हर इन्सान को अपना सगा भाई केवल शब्दों में नहीं बल्कि अमल में भी मानना पड़ेगा. दूसरा ख़ास पहलू यह है कि इस समय दुनिया में दौलत और वसीले यानी धनधान्य कम हैं और ज़रूरत मन्दों की गिनती हज़ारों गुना ज़्यादा है. इसलिये हमें केवल न्याय का ही नहीं बल्कि न्याय से बढ़कर त्याग का भी रास्ता पकड़ना

चाहिये. अपने सगे भाई के भूका या नंगा रहते हुए अगर हम कोई ऐसी चीज़ अपने क़ब्ज़े में रखते हैं जो हमारी ज़िन्दगी के लिये उतनी जरूरी नहीं है तो यह न इन्सानियत है और न इन्साफ़ और न न्याय. यह अन्याय है और ज़ुल्म. इसलिये हमें अपनी ज़रूरतों को कम से कम कर लेना चाहिये. अगर हम ऐसा नहीं करते और अपने पास दूसरों से ज़्यादा सामान रखेंगे तो हमारे उस सामान को देख-देख कर दूसरों के दिल में धीरे-धीरे हमसे ग़ुस्सा और नफ़रत पैदा होना क़ुदरती है. फिर यह डर है कि वह हमें नुक़सान पहुँचाने और मिटाने के जायज़ और नाजायज़ तरीक़े ढूँढ निकालें और उन्हें काम में लावें. उनकी गिनती बहुत अधिक और हमारी बहुत कम है इसलिये अन्त में हमें भी घाटे में रहना पड़ेगा. पुरानी दुनिया में यह बातें इस वास्ते चल सकीं कि उस ज़माने में इन्सानी भाईचारे और लोकराज का इतना ज़ोर शोर न था. इन आदर्शों का जो कुछ असर था वह सदाचारी और ख़यालों दुनिया तक ही था, राजकाजी और आर्थिक या माली जीवन में इन आदर्शों पर अमल करने कराने का ख़याल नहीं के बराबर था. अब दुनिया बदल गई है. अब लोग इन आदर्शों पर दूसरों से ज़बरदस्ती अमल कराना अपना हक़ समझने लगे हैं. इसलिये ज़माने की हवा को देख कर हमें भी बदलना चाहिये. जो देश, राष्ट्र या गिरोह अपने आस-पास के हालात के बदलने के साथ-साथ अपने को बदलने की योग्यता अपने में से खो बैठते हैं वह दुनिया की गहरी से गहरी मुसीबतों में पड़कर आख़िर मटियामेट हो जाते हैं.

इस लोकराज के दौर में, जो हम सबको सगे भाइयों के नाते

में बाँधना चाहता है, शासक और शासित, हाकिम और महकूम, मालिक और नौकर, ब्राह्मन और शूद्र, ऊँच और नीच, अमीर और ग़रीब, जमींदार और रियाया, मिल मालिक और मजदूर, इस तरह के कोई भेद भाव क़ायम नहीं रह सकते. यह सब भेदभाव हमारे समाजी जीवन में ताक़त और दौलत की मरकजी सूरतें हैं. इनका मिटा देना दूसरों के भले के लिये ही नहीं दुनिया की शान्ति के लिये और हमारी अपनी सलामती के लिये भी जरूरी है. इसलिये ऊँचा सदाचार ही वह रास्ता है जिससे हर एक को दुनिया की अच्छी चीजों में बराबर का हिस्सा पहुँच सकता है. हम जरा गहरी निगाह से देखें तो हमें अच्छी तरह दिखाई दे जायगा कि इस मामले में परोपकार और स्वार्थ दोनों एक ही सिक्के के दो रुख हैं. हमें इस सिद्धान्त को कि हर आदमी से उसकी शक्ति के अनुसार काम लेना चाहिये और उसे उसकी जरूरतों के अनुसार दुनिया की चीजें देनी चाहियें, इन्सानी जिन्दगी का सुनहरा असूल और सब से बड़ा धर्म समझना चाहिये. और इसे अमली रूप देने के लिये मरकजीयत के रास्ते को छोड़ कर ज्यादा से ज्यादा ग़ैर मरकजीयत का रास्ता पकड़ना चाहिये और दुनिया की नई रचना और नई तामीर की बुनियादें ऊपर से नहीं बल्कि नीची से नीची सतहों से उठानी चाहिये.

बापू की हर सुधार योजना को समझाने के लिये हमें ऊपर के बुनियादी असूलों को सामने रखना चाहिये. अगर बापू कभी नेशनेलाइजेशन की तरफ़दारी करते थे या यह सलाह देते थे

कि धनवानों, राजाओं और सरकारों को अपने को जनता का ट्रस्टी मानना चाहिये तो इसका यह कारण नहीं था कि वह मरकज़ीयत के ख़िलाफ़ नहीं थे, बल्कि वह समझते थे कि जब तक मरकज़ीयत किसी रूप में भी मौजूद है तब तक उससे जो नुक़सान हो रहा है और होने का डर है उससे बचने के यही सब से अच्छे तरीक़े हैं. जहाँ तक नये समाज और नई दुनिया की रचना का सवाल है वहाँ तक बापू के सामने हमेशा हद दरजे की ग़ैरमरकज़ीयत रहती थी. यही कारन था कि उन्होंने अपने सब आन्दोलनों में और अपनी सब योजनाओं में गाँव को ही मरकज़ रखा और गाँव में भी हर आदमी के अपने सुधार पर सबसे ज्यादा ज़ोर दिया.

बापू पच्छिमी सभ्यता को और पार्लीमेंटी राज को मरकज़ीयत का सबसे बड़ा बुत मानते थे. उन्हें डर था कि इनसे सारे देश में और हमारे जीवन के सब पहलुओं में मरकज़ीयत का ज़हर फैल जायगा. वह देखते थे कि हिन्दुस्तान के शहरों पर इनकी ग़ुलामी का सिक्का जम चुका है, पर गाँव अभी एक दरजे तक बचे हुए हैं इसलिये वह गाँव-गाँव में ऐसा सदाचारी, माली और रूहानी संगठन पैदा कर देना चाहते थे जो उन्हें पच्छिमी सभ्यता की ग़ुलामी से बचा सके. उन्हें यह भी डर था कि जब तक हमारे गाँव का संगठन ठीक न हो जायगा तब तक राज की मरकज़ी शक्ति इन्हें अपने मतलब के लिये काम में लाती रहेगी और देश में हिंसा भरे इन्क़लाबों का सिलसिला बराबर जारी रहेगा. इसीलिये बापू गाँव की ज़िन्दगी को हर मरकज़ी असर से आज़ाद कर देना चाहते थे.

बापू के सामने गाँव के ग़ैर मरकज़ी राज काजी जीवन का

ढाँचा क्या था इसका हम कुछ अनुमान उन पुरानी पंचायतों से कर सकते हैं जो अँग्रेज़ी राज के हज़ारों साल पहले से इस देश में क़ायम थीं. भारत की सभ्यता ने अपनी रूहानी ऊँचाइयों और माली चकाचौंध के साथ-साथ अपने राजकाजी जीवन को भी ऐसे अजीब साँचों में ढाला था जिसकी मिसाल दुनिया के किसी भी दूसरे देश में मिलना कठिन है. उसने देश के मरकज़ी राज को राष्ट्र के सच्चे माली, रोज़गारी, सदाचारी और राजकाजी जीवन से बिलकुल ऊँचा और अलग कर दिया था, उसने अपनी मरकज़ी हुकूमतों की सारी शान शौकत और आडम्बर को बनाये रखते हुए भी गाँवों की ज़िन्दगी में लोक राज क़ायम कर रखा था.

बापू की किताब "हिन्द-स्वाराज" से पता चलता है कि वह हिन्दुस्तानी सभ्यता के इस पहलू के पूरे जानकार थे और उनके दिल पर इसका बड़ा गहरा असर था. इसीलिये उन्होंने जितनी सुधार की योजनायें देश के सामने रखीं उन सब पर इन पुरानी गांव पंचायतों यानी आज़ाद लोकशाहियों (रिपब्लिक्स) का गहरा रंग था पर अपने इस झुकाव को बापू शायद कभी पहले इतना साफ़ साफ़ ज़ाहिर नहीं कर पाए थे जितना समग्र ग्राम सेवा और स्वावलम्बन की योजनाओं में उन्होंने दिखाया है. समग्र ग्राम सेवा का मतलब है गांव वालों की आर्थिक, नैतिक और सब तरह की एक साथ सेवा और उन्नति. स्वावलम्बन का मतलब है हर गांव वालों का हर बात में अपने पैरों पर आप खड़े होना, यानी, किसी बात में भी किसी बाहर वाले का मोहताज न होना. अपने देश के

इतिहास के उस पहलू को जो इस बात से सम्बन्ध रखता है हम नीचे देते हैं.

इतिहास के सब पढ़ने वाले जानते हैं कि हज़ारों साल तक हिन्दुस्तान के हर गांव में पंचायती राज क़ायम था. इसका रूप यह था कि गांव के लोग अपने में से किसी ऐसे एक आदमी को जो अपनी नेकी, सच्चाई, ईमानदारी और दूसरों की बेलाग सेवा के लिये गांव में मशहूर हो, उसकी ख़ुशामद करके उसे पंच बनने पर राज़ी कर लेते थे. इसी तरह दूसरे चार पंच चुने जाते थे. इन पाँच-पाँच पंचों की यह पंचायतें गाँव की तालीम, अदालत, सफ़ाई, तन्दुरुस्ती और रक्षा के सब काम करती थीं. इन सब कामों को करने के लिये बहुत पुराने ज़माने से इन्हें ज़मीनों की माफ़ियाँ और आसामियाँ मिली हुई थीं, जिन्हें गांव के ख़ुशहाल आदमी बराबर बढ़ाते रहते थे. अदालत की हैसियत से इन्हें अपने दायरे के अन्दर दीवानी और फ़ौजदारी के पूरे अधिकार होते थे. इन पंचायतों की सब से बड़ी सुन्दरता यह थी कि यह अपने सारे काम में किसी राजकाजी या दूसरी शक्ति के अधीन न थीं. उन्हें पूरी आज़ादी हासिल थी और उन में इतनी शक्ति और उन के पास इतने वसीले होते थे कि वह अपने इलाक़े को सब ज़रूरतों को पूरा कर सकें. इसी लिये बापू के स्वावलम्बन की इन्हें जीती जागती तस्वीर कहा जा सकता है.

इन पंचायतों के काम में कोई राजा या बादशाह कभी दख़ल न देता था. इस का कारन यह था कि हिन्दुस्तान की सभ्यता ने राजा के सब अधिकारों को केवल राजकाज तक ही महदूद कर दिया

था. एख़लाक़ी मामलों में मज़हबी मामलों में, समाजी, रोज़गारी और तिजारती मामलों में राजा न कोई दख़ल दे सकता था और न इन की रोक थाम के लिये कोई क़ानून बना सकता था. इन सारी बातों का प्रबन्ध और इन के उसूलों और नियमों में अदल बदल करने का काम मज़हबी और एख़लाक़ी संस्थाओं के सुपुर्द था जो ख़ास सिद्धान्तों और आदर्शों के अन्दर रहते हुए इन में सुधार या बदलाव करती रहती थीं. राजा का केवल इतना काम होता था कि इन कामों के ठीक-ठीक और बेरोक चलने में मदद दे और इन संस्थाओं के बनाये हुए नियमों और उन की आज्ञाओं का आदर और मान रखे. इसलिये इन पंचायतों के काम काज में किसी राजा के दख़ल देने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता था.

आज से दो तीन सौ साल पहले पच्छिमी सभ्यता के उभार का ज़माना आया. इस सभ्यता का राजकाजी अधिकार -निया में फैलने लगा. होते-होते उसके क़दम हिन्दुस्तान तक पहुँच गए. यह पच्छिमी सभ्यता अपने देशों की सदाचारी ...टीनी धर्मी शक्तियों को मिटा कर केवल अपनी तिजारती और राजकाजी प्यास को बुझाने के लिये दुनिया में फैली थी. इसके नेताओं को अपने इसी मतलब को पूरा करने के अलावा अपने अधीन देशों की सांस्कृतिक यानी कलचरी सूरतों और ज़रूरतों से कोई वास्ता न रहता था, न इनके रीत रिवाज और धर्म कर्म का इन विदेशियों के दिल में कोई आदर होता था. वारन ...स्टिंग्ज़ के ज़माने में जो हिन्दुस्तान का पहला अंगरेज़ गवरनर ...नरल था, इस देश की यह लाखों पंचायतें जान बूझ कर

एक क़लम तोड़ दी गई. वारन हेस्टिंग्ज़ ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के डायरेक्टरों के नाम अपने एक ख़त में इन पंचायतों के बारे में लिखा था—"इन्सानी तारीख़ के दौर के पहले से हिन्दुस्तान के हर गांव में पंचायती राज क़ायम थे. यह पंचायतें अपने सारे राज प्रबन्ध में इतनी आज़ाद और ख़ुदमुख़्तार थीं कि इस देश के किसी राजा या बादशाह ने कभी इतनी हिम्मत नहीं की कि इनके काम में किसी तरह का दख़ल दे. लोकमत कभी इस तरह के दख़ल देने को बरदाश्त ही नहीं कर सकता था.........मैंने टेढ़े या सीधे, जैसे भी बन पड़ा (बाई हुक और बाई कुक) इन पंचायतों की आज़ादी का ख़ातमा कर दिया ."

अंगरेज़ इतिहास लेखकों ने इन पंचायतों को (विल्लेज रिपब्लिक्स) कहा है और उनके प्रबन्ध की सुन्दरता की बहुत बहुत तारीफ़ें की हैं. इन इतिहास लेखकों की राय है कि हिन्दुस्तान की बेमिसाल ख़ुशहाली, दुनिया भर से बढ़ कर सुख शान्ति और अमन अमान, यहाँ का धर्म-प्रेम और इन्सानियत, बल्कि इस देश की सारी बढ़ी हुई कलचर इन्हीं पंचायतों की बुनियादों पर क़ायम थी. इन्हीं पंचायतों ने इस देश को अमर बना रखा था. इन इतिहास लेखकों की गवाही से बढ़ कर गवाही इन पंचायतों की बेलाग सेवा, इनके नैतिक बल और इनके सुन्दर प्रबन्ध की नहीं हो सकती, क्योंकि आमतौर पर यह इतिहास लेखक हिन्दुस्तान की किसी बात को भी सराहने के लिये तय्यार नहीं होते.

इन पंचायतों की इस तसवीर में हम यह देखते हैं कि यह पंचायतें लोक राज या लोकशाही का अच्छे से अच्छा रूप होते

हुए भी उन सारी बुराइयों से पाकसाफ़ थीं जो पार्लिमेण्टी राज अपने साथ दुनिया में लाया. इन पचायतों की राजकाजी ज़िन्दगी में वह सारी बातें मौजूद हैं जिन्हें हम 'डैमोक्रेसी' यानी लोकराज के साथ जोड़ते हैं. इसलिये यह पंचायती राज मरकज़ी हुकूमत के होते हुए भी देश के ९० फ़ीसदी रहने वालों को पूरी आज़ादी के साथ अपना जीवन बिताने का मौक़ा देता था. इन पंचायतों के जीवन में उस 'स्वराज' की कुछ छाया सी दिखाई देती है जिसका बापू सपना देखते थे. यह बात कि यह पंचायतें हज़ारों साल तक इस मुल्क में क़ायम रह चुकी हैं और अभी दो सौ बरस भी इन्हें मिटे हुए नहीं हुए साबित करती हैं कि इस देश के मिट्टी पानी में वह सारी चीज़ें मौजूद हैं, जिनसे इस तरह की संस्थायें पैदा हो सकती हैं, बढ़ सकती हैं और फूलफल सकती हैं. इसी से इन का फिर से ज़िन्दा होना भी कोई अनोखी या अनहोनी बात मालूम नहीं होती. हमारी पुरानी गांव की ज़िन्दगी में वह सारा ढांचा मौजूद है जो बापू अपनी समग्र ग्राम सेवा और स्वावलम्बन के आंदोलनों से हिन्दुस्तान के ७ लाख गांव में फिर से चमकाना चाहते थे.

कहा जा सकता है कि बीती दुनिया के सपने देखने से कोई फ़ायदा नहीं. इतिहास अपने पैर पीछे को नहीं हटाता और जो लोग इतिहास के पैर पीछे को हटाने की कोशिश करते हैं वह कभी कामयाब नहीं होते. पर हमें भरोसा है कि बापू के समग्र सेवा और स्वावलम्बन की योजनाओं को अच्छी तरह समझ लेने के बाद आदमी के दिल में इस तरह की शंका नहीं रह सकती.

बापू की यह योजनाएँ नए विचारों, नए भावों और नए ढंग के साधनों से भरी हुई हैं. यह दुनिया को आगे बढ़ाने और आदमी को आदमी बनाने की सबसे बड़ी ताक़त हैं. हो सकता है कि दुनिया अपनी लाचारी, बेबसी और कमज़ोरी की वजह से इनसे पूरा फ़ायदा न उठा सके पर अन्त को दुनिया को इन्हीं से मदद लेना होगी, क्योंकि इन्सानी तरक़्क़ी और मानव विकास की यही आगे की सीढ़ी है.

हम कह चुके हैं कि जो नक़्शा बापू ने अपने नए विधान में रखा है वह हमारे गांवों के जीवन को उसी साँचे में ढालना चाहता है जिसमें यह पुरानी पंचायतें ढली हुई थीं. इतना ही नहीं, वह इससे बहुत आगे जाना चाहता है. वह केवल पुरानी ख़ुशहाली, राजकाजी आज़ादी, और सदाचारी ऊँचाई को ही फिर से लाना नहीं चाहता, बल्कि वह उस रोग की भी जड़ें काट डालना चाहता है जिसके कारन यह सब चीजें बरबाद हुईं. इन पंचायतों में पर्लिमेण्टी राज की कोई बुराई नहीं. इनकी नुमाइन्दगी सच्ची नुमाइन्दगी है. इनके चुनाव के ढंग में न किसी का पैसा लुटता है और न किसी का चलन गिरता है. इनके राज काजी जीवन में मरकज़ी सरकार के दख़ल देने का कोई डर नहीं रह जाता. सच यह है कि इनमें सच्चे लोकराज के सब गुन मौजूद हैं. इनकी बरकत से देश की नब्बे फ़ीसदी जनता मरकज़ी सरकार के होते हुए भी पूरी आज़ादी के साथ अपना जीवन बिता सकती है. यह सब बातें किसी और योजना में मिलना कठिन है.

पर इन पंचायतों में यह सब अच्छाइयाँ होते हुए भी हम इनकी इस बुनियादी कमजोरी से आँख नहीं बचा सकते कि उस समय के एक मामूली से हाकिम ने इनकी हजारों साल की बेलाग सेवा के बाद दम के दम में मिट्टी के एक घरौंदे की तरह इन्हें खाक में मिला दिया. इस दुख भरी घटना से हमें बहुत बड़ा सबक़ मिलता है. हम देखते हैं कि इन पञ्चायतों के साथ साथ वह चरखा जो यहाँ की लाखों बहनों के गुज़ारे की जिम्मेवारी अपने ऊपर लिये था, गाँव की वह सारी दस्तकारियाँ जो यहाँ के करोड़ों सीधे सादे और मेहनती किसानों और कारीगरों का जीवन में साथ देती थीं, पञ्चायतों के साथ साथ अंग्रेजी राज की घातक नीति का शिकार हो गईं. यह घटना मानव जीवन के उस बुनियादी सवाल को हमारे सामने लाकर खड़ा कर देती है कि रूहानी और सदाचारी शक्तियाँ दुनियावी और माद्दी शक्तियों से टक्कर ले सकती हैं या नहीं, और अगर ले सकती हैं तो कैसे? क्या इन्सानी जिन्दगी के क़ायम रहने और उन्नति करने के लिये उसका दुनियावी, धोके, फ़रेब की और लामजहबी ताक़तों की छाया में ही पलना और बढ़ना जरूरी है?

बापू के लिये यह कोई नया सवाल नहीं था. उनका जीवन साबित करता है कि हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता ने बापू को इसी सवाल का अमली हल दुनिया के सामने रखने के लिये जन्म दिया था. इसी सवाल के हल के लिये बापू ने अपनी योजनाएँ और अपने नए हथियार दुनिया के सामने रखे हैं. अंग्रेजी राज की उन हैवानी शक्तियों से, जिन्होंने पुरानी पंचायतों और सारे देश को बेदर्दी के

साथ मिटाया, हमने बापू की रूहानी और सदाचारी शक्तियों को टकराते अपनी आँखों से देखा है. अपने देश वासियों पर और सारी दुनिया पर इन टक्करों का नतीजा भी हमें मालूम है. उसी सत्याग्रह की शक्ति को जिसने अंग्रेजी राज की ताक़त को हिला दिया था बापू हिन्दुस्तान के गांव गांव में पैदा कर देना चाहते हैं. बापू के समग्रसेवा और स्वावलम्बन इसी शक्ति को जगाने के तरीक़े हैं. इस समग्र सेवा का जो रूप बापू ने अपने नए विधान में दिया है उसे हम नीचे देते हैं—

"५—हर काम करने वाला गांवों का इस तरह संगठन करेगा कि हर गांव अपनी खेती और दस्तकारियों के ज़रिये अपने पैरों पर आप खड़ा हो सके और अपना सारा काम ख़ुद चला सके.

"६—वह गांव के लोगों को सफ़ाई रखना और तन्दुरुस्त रहना सिखाएगा और उनमें तन्दुरुस्ती के बिगड़ने और बीमारी पैदा होने की रोकने के लिये पहले से सब तरकीबें करेगा.

"७—वह हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की तय की हुई नीति के अनुसार, 'नई तालिम' के ढंग पर, जन्म से लेकर मौत तक गांव वालों की तालीम का प्रबन्ध करेगा."

"२—अपने दायरे के अन्दर गांव के हर आदमी के साथ वह ख़ुद मेल मिलाप रखेगा."

हमने समग्र सेवा की केवल माली, तालीमी, और तन्दुरुस्ती से सम्बन्ध रखने वाली दफ़ाओं को नक़ल किया है. इसके समाजी और राजकाजी पहलू की चरचा हम बाद में करेंगे.

ऊपर की पहली तीन दफ़ाओं में से हरेक का एक इतिहास है.

बरसों से यह बातें देश के सामने हैं. बापू के बड़े से बड़े आन्दोलनों के साथ इनका सम्बन्ध रहा है. इनमें से हरेक पर बहुत सी किताबें भी लिखी जा चुकी हैं. समय समय पर देश के बड़े से बड़े नेताओं ने इनके बारे में अपने विचार भी प्रकट किये हैं. इनमें से हरेक पर इतना साहित्य जमा हो गया है कि उसकी मदद से गांव के जीवन के सारे पहलुओं और गांव वालों में काम करने के बापू के नए तरीक़ों की पूरी पूरी जानकारी हासिल की जा सकती है. इसलिये हम यहाँ उन्हें अधिक बयान करना नहीं चाहते. हम उनके असूली पहलुओं की ही चरचा करेंगे.

ऊपर की दफ़ा ५ में बापू ने गांव की खेती और दस्तकारियों को अपने पैरों पर खड़ा करने की बात कही है. यह बापू का सारे देश के लिये आर्थिक प्रोग्राम है. इसको पूरी तरह समझने के लिये हमें यह याद रखना चाहिये कि बापू राष्ट्र के जीवन में सदाचार और राजकाज को एक दूसरे से अलग न देखते थे. वह जीवन के हर पहलू को और हर काम को सदाचार की कसौटी पर कसते थे और जीवन के हर पहलू की ऊँची से ऊँची चोटियों तक सदाचार के असूलों के रास्ते ही पहुँचना चाहते थे. उनकी यह भी राय थी कि जीवन के कुछ थोड़े से सीधे सादे असूल हमारी सब जरूरतों को पूरा करने और हमारे आपस के सम्बन्धों को ठीक ठीक तय करने के लिये काफ़ी हैं.

एक बार किसी इकोनोमिक सोसाइटी ने बापू को अपने यहाँ इकोनोमिक्स यानी मालियात (अर्थ शास्त्र) पर अपने विचार प्रगट करने की दावत दी. इसके लिये इस विद्या के आजकल

के कुछ जानकार बापू से मिलने गए. बातचीत में उन्होंने नए नए असूल और आजकल के अर्थ शास्त्र पंडितों के नए नए नाम बापू के सामने पेश किये. बापू चुप बैठे सब सुनते रहे. जब उन लोगों ने देखा कि यह कुछ जवाब ही नहीं दे रहे हैं तो उन्होंने यह सीधा सवाल बापू से किया कि आप इन अर्थ शास्त्र पंडितों और उनके अलग अलग असूलों में से किसे ठीक समझते हैं. बापू ने जवाब दिया कि 'भाई मैंने तो इन सब का कभी नाम भी नहीं सुना' वह लोग दंग रह गए. पूछा कि आखिर आप भी किसी किताब या लेखक को इस विद्या में प्रमाण मानते हैं. बापू ने कहा 'जरूर' उन्होंने कहा कि क्या हम वह किताब देख सकते हैं. बापू ने कहा 'जरूर', और अपना बस्ता खोल कर उसमें से बाइबिल निकाल कर उन के सामने रख दी.

सचमुच बापू का विचार था कि हज़रत मूसा के इस हुक्म या उन से भी थोड़े में गीता के पांच असूल जिन पर दुनिया के सब धर्म मज़हबों की मोहर लगी हुई है, जीवन के हर पहलू और आदमी के हर काम और उसकी हर बात को ठीक रखने के लिये काफ़ी हैं. दुनिया का हर आदमी इन्हें जानता है—झूट मत बोलो, चोरी न करो, किसी को मारो मत, ज़िना न करो, सब के साथ प्रेम और बराबरी का बरताव करो. यही वह थोड़े से बुनियादी असूल हैं जिन पर आदमी का सारा जीवन और दुनिया की सारी सभ्यतायें, सारी कलचर और संस्कृतियाँ क़ायम हैं. ज़रूरत केवल इस बात की है कि आदमी के अन्दर वह नैतिक शक्ति पैदा कर दी जाय कि जिन से उसका सुभाव ही ऐसा बन जाय कि वह इन ऊँचे

असूलों पर अमल करने को मजबूर हो. यह शक्ति आजकल की यूनिवर्स्टियां, कालिज या स्कूल पैदा नहीं कर सकते. कोई तालीम चाहे वह कितनी भी ऊँची से ऊँची क्यों न हो जब तक धर्म, और नेकी पर क़ायम न हो, आदमी में इस तरह का सुभाव और इस तरह के गुन पैदा नहीं कर सकती.

पच्छिमी सभ्यता ने सदाचार की एक बिलकुल नई कसौटी संसार के सामने रख दी है. उसने आदमी की ज़िन्दगी के आर्थिक पहलू को असली ज़िंदगी मान कर बाक़ी सब पहलुओं को उसपर क़ुरबान कर दिया है. टके को और अपने अपने स्वार्थ को उसने दुनिया का मज़हब बना लिया है. अधिकारों की मांग हर आदमी का दीन धर्म और ईमान हो गया है, और हर जायज़ या नाजायज़ तरीक़े से अपना मक़सद पूरा करना हर आदमी का नैतिक आदर्श हो गया है. पच्छिमी सभ्यता की इस भयंकर ग़लत कारी से सारी इन्सानी दुनिया की माली और रोज़गारी सतहों के नीचे क़यामत पैदा करने वाली आग की सुरंगें बिछ गई हैं. इन से हमारी सारी ज़िंदगी ही एक ज्वालामुखी पहाड़ बन गई है. बापू चाहते थे कि यह आग हमारी गांव की ज़िंदगी तक न पहुंच सके, क्यों कि अगर यहाँ के चालीस करोड़ आदमियों में यह आग भड़क उठी तो दुनिया के लिये इसे बुझाना बहुत कठिन हो जायगा. बापू मानते थे कि इस आग को बुझाने का केवल एक ही तरीक़ा है और वह यह है कि हम सब सादगी और स्वावलम्बन का रास्ता पकड़ें और सदाचार के बुनियादी असूलों से मदद लें. इस तरह ही हम पच्छिम की आग बरसाने वाली माली आँधियों से अपने को बचा सकते हैं.

हमने जान बूझ कर अपने समाजी जीवन को एक ऐसी लगातार खेंचातानी और जंग की शकल दे दी है जो सारी दुनिया को अपने असर में लिए हुये है और जिस में हर आदमी दूसरे का बैरी, हर एक अपना-अपना मोरचा संभाले हुए है और दूसरे की तरफ़ से उसे हर दम यह डर लगा हुआ है कि वह दूसरा इस के ख़िलाफ़ अपना मोरचा संभाले हुए है. दोनों एक दूसरे से कहते रहते हैं कि इन्साफ़ से काम लो. आपसी जंग से किसी का भला नहीं हो सकता. पर ऐसी हालत में सच्चा इन्साफ़ हो सकना बिलकुल अनहोनी बात है. इन्साफ़ प्रेम और इन्सानियत की हवा में ही पैदा हो सकता है और उसी में ही पनप सकता है. इन्साफ़ तभी हो सकता है जब हम दूसरे की भूक और उसके नंग का उतना ही ख़याल रखें जितना अपनी भूक और अपनी ज़रूरतों का. आजकल पच्छिम की सारी राजकाजी पार्टियाँ इस आदर्श को मानती हैं और इसी के आधार पर अपने क़ायदे क़ानून बनाती हैं. लोक राज यही चाहता है. पर एक तरफ़ यह सारे क़ायदे क़ानून हैं जो केवल काग़ज़ों पर लिखे रहते हैं और दूसरी तरफ़ हमारी दुनिया भर में फैली हुई माली खींचातानी और हमारी आए दिन की राज काजी जंगें हैं. इसका कारन यह है कि हम में से हर एक ने अपने आप को अपने स्वार्थ और अपनी इच्छाओं के क़िले में बन्द कर लिया है. दूसरों की इच्छाओं और उनकी ज़रूरतों से हम बिलकुल बेपरवाह हो गए हैं जैसे हमारा उनका कभी कोई सम्बन्ध ही नहीं रहा.

गीता कहती है कि यह रास्ता तुम्हें सुख शान्ति या सलामती की तरफ़ नहीं लेजा सकता.तुम सब भाई भाई हो.एक दूसरे के साथ इन्साफ़

ही नहीं बल्कि एक दूसरे के लिये त्याग का रास्ता पकड़ो. वह कहती है कि जो कोई केवल अपने लिये चूल्हा जलाता है वह चोर है. अगर हम इस एक असूल के सारे पहलुओं को दिल में जमालें तो हमें सारे आर्थिक जीवन के नए संगठन के लिये बुनियाद का पत्थर मिल जाता है. सच यह है कि दुनिया में जरूरत की चीजे कम हैं इस लिये हम किसी पैमाने पर भी दौलत और ताक़त में मरकजीयत पैदा करें तो वह हमारे लिये एक बहुत बड़ा खतरा बने बिना नहीं रह सकता. लोग हमारे इस खजाने को देखकर उसमें हिस्सा बँटाने के लिये बेचैन होंगे और हर उचित और अनुचित तरकीब से अपनी इच्छा को पूरी करने की कोशिश करेंगे. इसलिये अपने पास जरूरत से ज्यादा सामान रखना चोरी और बुराई है. इसी ने सब राष्ट्रों, गिरोहों और आदमियों को हथियारबंद डाकू बना दिया है. जब तक हम इस घातक रोग का पूरा इलाज नहीं करते हमें अपने दुखों से छुटकारा नहीं मिल सकता.

बापू ने साबरमती सत्याग्रह आश्रम के सब आश्रम वालों को एक बार जमा करके उनसे कहा कि, "हमें यहाँ इतने दिन हो चुके ;अब मेरी समझ में हम सब को अपरिग्रह का व्रत ले लेना चाहिये, जिसमें हम स्वावलम्बी हो जावें और दुनिया की किसी चीज के मोहताज न रहें." अपरिग्रह का मतलब है दुनिया की किसी भी छोटी बड़ी चीज़ को अपनी मिल्कियत न मानना. आश्रमवासी यह सुनकर सोचने लगे. बापू ने उन्हें एक दिन सोचने के लिये दिया. दूसरे दिन फिर सब जमा हुए. बापू के पूछने पर इनमें से एक भी अपरिग्रह का व्रत लेने को तैयार न हुआ. बापू ने

कहा—"मैं तुम पर जोर नहीं डालता, पर मैं आज से अपरिग्रह व्रत लेता हूँ." इसके कई बरस बाद बापू ने इंगलैंड के मान्चेस्टर शहर में वहाँ के मज़दूरों के सामने एक व्याख्यान दिया था जिसमें उन्होंने उनसे कहा था—"मैं अपरिग्रह का व्रत ले चुका हूँ फिर भी आप देखते हैं मैं यह चादर ओढ़े और लँगोटी पहने आपके सामने खड़ा हूँ, यह मेरी मजबूरी है. इतना ज़रूर है कि अगर आप में से किसी को मेरे यह कपड़े पसन्द आ जावें और वह इन्हें ले भागे तो मैं न उसकी रपट लिखाऊँगा और न उस पर दावा करूँगा." यही अपरिग्रह का पूरा रूप है.

सच यह है कि अपरिग्रह ग़ैर मरकज़ीयत की आख़िरी सीढ़ी है. बापू की सारी समग्र सेवा की यही जान है. यही आदर्श वह गांव, शहर, ज़िला और देश सब के सामने रखना चाहते थे. राष्ट्र की ज़िन्दगी में भी वह यही करना चाहते थे. कोई देश जब तक सही मानी में अपरिग्रही नहीं बनेगा और अपनी ज़रूरतों के लिये दूसरों का मोहताज रहेगा तब तक उसे सच्चे अर्थों में राजकाजी या माली आज़ादी मिल ही नहीं सकती.

बापू के अपरिग्रही होते हुए भी कम्युनिस्ट जैसी कुछ पार्टियाँ उन्हें पूँजीवाद का एजेंट कहती थीं. दुख है कि यह लोग उन्हें समझ ही न सके. कम्युनिज़म यानी साम्यवाद हिन्दू धर्म के इसी अपरिग्रह व्रत को समाजी पैमाने पर नेकनीयती के साथ अमली जामा पहनाने की कोशिश कर रहा है. पर दूसरी राजकाजी पार्टियों की तरह यह भी इस आदर्श तक जो हद दरजे का ग़ैर मरकज़ी आदर्श है, हद दरजे के मरकज़ी ढंग से पहुंचना चाहता है. उस उद्देश्य तक

पहुँचने के लिये कम्युनिस्ट सारे राष्ट्र या क़ौम की बल्कि सारी इन्सानी क़ौम की एक मरकज़ी हुकूमत क़ायम करना चाहते हैं. सारी दुनिया की दौलत और ताक़त को एक मरकज़ पर जमा कर देना हद दरजे का पूँजीवाद है. आगे चल कर इन लोगों का दावा है कि वह इस सारी दौलत और ताक़त को बराबर बराबर सब आदमियों में बाँट देंगे. बापू जब ज़मीदारों, राजाओं, अमीरों, और हुकूमतों से कहते हैं कि तुम अपनी दौलत के जनता की तरफ़ से ट्रस्टी बन जाओ तो कम्युनिस्ट उन पर हँसते हैं और कहते हैं कि यह बात इन्सानी सुभाव के ख़िलाफ़ है. पर ख़ुद इसी इन्सानी स्वभाव पर इतना बड़ा ट्रस्टियों का महल बनाने की कोशिश कर रहे हैं.

इसमें शक नहीं कि ताक़त और दौलत के बल पर इस तरह का महल बनाया जा सकता है. दुनिया इसी तरह का महल बनाने की तरफ़ तेज़ी से दौड़ी जा रही है. पर बन जाने के बाद भी यह महल बराबर टूटता और फिर से बनता रहेगा. इसमें मज़बूती और टिकाऊपन उसी पैमाने पर पैदा होगा जिस पैमाने पर वह हुकूमत अपरिग्रह के व्रत और स्वावलम्बन के असूल को जनता के जीवन का अमली और सच्चा हिस्सा बना सकेगी. बापू का यह नया विधान सैकड़ों बरस की ख़ूनी खेंचातानी और बरबादी से समाज को बचा ले जाने का सबसे सस्ता और सीधा रास्ता है. बापू का सन्देश यह है कि उस नई दुनिया की तामीर जिसकी जान लोकराज और इन्सानी भाईचारा है, ज़मीन से शुरू करो, इसकी बुनियादें एक एक गाँव के अन्दर एक एक आदमी के सदाचार को

ठीक करने और ऊँचे से ऊँचे ले जाने पर क़ायम करो. बापू का कहना है कि जब तक तुम इस महल को नीचे से मजबूत बुनियाद पर नहीं उठाओगे यह बराबर तुम पर गिर गिर कर तुम्हें कुचलता और बरबाद करता रहेगा.

बापू ने इस विधान की दफ़ा ७ में इस महल की गहरी से गहरी बुनियादें डालने की दाग़बेल रखी है. जिस तरह समग्र सेवा और स्वावलम्बन दुनिया की नई तामीर की सच्ची बुनियादें हैं उसी तरह बापू की 'नई तालीम' समग्र सेवा और स्वावलम्बन की बुनियाद है. जब तक हम समग्र सेवा के तरीक़े और प्रोग्राम और स्वालम्बन के असूल अपने बच्चों को उनकी घुट्टी के साथ नहीं पिलाते तब तक दुनिया की कोई भी नई तामीर नहीं हो सकती. दुनिया ने मां और बच्चे की सच्ची तालीम की तरफ़ अभी तक बहुत कम ध्यान दिया है और उसके ठीक ठीक महत्व को भी नहीं समझी है. उसी का नतीजा है कि आज दुनिया इतने अधिक वसीले, इतना अधिक सामान और इतने ऊँचे आदर्श रखते हुए भी इतनी दुखी और बरबाद है. एक तरफ़ तो दुनिया का आदर्श इस समय लोक-राज और इन्सानी भाईचारा है और दूसरी तरफ़ दुनिया भर के सब स्कूल और कालेजों में वह फ़ौजी तालीम दी जाती है जो एक दूसरे की मारकाट, लूटपाट और हर तरह की एख़लाक़ी बुराइयों की जड़ है. दुनिया भर के बच्चों को इसी मारकाट की और जीवन के हर पहलू में एक दूसरे के साथ बुरी से बुरी लागडाट और खेंचा-तानी की तालीम दी जाती है. जब तक यह सारी यूनिवर्सिटियाँ स्कूल और कालेज तोड़ कर ख़त्म नहीं किये जाते और इनकी जगह नई

तालीम और नई तरबियत का प्रबन्ध नहीं होता तब तक दुनिया अपना आजकल का रंग ढंग नहीं बदल सकती और न सच्चा लोकराज या भाई चारा क़ायम कर सकती है.

बापू ने तालीम की बुनियाद स्वावलम्बन पर रख कर उस अथाह धन, समय, और शक्ति को बरबादी से बचाने का प्रोग्राम दुनिया के सामने रखा है जिसे हमारे आजकल के स्कूल, कालेज, अस्पताल और राज के सारे मुहकमे इस बेदर्दी के साथ बरबाद कर रहे हैं. बच्चों को केवल दिमाग़ी तालीम देना और साहित्य पढ़ाना जब तक कि उनकी बुनियाद इन्सानियत और सदाचार पर क़ायम न हो, उन्हें अनपढ़ रखने से ज्यादा बुरा और ख़तरनाक है. विद्या और बुद्धि दोनों जबरदस्त शक्तियाँ हैं. ठीक उसी तरह जिस तरह शरीर का बल एक शक्ति है. हर शक्ति का ठीक और ग़लत दोनों तरह का इस्तेमाल हो सकता है. विद्या और बुद्धि की शक्ति अगर किसी के हाथ में दे दी जावे और उसके सदाचार को ठीक करके इन शक्तियों के ठीक-ठीक इस्तेमाल का ढंग उसे न बातया जावे तो इस में लगभग वैसा ही ख़तरा है जैसा बापू को सत्याग्रह का हथियार हिन्दुस्तान के हाथ में देकर बिना उसका ठीक-ठीक इस्तेमाल सिखाये चौरी चौरा के समय तजरबा हुआ था. यह असली तालीम अगर अधूरी भी रह जाय तब भी उससे वही ग़लत नतीजे पैदा होंगे जो सत्याग्रह के ग़लत इस्तेमाल से हिन्दुस्तान में हुए. जिस तरह बापू ने सत्याग्रह के ठीक इस्तेमाल के लिये रचनात्मक प्रोग्राम तैयार किया था उसी तरह समग्रसेवा और स्वावलम्बन के ठीक इस्तेमाल और उनकी कामयाबी के लिये नई

तालीम ज़रूरी है. इस नई तालीम को बापू ने पूरा-पूरा अपने नये विधान में शामिल कर लिया है.

हमारी आजकल की तालीम के बुरे नतीजों का सबसे अच्छा सबूत इस तालीम के बड़े से बड़े पंडितों और जानकारों के अमली करनामे हैं. जो बड़ी-बड़ी जंगें आए दिन दुनिया में हो रही हैं और जिनके लिये दुनिया अब भी इतने जोश के साथ तैयारी करती रहती है उनका हो सकना बिना आजकल के कालिजों और यूनीवर्सिटियों के बड़े-बड़े पंडितों और साइंसदानों की दिली मदद के नामुमकिन था. प्राइमरी स्कूलों से लेकर बड़ी से बड़ी यूनीवर्सिटियों तक सब में फ़ौजी तालीम के चरचे हैं. इसी हवा में नये लोकराज की रचना की उम्मीदें की जा रही हैं. इससे बढ़कर बदनसीबी दुनिया की जनता के लिये और क्या हो सकती है.

बापू ने इसी खतरे को मिटाने के लिये अपनी नई तालीम का आन्दोलन शुरू किया है. बच्चों के स्कूलों को इस तरह का रूप देना कि बच्चों की बुनियादी जरूरतें सब वहीं पर उन्हीं के हाथों पूरी हो सकें और बच्चों में अपनी तालीम का बोझ दूसरों पर न डाल कर सब खर्चा खुद निकालना और उनमें शुरू से ही यह विचार पैदा करना कि हम ख़ुद अपने पैरों पर खड़े होंगे. इसी तरह से उनके दिल से ऊँच नीच, अमीर ग़रीब, नौकर मालिक के वह सब भेद भाव निकाल देना जो लोकराज और इन्सानी भाई चारे के लिये सबसे बड़े कलंक हैं. यही बापू की नई तालीम का असली मक़सद और उसका असली रूप है. जब तक बच्चा इस तरह के विचारों को मां के पेट से लेकर पैदा नहीं होता, और जबतक जीवन के हर पहलू में

किसी न किसी रूप में उसे इन्हीं चीज़ों की तालीम नहीं दी जाती तब तक दुनिया की आजकल की हवा नहीं बदल सकती.

बापू की नई तालीम को हमारे पढ़े लिखे लोग कुछ अनोखे ढंग से देखते हैं. वह कहते हैं कि बच्चों की तालीम ख़र्च की निगाह से ख़ुद अपने पैरों पर खड़ी हो ही नहीं सकती. वह यह नहीं देखते कि बच्चों में इस विचार का पैदा करना और इसे सामने रख कर तालीम का दिया जाना ही इस मक़सद को हासिल कर लेना है. और तालीम का जितना ख़र्च भी इस तरह से निकल आवे वह ब्याज की तरह है. इस तरह के मक़सद को पूरा करने के लिये आदमी का ईमानदारी और लगन के साथ चिपट जाना ऐसे-ऐसे नतीजे पैदा कर देता है जिनकी दुनिया को कभी उम्मीद न होती थी. किसी ऊंचे मक़सद की, अगर वह मक़सद ठीक है तो, कोशिश से हट जाना कमज़ोरी और कम हिम्मती है.

बापू ने अपने विधान में नई तालीम से पहिले ही दफ़ा ६ में तन्दुरुस्ती और सफ़ाई की चरचा की है. सब जानते हैं कि बापू क़ुदरती इलाज में विश्वास रखते थे. दवाओं में उन्हें बिलकुल विश्वास न था. सफ़ाई के मामले में वह कहते थे कि हर आदमी को अपनी हर तरह की साफ़ाई ख़ुद करनी चाहिये. इसमें किसी दूसरे का मोहताज होना उस दूसरे पर ज़ुल्म करना है और नेकी और भाई-चारे के असूलों के ख़िलाफ़ है. बीमारों, बच्चों और कमज़ोरों की बात अलग है हम यहाँ इन पहलुओं की अधिक व्याख्या नहीं करना चाहते. यहाँ हम इतना कह देना चाहते हैं कि क़ुदरती इलाज और सफ़ाई दोनों तरीक़े बापू के स्वावलम्बन की जीती जागती तस्वीर हैं.

जहाँ तक इस विधान के समाजी पहलू का सवाल है बापू ने इसके लिये कोई अलग दफ़ा नहीं रखी. और पहलुओं में तो बहुत सी बाहर की चीज़ों के जानने की ज़रूरत होती भी है पर समाजी जीवन को तो ऊँचे से ऊँचा ले जाने के लिये सिवाय उन पाँच असूलों के और किसी चीज की ज़रूरत नहीं है—चोरी न करो, किसी को मारो मत, ज़िना न करो, सच बोलो और एक दूसरे के साथ भाई चारे का बर्ताव करो, इसके लिये और किसी नई जानकारी या नई तालीम की ज़रूरत नहीं है. हमारी समाजी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि इन असूलों को जानते हुए भी हम इनके अमल से बचते और भागते रहते हैं. इसीलिये बापू ने इन्हें अपने विधान की किसी दफ़ा में शामिल न करके इन्हें सेवकों या काम करने वालों के अमली जीवन में जगह दी है.

विधान में काम करने वालों के लिये जो बातें ज़रूरी बताई गई हैं उन्हें देखने से पता चलता है कि बापू उन सब दीवारों और रुकावटों को मिटाकर जो एक आदमी को दूसरे आदमी से और एक गिरोह को दूसरे गिरोह से अलग करती हैं सारी इन्सानी दुनिया को एक कुटुम्ब में ढाल देना चाहते हैं. यही बापू का समाजी प्रोग्राम है. हिन्दू धर्म का असूल है. "वसुधैव कुटुम्बकम", यानी सारी दुनिया एक छोटा सा कुटुम्ब है. क़ुरान में लिखा है कि "सब मख़लूक़ यानी प्राणीमात्र अल्लाह का कुनबा है और इनमें अल्लाह को सब से ज़्यादा प्यारा वह है जो अल्लाह के इस कुनबे की सेवा करता है." मुहम्मद साहब अपनी नमाज़ों में रोज़ दुहराया करते थे "मैं गवाही देता हूँ कि दुनियाके सब आदमी आपस में भाई भाई हैं."

हजरत ईसा, बुद्ध, जरतश्त और सब धर्मों के चलाने वालों ने सब मनुष्यों को एक इन्सानी भाईचारे के साँचे में ढाल देना अपने मज़हब और अपने मिशन का असली मक़सद बताया है. उन्हीं उपदेशों का नतीजा है कि पूरब में और पच्छिम में सब जीवित राजकाजी पार्टियाँ इस भाई चारे और इन्सानी बराबरी को कम से कम अपने दायरे में नेकनीयती के साथ अमली रूप देना चाहती हैं. यही उन सबका दावा भी है. लोकराज इसी विचार का राजकाजी रूप है. समाजवाद या सोशलिज्म इसी का समाजी रूप है. साम्य बाद या कम्युनिज्म इसी का आर्थिक रूप है. यह सब बड़े से बड़े पैमाने या इसी इन्सानी भाई चारे को क़ायम करने की शोशिशें हैं.

पर इस सच्चे भाई चारे के क़ायम होने के रास्ते में दो ज़बरदस्त कठिनाइयाँ हैं जिनपर हम अभी तक क़ाबू नहीं पा रहे हैं. पहली कठिनाई तो यह है कि आजकल की इन्सानी दुनिया के मज़हबी, समाजी. माली और रोज़गारी साँचे बन जाने और उनमें इन्सानी दुनिया के ढल जाने के लाखों साल बाद आदमी ने पुरी तरह मानव प्रेम और इन्सानी भाई चारे की ताक़त और ज़रूरत को समझ पाया. इन्सानी समाज के यह साँचे लोहे के साँचों से भी ज्यादा कड़े हैं इन्हें बदलना या तोड़ना आसान काम नहीं है. पर हमें यह काम करना ही है. दूसरी इससे भी बड़ी कठिनाई यह है कि आम तौर पर दुनिया के वह मजहबी आन्दोलन जो इन्सानी भाई चारा क़ायम करना चाहते हैं और खास तौर पर वह राजकाजी आन्दोलन जिनकी हम ऊपर चरचा कर आये हैं इस मानव आन्दोलन यानी इस इन्सानी तहरीक को तलवार और हिंसा के बल पर

कामयाब करना चाहते हैं. वह यह नहीं देख पाते कि आदमी एक जान दार चीज़ है, उसके दिल भी है. उसे इस दुनिया के हवनदस्ते में तोपों और ऐटमबमों से कूट पीस कर इन्सानी भाई चारे के साँचे में नहीं ढाला जा सकता. यह ग़लत तरीक़े आपस की नफ़रतों, गुस्सों और ज़िद्दा ज़िद्दी की आगों को और भी भड़का देते हैं. जहाँ तक इस कठिनाई का सवाल है वहाँ तक बापू ने जिस पैमाने पर आदमी की इस ग़लत चाल का मुक़ाबला किया है उतना शायद किसी दूसरे आदमी ने नहीं किया.

हम जिन आदर्शों को ठीक मानते हैं उन पर अमल नहीं करते न उनको अपनी ज़िन्दगी में कोई जगह देते हैं. बापू ने इसका हल यह निकाला कि अपने विधान में केवल ऐसे सेवकों को ही ज़िम्मेदारी सुपुर्द की है जो अपने असूलों पर पूरी तरह अमल करते हों. विधान के उस हिस्से को जिसमें सेवकों के गुन बताए गये हैं हम नीचे देते हैं:—

"हर काम करने वाले को अपने हाथ के कते सूत की या आल इंडिया चरखा संघ की तसदीक़ की हुई खादी पहनने की आदत होनी ज़रूरी है. यह भी ज़रूरी है कि वह शराब व सब नशे की चीज़ों से परहेज़ करता हो. अगर वह हिन्दू है तो यह ज़रूरी है कि उसने अपने निजी जीवन में और अपने कुटुम्ब के जीवन में, हर शक्ल सूरत में छुआ छूत को बिलकुल छोड़ दिया हो और वह साम्प्रदायिक एकता के आदर्श में विश्वास रखता हो, और सब धर्म मज़हबों के लिये उसके दिल में बराबर का आदर और मान हो और नस्ल, धर्म या मर्द औरत के फ़र्क़ का ख़याल न करते हुए सबको बराबर

के मौक़े दिये जाने और सबका बराबर का दरजा माने जाने में उसे विश्वास हो."

बापू ने इतने ही को काफ़ी नहीं समझा कि इन सेवकों में ख़ुद यह गुन हों. उन्होंने सेवकों के कुटुम्बों तक में इन गुनों को ज़रूरी माना है. जब तक आदमी सुधार की कोशिशों में अपने कुटुम्ब वालों और अपने पड़ोसियों के सुधार पर जोर नहीं देता तब तक वह दुनिया के सुधार की तरफ़ उतनी कामयाबी के साथ नहीं लग सकता. कॉंग्रेस का सारा सुधार आन्दोलन इसी सच्चाई की ज़िन्दा मिसाल है. सौ कॉंग्रेस वालों में से शायद तीस ख़ुद खादी पहनते हैं. उन तीस में भी शायद पंचानबे फ़ीसदी अपने बीबी बच्चों को खादी पहनाना जरूरी नहीं समझते. हम मिल के कपड़े बेचने वालों की पिकेटिंग करते थे और उन्हें हजारों और लाखों का नुक़्सान पहुंचाते थे पर हमने कभी अपने घर और मुहल्ले वालों के खादी पहनने पर जोर नहीं दिया, नतीजा यह है कि हमारे सारे सुधार आन्दोलन बेजान हो गये. बापू ने अपने इस विधान में इस कमी को पूरा करने की कोशिश की है. अगर हम इन्सानी भाईचारे को सचमुच जीता जागता रूप देना चाहते हैं तो हमें यही रास्ता पकड़ना होगा.

हम कह चुके हैं कि जहाँतक खेती, दस्तकारी और क़ुदरती इलाज के प्रोग्रामों का सवाल है हम यहाँ. उनकी तफ़सील में जाना नहीं चाहते. क्योंकि इन सब बातों पर बहुत सी किताबें लिखी जा चुकी हैं और मौजूद हैं. इसलिये इस विधान के जहाँ तक अमल का सवाल है वहाँ तक इसमें कोई ख़ास कठिनाई हमें दिखाई नहीं देती.

समग्र सेवा के इस पहलू को हम यहीं ख़तम करते हैं पर इस तामीर को स्वावलम्बी बनाने के रास्ते में बहुत सी बाहरी और राजकाजी कठिनाइयाँ हैं. हम देख चुके हैं कि हमारी पुरानी गाँव पँचायतें अपने जीवन के हर पहलू में स्वावलम्बी थीं पर अब दुनिया बदल गई है और उन पंचायतों को पूरी आज़ादी मिलना आज बहुत कठिन है इस कठिनाई को दूर करने के बापू ने जो जो तरीक़े इस विधान में बताए हैं उन्हें हम अगले हिस्से में देंगे.

स्वावलम्बन और असहयोग

पिछले हिस्से में हमने समग्र सेवा का तामीरी पहलू दिखाने की कोशिश की थी. इस हिस्से में हम समग्र सेवा के दूसरे पहलू और स्वावलम्बन को बयान करेंगे.

स्वावलम्बन यानी अपने पैरों पर ख़ुद खड़े होना बापू की सारी तालीम में सब से बुनियादी चीज़ है. बापू 'नई तालीम' तक को स्वावलम्बन पर चलाना चाहते हैं जो दुनिया के लिये एक नई बात है. जब हम आदमी की सारी ज़िंदगी को स्वावलम्बी बनाना चाहते हैं तो बच्चे के पैदा होने से आख़िरी दम तक इस असूल को अगर अमली रूप देने की कोशिश न की गई तो जैसा हम कह चुके हैं, मानव जीवन में कोई असली इन्क़लाब नहीं हो सकता.

सारी दुनिया, मज़हब और राजकाज दोनों में, तेज़ी के साथ इन्सानी भाई चारे की तरफ़ बढ़ना चाहती है. फिर भी उसे कामयाबी नहीं मिल रही है. बापू कहते हैं कि इसका कारन यह है कि लोगों के आपसी सम्बन्ध और नाते आमतौर से अपना बोझ दूसरे पर डालने और दूसरे का बोझ ख़ुद न

उठाने की बुनियाद पर बने हुए हैं. यह अन्याय है. अगर
अन्याय हमारे समाज से दूर हो जाय और हर आदमी अप
बोझ ख़ुद उठाना अपना धर्म समझने लगे और इसका आ
हो जाय तो दुनिया को सच्चे लोकराज और भाई चारे
तरफ़ बढ़ने में बहुत आसानी हो.

हम कुछ मिसालें देते हैं. मालिक मज़दूर, ज़मींदार किसान
हाकिम महकूम, क़ुली मुसाफ़िर, भंगी जजमान जैसे सब सम्बन
ऐसे हैं जिनमें एक गिरोह का बोझ दूसरे के लिये उठाना उसक
फ़र्ज़ और पेशा बना दिया गया है. दूसरे की मदद करना औ
उसका हर तरह का बोझ उठाना भी आदमी का सबसे ऊंच
सदाचार है. यह बात नेकी में शामिल है. इसे हम जितन
बरतें उतना ही हमारा सबका भला है. पर यह सेवा प्रेम और
त्याग की नींव पर होनी चाहिये, किसी रिवाज या क़ानून के
बल नहीं. यह सेवा वैसी ही होनी चाहिये जैसे बच्चे की सेवा
मां बाप करते हैं या दो भाई एक दूसरे की सेवा करते हैं. ऐसी किसी
सेवा में कोई पहलू अन्याय या ज़बरदस्ती का नहीं होना चाहिये.
लोकराज के इस दौर में हाकिम महकूम, मालिक मज़दूर, ऊंच
नीच, छूत अछूत के भेद नहीं चल सकते. जितनी जल्दी यह भे
भाव दूर हो सकें उतनी ही जल्दी सच्ची लोकशाही और भ
चारे का राज क़ायम होगा.

स्वावलम्बन का पूरा रूप यह है कि हम अपना सारा बोझ
ख़ुद उठाना अपना धर्म समझें और कोई दूसरा अपना बोझ

ज़बरदस्ती हम पर न लाद सके. स्वावलम्बन में यह दोनों पहलू ज़रूरी हैं. बापू ने अपने विधान में यह दोनों पहलू शामिल किये हैं. इस विधान की पंचायतों का फ़र्ज़ है कि वह अपने इलाक़े के लोगों को अपने निजी और समाजी जीवन की सब ज़रूरतों को पूरा करने में ख़ुद अपने पैरों पर खड़ा होना सिखावें और उनमें वह शक्ति पैदा करें कि इनके असली भले या सदाचार के असूलों के ख़िलाफ़ किसी पुरानी बात के जारी रखने या ई बात के जारी करने पर कोई भी इन्हें मजबूर न कर सके. बापू रवावलम्बन का यह रूप जीवन के नैतिक, समाजी और आर्थिक हलुओं के लिये वैसा ही ज़रूरी है जैसा राजकाजी पहलू के ये आज़ादी.

बापू देश के हर गाँव में यही सच्ची आज़ादी क़ायम करना चाहते हैं. इस आज़ादी को हासिल करने के लिये तीन बातों की ज़रूरत है. एक यह कि हर गाँव में गाँव के इस समय के साधनों के अनुसार अपनी खेती, दस्तकारियाँ, तालीम, तन्दुरुस्ती सबका प्रबंध ठीक ठीक और उन तरीक़ों से किया जावे जो बापू ने बताये हैं. दूसरी यह कि हर गाँव में इस तरह के साधन पैदा किये जावें जो गाँव की भलाई और तरक़्क़ी के लिये ज़रूरी हैं, तीसरी यह कि गाँव को उन सब बातों से पाक साफ़ किया जावे जो गाँव की आज़ादी या तरक़्क़ी में रुकावट हों. इनमें पहली बात की चरचा हम पिछले हिस्से में कर चुके हैं. बाक़ी दोनों बातें यहाँ देते हैं.

हम कह चके हैं कि हमें देश के नये जीवन की रचना में

पुरानी पंचायतों को सामने रखने से बहुत मदद मिल स
है. इन गाँव पंचायतों को स्वावलम्बी बनाने के लिये आज
जिन जिन बातों की कमी और जरूरत है वह यह हैं—

(१) जो माफ़ियाँ गाँव की तालीम, तन्दुरुस्ती और रक्ष
लिये इन्हें पहले मिली हुई थीं और जिनसे इनका सब
चलता था उन्हें फिर से दिलाना.

(२) गाँव के गोरुओं के लिये चरागाहों का और दू
ठीक ठीक प्रबंध करना

(३) बच्चों की नई तालीम के लिये मकान, सामान
पढ़ाने वाले मुक़र्रर करना और तैयार करना.

(४) पीने और सींचने के पानी के लिये अच्छे कुँए अ
तालाब बनवाना.

(५) गाँव वालों को अपने अपने खेतों को सींचने अ
जोतने की आसानी की निगाह से अदल बदल करने या न
सिरे से हदबंदी करने की पूरी आजादी देना.

(६) उन्हें अपने सारे झगड़ों और मामलों का ख़ुद फ़ैसल
कर लेने की आज़ादी देना.

(७) उन्हें गाँव की रक्षा और अपने सदाचार को ठी
रखने के प्रबंध में पूरी आज़ादी देना.

(८) जो लोग गाँव के अन्दर सदाचार के बुनियादी नियमों

को (जैसे सच बोलना बेईमानी न करना) तोड़ते हैं उनको रोकना और सुधारना.

(६) मुक़ामी ज़रूरतों के लिये जो कुछ करना हो कर सकना.

बापू की पंचायतों का यही आज़ादी का एलान है, यही उनका 'मैगना चार्टा' है. हम यहाँ इसकी तफ़सील में जाना नहीं चाहते. ज़ाहिर है कि गाँव गाँव और हलक़े हलक़े की अलग अलग ज़रूरतें होंगी और हर गाँव के मर्दों औरतों और बच्चों की गिनती को सामने रखकर अलग अलग चिट्ठे तैयार करने होंगे और कभी कभी अलग अलग जगहों के लिये काम के अलग अलग ढंग भी निकालने और बरतने होंगे

अब हम स्वावलम्बन की तीसरी बात लेते हैं. यानी गाँव को उन सब बातों से पाक साफ़ करना जो गाँव की आज़ादी और भलाई में रुकावट हों. यही स्वावलम्बन का सबसे नाज़ुक पहलू है. हम जानते हैं कि दुनिया में बनाना और बिगाड़ना, गढ़ना और तोड़ना दोनों साथ साथ चलते हैं. दोनों का चोली दामन का साथ है. ख़ास कर जब कि हमें नई रचना सुधार के रूप में करनी पड़ती है, अगर हमारा जीवन चारों तरफ़ से हमें बिगाड़ने वाली शक्तियों से घिर गया है तो सुधार की रचनात्मक कोशिशों से पहले या उनके साथ साथ हमें उन बिगाड़ने वाली शक्तियों को हटाना और साफ़ करना पड़ेगा. बदनसीबी से हमारे गाँव का आज कल का जीवन इस तरह की बिगाड़ने वाली शक्तियों से भरा पड़ा है. हमारे गाँवों में कई संगठन ऐसे हैं जो ऊपर से देखने में रचनात्मक मालूम होते हैं पर जो इन की

बिगाड़ने वाली शक्तियों को क़ायम रखते हैं और बढ़ाते रहते हैं. इस तरह के संगठन अँगरेज़ी राज ने हमारे भले के लिये नहीं अपने राजकाजी स्वार्थ को पूरा करने के लिये पैदा किये थे. सभ्यता में धर्म के चार चरण थे. अँगरेज़ी राजा ने अधर्म चरण क़ायम किये. यह चार पुलिस राज, अदालतराज, पटवारीराज और अधिकारी राज हैं. अधर्म के इन चारों चरणों ने जो नुक़सान गाँव के जीवन को पहुँचाया है उस पर किताबें लिखी जा सकती हैं. गाँव के सदाचार को और गाँव के माली जीवन दोनों को इन्होंने मटियामेट का डाला.

बापू इन्हीं चार चरणों के आधार पर अँगरेज़ी राज को रावण राज या शैतानी राज कहा करते थे. ख़ुद कांग्रेस भी पिछले तीस साल तक इन चारों के ज़रिये हिन्दुस्तान की बरबादी की दर्द भरी कहानी दुनिया को सुनाती रही. लोगों को आशा थी कि अँगरेज़ यहाँ से जाते समय अपने इन चारों चरणों को भी अपने साथ ले जावेंगे. पर वह इन्हें विरसे में कांग्रेस को दे गये और आज कांग्रेस ख़ुद इन चारों राजों की महाराजा बनी हुई है.

हमारे गाँव की बदक़िस्मती यहीं पर ख़तम नहीं होती. हमारी मरकज़ी और सूबाई हुकूमतें गाँव की खेती को तरह तरह की पच्छिमी मशीनों और बिजली घरों के सुपुर्द करने और गाँव के लोगो फ़ौजी तालीम देकर और हथियार बंद करके गाँव में फ़ौजी राज और मशीन राज जमा देने पर भी तुली हुई हैं. हमारी भूमि पर आजकल इन छै प्रेत राजों का चक्र चल रहा है. एक तरफ़ लोक राज का ज़माना और दूसरी तरफ़ यह प्रेत राज का दौरे, यह दोनों

साथ साथ नहीं रह सकते. अगर हमें गाँवों को जिन्दा रखना है और इन्हें फलने फूलने का मौक़ा देना है तो हमें पच्छिमी सभ्यता के इन प्रेतराजों को अपने गाँव से भगाना होगा.

सवाल यह है कि गाँव में इन घातक शक्तियों का राज होते हुए कोई सच्ची रचना या भलाई का काम कैसे हो सकता है. बापू ने अपने विधान में इन विरोधी शक्तियों से लड़ने की पूरी दाग़बेल डाली है. हम कह चुके हैं कि रचनात्मक काम और सत्याग्रह एक ही सिक्के के दो रुख़ हैं. रचना करना और विरोधी शक्तियों से, अगर वह रुकावट डालें, टक्कर लेना दोनों साथ साथ जरूरी हैं. बापू के स्वावलम्बन में सत्याग्रह शामिल है. गाँव अपनी सच्ची आज़ादी फ़ौजों, तोपों और गोलों के बल हासिल नहीं कर सकता. पर अगर गाँव वालों में आत्मबल और सत्याग्रह की शक्ति है तो दुनिया की तोपें और बम इसकी आज़ादी को नहीं छीन सकते. गाँव में तो हजार पाँच सौ आदमी होते हैं. पर सत्याग्रह की मदद से तो एक आदमी भी अकेला अपनी आज़ादी क़ायम रख सकता है. अब सवाल है कि यह कैसे ? बापू ने ख़ुद हमें अपनी तालीम तरबियत और अपने जीवन से यही ख़ास सबक़ सिखाया है. हर विरोधी शक्ति के पास किसी को क़ाबू में लाने और अपनी मर्ज़ी पर चलाने के लिये तीन हथियार होते हैं. वह हमें तीन तरह के नुक़सानों का डर दिखाती है—एक तन का नुक़सान जैसे मारपीट या चोट पहुँचाना या जेल, दूसरा माल का नुक़सान जैसे जुरमाना कुर्की, लूट और तीसरा जान का नुक़सान. इन्हीं नुक़सानों का डर हमें ग़ुलाम बनाता और ग़ुलाम रखता है. अगर हम इन नुक़सानों

से न डरें तो कोई हमें ग़ुलाम नहीं बना सकता और न कोई ज़बर-दस्ती हमें अपनी मर्ज़ी पर चला सकता है. इन्हीं तीन डरों से आज़ाद हो जाना और दूसरों के भले के लिये इन नुक़्सानों को खुशी से सह लेना सच्चा त्याग है. जिस पैमाने पर हम इन्हें सहने को तैयार हो जाते हैं उतना ही ऊँचा हमारा त्याग होता है. इस दुनिया में जो इस तरह के त्याग के लिये तैयार नहीं होता उसका दुखों में फँसे रहना और ग़ुलाम बने रहना क़ुदरती है. और जो जिस दरजे तक इस त्याग की शक्ति अपने में पैदा कर लेता है उसके जीवन से उसी दरजे तक अन्यायों और दुखों का मिट जाना ज़रूरी है. सच पूछिये तो इस त्याग की शक्ति का नाम ही सत्याग्रह है.

यह सत्याग्रह की शक्ति अगर तलवार की शक्ति की तरह कुछ आदमियों में भी पैदा हो जावे तो वह अपना मक़सद हासिल कर सकती है. बड़े से बड़े शहरों को जिनमें लाखों आदमी रहते हैं डरा कर क़ाबू में रखने के लिये कुछ हज़ार फ़ौजी ही काफ़ी होते हैं. इसी तरह लोगों के दिलों से डर को निकाल देने के लिये थोड़े से ही सच्चे सत्याग्रही काफ़ी हो सकते हैं. बापू कहते हैं कि एक सत्याग्रही सारे संसार पर अपना असर डाल सकता है, और बड़ी से बड़ी विरोधी शक्ति से टक्कर ले सकता है. बापू ने अंग्रेज़ी र[illegible] से टक्कर ली. उनके असर से छोटे बड़े और भी सत्याग्रही देश[illegible] पैदा हो गये. बापू के आन्दोलनों में जिन लोगों ने खुले हिस्सा लिया उनकी गिनती कभी पचास हज़ार या एक लाख से अधिक नह[illegible] हुई. पर उनका असर चालीस करोड़ आदमियों पर ऐसा औ[illegible] इतना पड़ा कि अंगरेज़ी राज के पाँव उखड़ गये. इसलिये अग[illegible]

किसी गाँव में कुछ ही सत्याग्रही पैदा हो जायँ तो वह गाँव के गाँव को विरोधी शक्तियों के डर से आज़ाद करके उनमें वह त्याग पैदा कर देंगे कि जिसके सामने तलवार और अन्याय अपने दांत पीस कर रह जायँगे, या सर झुका देने पर मजबूर हो जायँगे.

बापू ने अपने विधान में स्वावलम्बन के अन्दर सत्याग्रह को शामिल कर लिया है. हम दिखा चुके हैं कि रचनात्मक काम बिना सत्याग्रह की शक्ति के अधूरा है और सत्याग्रह की शक्ति रचनात्मक काम से बढ़ती है. अगर हमें अपने गाँव को पुलिस राज से आज़ाद करना है तो इसका रचनात्मक ढङ्ग यह नहीं है कि हम थानों और अदालतों के सरकारी नौकरों से डरा धमका कर या फुसला कर इस्तीफ़े ले लें. इस तरह की बातें हमारी कठिनाइयों को बहुत बढ़ा देंगी और आख़ीर में हमें हार खानी पड़ेगी. कारन यह है कि आजकल की पुलिस और अदालतें हमारी कुछ ज़रूरतों को पूरा करती हैं और हम इनसे झूटी सच्ची मदद लेने के मोहताज होगये हैं. मोहताजी ही सचमुच सारी ग़ुलामी की जड़ है और उसी पैमाने पर स्वावलम्बन ग़ुलामी से आज़ाद करने का ज़रिया है. क्योंकि यह मोहताजी को मिटाता है. फिर अगर हम पुलिस राज और अदालत राज को खतम करना चाहते हैं तो उसका सीधा तरीक़ा यह है कि जो काम हम पुलिस और अदालतों से लेते हैं उसे पूरा करने के लिये हम आप अपना संगठन और प्रबन्ध कर लें. अगर हम अपने आपस के मामलों और झगड़ों को ख़ुद तय करने का प्रबन्ध करलें और पुलिस की मदद के बिना अपने इलाक़ों में अमन बनाए रखने की सूरतें पैदा करलें तो यह दोनों महकमे अपने आप बेजान

और निकम्मे हो जायँगे, और अगर हमारा प्रबन्ध पूरा और पक्का है तो इन्हें बिलकुल ही बन्द होना पड़ेगा.

इन प्रेतराजों या इन महकमों की ग़िज़ा या आहार वह काम है जो हम इनसे लेते हैं, यह सहयोग है जो हम इन्हें देते हैं. अगर हम इनका यह खाना रोक दें तो संसार की कोई शक्ति इन्हें ज़िन्दा नहीं रख सकती. असहयोग यानी सहयोग (मदद) न देना सत्याग्रह का ही एक रूप है. पर हमें यह समझ लेना चाहिये कि केवल हिंसा से या केवल असहयोग से इन्हें ख़तम कर देने की आशा करना बेकार साबित होगा और हमारी कठिनाइयों को बढ़ा देगा. इससे हमारी सत्याग्रह की शक्ति भी कम होगी. सच यह है कि हर असहयोग का रूप रचनात्मक होना चाहिये. यानी यह कि हम एक के बाद एक अपनी सब ज़रूरतों को पूरा करने की अपने में शक्ति और साधन पैदा और जमा करते रहें. जितनी हमारी यह कोशिश कामयाब होगी उतना ही वह महकमा या राज, जिसे हम मिटाना चाहते हैं, ख़तम होता जायगा. अगर हम हिंसा, क्रोध, बदनीयती या जल्दबाज़ी से काम न लें तो हमें कामयाबी ज़रूर और जल्द मिलेगी. जल्दबाज़ी काम को ख़राब करती है और इस रास्ते का सबसे बड़ा ख़तरा है.

हमें इस बात को अच्छी तरह दिल में जमा लेना चाहिये कि हमारा असली मक़सद उन पुरानी पंचायतों और उस पुरानी सभ्यता को, जिसने उन पंचायतों को जन्म दिया था, उनमें एक नई जान और नई रूह डाल कर फिर से क़ायम करना है. हमने ऊपर दिखाया है कि बापू के विधान की पंचायतें सत्याग्रह और असहयोग

की मदद से किस तरह पूरी राजकाजी और माली आज़ादी हासिल कर सकती हैं. बिलकुल इसी तरह यह पंचायतें पच्छिमी सभ्यता की नैतिक गुलामी से देश को आज़ाद कर सकती हैं. पच्छिमी सभ्यता की इस गुलामी पर ही हमारी और सब गुलामियों के महल बने हैं. पच्छिमी सभ्यता हमें यह सिखाती है कि हम अपने लाभ के लिये ईमानदारी,बेईमानी, सच झूठ सबसे एक सा काम ले सकते हैं. यही सबक़ हमारे बहुत से नेता हुकूमत की पालिसी चलाने में और कांग्रेस की पार्टीबाज़ियों के करिश्मों में बड़े से बड़े पैमानों पर सिखा रहे हैं. अँगरेज़ी अदालतों ने हमें झूट बोलने और झूटा हलफ़ उठाने की तालीम ऐसी दी कि दुनिया को किसी बुरी से बुरी संस्था या बुरे से बुरे संगठन ने शायद ही कभी किसी को दी हो. पर हमारी हुकूमत की कंट्रोल की पालिसियों ने तो उन पालिसियों के चलाने वालों की अच्छी से अच्छी नीयत होते हुए भी, झूट फ़रेब और बेईमानी फैलाने में कुछ बरसों के अन्दर इतना काम कर दिया कि जितना इन अदालतों ने सदियों में भी नहीं कर पाया था. नतीजा यह है कि जो नफ़रत और ग़ुस्सा अंगरेज़ी राज के ख़िलाफ़ सदियों में पैदा हो पाया था वह अपनी हुकूमत के ख़िलाफ़ बरसों में पैदा हो गया है. पर हमारे आज कल के नेता बेबस हैं. वह हुकूमत और कांग्रेस दोनों को पच्छिमी सभ्यता की शैतानी चालों और बुराइयों से अलग नहीं कर सकते. कारन यह है कि उनके सामने कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं. बापू के रास्ते को वह हवाई और अनहोनी चीज़ समझते हैं.

गाँव के लोगों ने अभी तक अधर्म को धर्म मान लेना शुरू नहीं

किया है. इसलिये अगर इनके सामने पच्छिमी सभ्यता की डरावनी सूरत अपने पूरे ख़ूनी रंगों के साथ रखी जावे और हुकूमत और कॉमर्स पर उसके घातक असरों का नतीजा दिखाया जावे तो नामुमकिन है कि उनके दिलों में भगवान का डर फिर से पैदा न हो, और वह खुली बद कारियों के नतीजों से अपने को बचाने की जरूरत महसूस न करें. हमें इन्हें समझाना चाहिये कि बापू इन्हें पच्छिमी सभ्यता की ग़ुलामी से बचाना चाहते थे. किसी की भी ग़ुलामी से बचने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि हम उसे सहयोग देना बंद कर दें. हमने कहा है कि हमारा सहयोग ही वह भोजन है जो हमारी विरोधी शक्ति या संस्था को जीवित रखता है. पच्छिमी सभ्यता को अगर हमें देश निकाला देना है तो हम इससे अपना सहयोग तोड़ दें. इससे इसका आप ही आप खातमा हो जायगा. सहयोग तोड़ने का सबसे सीधा रास्ता यह है कि हम अपनी पुरानी सभ्यता के उन प्यारे असूलों को जैसे सच बोलो, चोरी न करो, मार पीट न करो वग़ैरा इन बुनियादी असूलों को अपने गाँव के भाइयों के आपसी व्यवहार का अटल नियम बनालें. जिस तरह किसी मंत्र से भूत भागता है उसी तरह इन सादे नियमों पर ईमानदारी के साथ जम जाने से पच्छिमी सभ्यता और उससे पैदा हुए सारे दुख दूर हो जावेंगे.

दुनिया की कोई ऊँची मजहबी किताब ऐसी नहीं है जो हमारे इस दावे की ताईद न करती हो. अभी सौ साल भी नहीं हुए कि हमारे सारे गाँव का जीवन इन्हीं असूलों पर चल रहा था. सारी दुनिया के इतिहास लेखक हमारे देश की इस ख़ूबी और इस

विशेषता की दिल से तारीफ़ें करते हैं. इसलिये उस जीवन का वापस लाना हमारी सच्ची कोशिशों के सामने कोई अनहोनी बात नहीं है. अगर हम एक बार अपने उस खोये हुए जीवन को वापस ले आवें तो पुरानी पंचायतें, पुरानी सभ्यता, पुरानी शक्ति और पुरानी खुशहाली सब अपने आप वापस आजावेंगे.

अगर हम अपने में सत्याग्रह की शक्ति पैदा करना चाहते हैं तो हमारे लिये इन असूलों पर कारबन्द होने के सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं है. गाँव की बिरादरियाँ अभी ज़िन्दा हैं, हुक़्क़ा पानी इन्हें बनाये रखने का सबसे बड़ा हाथियार है. इससे बढ़कर इन्सानी हथियार कोई दूसरा पैदा नहीं हुआ और हज़ारों साल से यह बराबर अपना काम कर रहा हैं. बापू के सहयोग और असहयोग का यह हुक़्क़ा पानी और उसका बन्द कर देना एक सुन्दर नमूना है. अगर किसी गाँव के नेक लोग आपस में एक दिल होकर और संगठन करके गाँव को बुराइयों और बदकारों से पाक साफ़ रखने का इरादा करलें तो केवल इन नेक लोगों का प्रेम भरा असहयोग ही सब बुराई करने वालों को बुराई छोड़ देने या गाँव छोड़ देने पर मजबूर कर देगा.

पच्छिमी सभ्यता का एक जबरदस्त बहाव आया. हमारे पाँव उखड़ गये. मगर हमने फिर पाँव जमा लिये और अपनी पुरानी सभ्यता के असूलों और ताक़तों की मदद लेकर उस विदेशी हुकूमत को मिटा दिया जो यह तूफ़ान अपने साथ लाई थी. वह हुकूमत अपना घातक असर हमारी देशी हुकूमत और देश पर छोड़ गई है. हमारी जिस सभ्यता ने दो सौ साल तक कुचले जाने के बाद दुनिया की सबसे

बड़ी मादी ताक़त को अपनी रूहानी और एख़लाक़ी ताक़तों की मदद से मिटा दिया, यह नामुमकिन है कि वह कुछ दिनों में अपनी नई देशी हुकूमत पर क़ाबू न पा सके. हमारी आज कल की देशी हुकूमत की तलवारें और पुलिस, इसे बचा कर नहीं रख सकतीं. ठीक जैसे यह अंगरेज़ी राज को न बचा सकीं. हमारी देशी हुकूमत सत्य और अहिंसा, इंसाफ़ और इंसानियत, नम्रता और सेवा के रास्ते पर चल कर ही बच सकती है. इसकी दौलत, ताक़त, हिम्मत और संगठन बिना नैतिक बल के और बिना इंसानियत के बालू के महल हैं. इन्हें लोहे के क़िले समझ लेना हुकूमतों के लिये सबसे बड़ी बदनसीबी और ख़तरा हैं. जर्मनी और जापान दुनिया की वह दो ताक़तें थीं जिनकी तलवारों का दुनिया पर सिक्का जमा हुआ था और जिनके दुनिया पर क़ब्ज़ा पा लेने के सपने बिलकुल बेबुनियाद नहीं थे. लेकिन आज उनकी तलवारें टूटी पड़ी हैं, वह घायलों की तरह ज़मीन पर पड़े तड़प रहे हैं. और अमरीका, इंगलिस्तान और दूसरे मित्र राष्ट्र उन्हें जी भर कर पैरों तले कुचल रहे हैं. यह वही अमरीका और इंगलिस्तान हैं जो निहत्थे हिन्दुस्तान पर अपना क़ब्ज़ा क़ायम न रख सके. अँगरेज़ यहाँ से गये हैं तो हमारी फ़ौजों, हवाई और समुन्दरी जहाज़ों, ज़हरीली गैसों या ऐटम बमों के डर से नहीं गये. वह गये हैं जनता के असहयोग और सत्याग्रह के डर से. और अगर आज भी वह हमारे चारों तरफ़ मंडला रहे हैं और अपनी चालों से हमें अपने जाल में फिर से फँसाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन हम पर सीधा क़ब्ज़ा जमा लेने की हिम्मत नहीं करते, तो इसमें इन्हें हमारी "खिलौना" फ़ौजों और अंगरेज़ी

जलसेना के टूटे फूटे जहाज़ों का डर नहीं है. न उन्हें रूस का डर है. उन्हें बस एक ही डर है, और वह हिन्दुस्तान की जनता के असहयोग का. इस पहलू पर हमें ध्यान रखना चाहिये. अगर देश की हुकूमत और जनता दोनों इस पहलू पर ग़ौर करके इससे फ़ायदा उठाने की कोशिश करें तो देश के सारे दुख दर्द बहुत जल्दी दूर हो जा सकते हैं और हमारा देश हमेशा के लिये दूसरे देशो की आर्थिक ग़ुलामी और उनकी फ़ौजों के डर से आज़ाद रह सकता है.

•

हुकूमत बापू के स्वावलम्बन के संदेश को सुने या न सुने, जनता को इधर ध्यान देना ही चाहिये. क्योंकि इसके सुनने या न सुनने में हुकूमत का कोई ख़ास नुक़सान नहीं. नुक़सान केवल जनता का ही है. जनता को यह समझना चाहिये कि लाखों बरस की कोशिशों और बरबादियों के बाद आज वह युग आया है कि जब दुनिया ने इसे देश का सच्चा बादशाह मान लिया है. पर अभी तक यह केवल असूली और काग़ज़ी मानना है. दुनिया में राजा नहीं रहे पर रक्तवीर राक्षस की तरह उनके ख़ून की हज़ारों बूँदें दुनिया पर गिरी हैं और इन बूँदों में से एक राजा की जगह सैकड़ों नये राजाओं ने जनता के नुमाइंदों के रूप में राज गद्दियाँ लेली हैं और बेचारी जनता पहले की तरह वैसी ही 'चेरी की चेरी' बनी हुई है. अगर जनता पार्लीमेंटी हुकूमत की असलियत को पूरी तरह समझ न लेगी तो उसे इसके जाल में फँसे रहकर मछली की तरह सदा तड़पना होगा. उसका इस जाल को जल्दी से जल्दी तोड़ना उसके जीवन और आज़ादी दोनों के लिये ज़रूरी है.

इस जाल को तोड़ने के लिये सिवाय बापू के दिखाये हुए रास्ते के और कोई रास्ता नहीं है. अपनी पुरानी सभ्यता और बापू के स्वावलम्बन का सहारा लेकर जनता को अपने देश का सच्चा राजा बनना होगा. पार्लीमेन्टी राज के ज़रिये जनता कभी सच्ची राजा नहीं बन सकती. हमेशा ग़ुलाम ही बनी रहेगी. दुनिया की जो हुकूमत भी फ़ौजों, बन्दूक़ों, पुलिस और लाठियों पर क़ायम होगी उसकी जनता हमेशा ग़ुलाम रहेगी और वह हुकूमत जनता की बादशाह और उसे चूसने वाली रहेगी. जनता को यह देखना चाहिये कि वह ज़माना जब फ़ौजें और पुलिस डाकुओं, चोरों, ठगों और दूसरे मुजरिमों को गिरफ़्तार करने का काम करती थीं, अब नहीं रहा. अब पुलिस और फ़ौजों का असली काम राजकाजी पार्टियों को दबाना है. यह पार्टियाँ जनता के जिस्म को छोटे बड़े टुकड़ों में काट कर इन्हें अपनी सेना बनालेती हैं और इन्हीं सेनाओं को अपनी विरोधी पार्टियों के या हुकूमत के ख़िलाफ़ लड़ा लड़ा कर मिटाती रहती हैं. इन पार्टियों का कुछ नहीं जाता. हर तरफ़ से ख़ून और बरबादी जनता ही की होती है. हुकूमत चौमुखी लड़ाई लड़ती है और इनमें से जनता के जिस्म के हर टुकड़े पर उसकी गोलियाँ और लाठियाँ बरसती हैं और ग़ज़ब यह है कि इस सारे ख़ून ख़राबे की असली ग़रज़ जनता का फ़ायदा बताया जाता है. यह सब पार्टियाँ और इन सबसे बढ़ कर हुकूमत इन ज़ुल्मों में अपने आप को जनता का रक्षक और सच्चा सेवक बताती है. जनता बेचारी अपनी ना समझी और भोले पन से उन सब की चालों और झूटे वायदों को न समझ कर इनके लिये

अपना ख़ून बहाती और माल लुटाती रहती है. इससे बढ़ कर अंधेर और क्या हो सकता है. और तमाशा यह है कि पार्लीमेंटी राज पार्टी बंदी को ही अपनी जान और अपना ईमान मानता है. बिना दो विरोधी पार्टियों के पार्लीमेंटी राज चल ही नहीं सकता. पच्छिमी पंडितों का कहना यह है कि बिना दो विरोधी पार्टियों के हुकूमत पार्लीमेंन्टी ख़ूबी के साथ चल ही नहीं सकती. इसकी यह दो पार्टियाँ तादाद में मछली के अंडों की तरह अनगिनत बढ़ती हैं. यहाँ तक कि देश का कोना कोना इन पार्टियों से भर जाता है. जब तक दुनिया की जनता इस पार्लीमेंटी राज और इसके इन बच्चों का ख़ातमा न करेगी तब तक इसके इसी तरह टुकड़े होते रहेंगे. यह मिटती रहेगी और इसके ख़ून के दरिया बहते रहेंगे. यह सब पार्टियाँ जनता को मुल्क का असली बादशाह बताती हैं. दुनिया में किसी बादशाह के इस तरह टुकड़े टुकड़े न किये गये होंगे, जैसे बेचारी जनता बादशाह के. हर हुकूमत के बड़े बड़े नेता भी हर मौक़े पर अपने ऐलानों, व्याख्यानों और क़ानूनों में और तरह तरह से जनता को उसके बादशाह होने का एतबार दिलाते रहते हैं और इनका हमेशा यह दावा रहता है कि यह जो कुछ करते हैं जनता के सुधार और भले के लिये ही करते हैं. आज तक दुनिया में किसी ने अपने बादशाह या मालिक का सुधार और उसका भला बन्दूक़ों, लाठियों, जुरमानों और जेलों से न किया होगा. यह सारा अंधेर पार्लीमेंटी राज और उसकी पैदा की हुई पार्टियों का है जो एक के बाद एक जनता की नुमाइन्दा बन कर तख़्त पर बैठती हैं और जनता पर बारी बारी यही अंधेर करती हैं.

जनता इसे केवल इसीलिये बरदाश्त कर लेती है क्योंकि वह अभी तक सचमुच की बादशाह नहीं बनी है. अभी तो यह दुनिया से केवल अपना बादशाह बनने का अधिकार मनवा पाई है. अभी यह तख़्त पर बैठी नहीं. अभी इसमें बादशाह होने का सच्चा भाव और सरकारी कर्मचारियों को अपना नौकर मानने का सच्चा सच्चा ख़याल भी पैदा नहीं हुआ. नहीं तो यह हो नहीं सकता था कि इसके साथ इस तरह का बरताव हो और यह उसे सह सके. जब तक जनता में इतनी समझ, इतना संगठन और इतनी शक्ति पैदा न होगी कि वह अपने को सचमुच मालिक और हुकूमत चलाने वालों को अपना सेवक माने और बना सके तब तक लोकराज का नाम लेना बेमानी है.

सच्चे लोकराज का पहला क़दम उस समय जमेगा जब जनता अपने राज चलाने वालों से फ़ौज और पुलिस रखने की ताक़त छीन लेगी और दुनिया के राजकाजी जीवन से इन महकमों ही को मिटा देगी. जब तक हुकूमतों का दारमदार और आधार फ़ौजों और पुलिस पर है तब तक जनता को कोई ताक़त ग़ुलामी से नहीं बचा सकती. इसमें हुकूमत का इतना क़सूर नहीं है जितना जनता की बेपरवाही और बेख़बरी का. पुरानी शहंशाहियों का रोब अभी तक जनता के दिलों पर छाया हुआ हैं. जनता की ग़ुलामी की वह हवा जिसमें यह कहावत बन गई थी—यथाराजा तथा प्रजा—यानी जैसा राजा होगा वैसी ही जनता होगी, आज तक जनता के दिल और दिमाग़ पर अपना असर जमाये हुए है. लोकराज के ज़माने में यह सारी हालत जड़ से बदलनी चाहिये. अब

जनता राजा है. अब कहना चाहिये 'यथा प्रजा तथा राजा' यानी जैसी जनता होगी वैसी ही हुकूमत होगी. दुनिया में कोई बिना निस्वार्थ और बेलाग ख़िदमत (सेवा) के सेव्य यानी मख़दूम नहीं बन सकता. अगर जनता यह चाहती है कि वह राज चलाने वालों को अपना सेवक और ख़ादिम बनाले तो वह अपना यह मक़सद फ़ौजों, पुलिस या तलवारों से हासिल नहीं कर सकती क्योंकि यह फ़ौजें और पुलिस तो एक बार इनका संगठन हो जाने के बाद हुकूमत की सारी दौलत और ताक़त को अपने ही, हाथों में ले लेंगे और पहले राजाओं की जगह यह जनता के दूसरे राजा बन बैठेंगे.

जनता के असली राजा बनने का तरीक़ा सिवाय उसके जो बापू ने बताया है कोई दूसरा हो ही नहीं सकता. वह तरीक़ा स्वाव· लम्बन और असहयोग का तरीक़ा है. जनता का असहयोग चाहे किसी देशी हुकूमत से हो या विदेशी हुकूमत से, इतनी जबरदस्त शक्ति है कि जिससे कोई हुकूमत टक्कर नहीं ले सकती. पर इस असहयोग का रूप रचनात्मक होना चाहिये, हिंसात्मक नहीं. पुलिस और फ़ौजों से मारकाट की टक्करें लेकर या केवल उन्हें अपने अस· हयोग से भूका मार कर हम उन्हें या हुकूमत को कोई असली नुक़सान नहीं पहुँचा सकते. इससे तो हम को ही बड़े से बड़े पैमाने पर नुक़सान पहुँचेगा. असहयोग का रचनात्मक रूप स्वावलम्बन है यानी यह कि अपने इलाक़ों का संगठन इस तरह कर लिया जाय कि वह अपने झगड़ों को आप निपटा लें और अपनी रक्षा आप कर सकें. अगर हम यह संगठन कर लें तो कोई हुकूमत न हम पर पुलिस राज क़ायम कर सकती है और न इसकी कोशिश ही कर

सकती है. अगर हमारे देश में अमन अमान बनाये रखने की ज़िम्मेदारी जनता अपने हाथों में ले ले तो देश में इतना बड़ा संगठन पैदा हो जाय और जनता में असहयोग करने की इतनी शक्ति आ जाय और उसके पास इतने साधन जमा हो जायँ कि इसके बाद दुनिया की कोई हुकूमत इस पर फ़ौजों और पुलिस की मदद से अपना राज नहीं जमा सकती. जहाँ तक अपनी देशी हुकूमत का सम्बन्ध है वहाँ तक उस पर इस संगठन का वैसा ही असर पड़ेगा जैसा ज़हर का दांत निकाल लेने का काले नाग पर पड़ता है. वह फिर जनता का कुछ बिगाड़ ही न सकेगी.

आज से सौ बरस पहले हमारे गाँव ख़ुद अपनी रक्षा का प्रबंध करते थे और यह प्रबंध इतना अच्छा और पूरा था कि हर इतिहास लेखक ने इस की तारीफ़ की है. सिवाय पच्छिमी सभ्यता की मरकज़ीयत के और गाँवों को उजाड़ कर उनकी जगह बड़े बड़े शहर आबाद करने की तरफ़ झुकाव के और कोई कठिनाई इस संगठन को फिर से क़ायम कर देने में हमारे सामने नहीं आसकती. बापू कहते थे कि अगर हुकूमत मेरे हाथ में आजाय तो मैं बिना पुलिस और फ़ौज के उसे चलाने की ज़िम्मेदारी ले सकता हूँ. उनके सामने इस बात को पूरा करने का यही सीधा सादा रास्ता था.

जनता अगर इस राजकाजी पहलू के अलावा इस योजना के समाजी, माली और रोज़गारी पहलुओं पर ध्यान दे तो उसे इस योजना के समझने और उससे अपने और देश के लाभ को जानने में और भी बड़ी मदद मिल सकती है. दुनिया की कोई हुकूमत बिना जनता के सहयोग, उसके संगठन और उसकी पूरी पूरी मदद

के आजकल के ज़माने में न अमन क़ायम रख सकती है और न अन्यायों और दुराचारों के तूफ़ानों को बढ़ने से रोक सकती है. हमारी हुकूमत के नेताओं से बढ़कर नेकनीयत आदमी दूसरी हुकूमतों में मिलना कठिन है. यह लोग नेकनीयती के साथ अपनी सारी ताक़त रिश्वत को रोकने में लगा रहे हैं पर रिश्वत रुकने की जगह दिन दिन शैतान की आंत की तरह बढ़ती ही जा रही है. अगर जनता अपने आप संगठन करके इस तूफ़ान को नहीं रोकती तो दुनिया की कोई शक्ति इसे नहीं रोक सकती. इसी तरह साम्प्रदायिकता के तूफ़ान को रोकने में इन नेताओं ने अपनी सारी शक्ति लगा दी थी फिर भी इसकी बाढ़ बढ़ती ही जाती थी. अगर बापू अपनी जान देकर इसे ठंडा न करते तो हुकूमत, कांग्रेस और देश सभी इसकी बाढ़ में बह कर खत्म हो गये होते. देश के सदाचार को ठीक करना और अमन क़ायम रखना पूरी तरह जनता के हाथ की चीज़ें हैं. जनता के सिवाय न कोई इस ज़िम्मेदारी को ले सकता है और न कामयाबी के साथ निबाह सकता है. जनता अगर इन कामों की ज़रूरत को समझ ले और इन्हें कामयाब बनाने में लग जावे तो सदियों में नहीं बरसों और महीनों में इसे मन चाही कामयाबी मिल सकती है. यह कामयाबी और बातों के साथ साथ इसे राजकाजी पार्टियों की खेंचातानी और उससे पैदा होने वाली बरबादी से हमेशा के लिये बचा लेगी.

अगर जनता अपनी रक्षा की ज़िम्मेवारी अपने हाथ में ले ले तो एक तरफ़ तो यह अपने अपने इलाक़े के नासमझ और बहके हुए लोगों पर क़ाबू हासिल कर लेगी और दूसरी तरफ़ उसमें इतनी

शक्ति पैदा हो जायगी कि राजकाजी पार्टियाँ और फ़िरक़ेवाराना गिरोह फिर उसे या देश को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे.

समग्र सेवा और स्वावलम्बन दोनों बापू के रामबान हैं. उनके इस्तेमाल सीख कर कोई जनता कमज़ोर और बेबस रह ही नहीं सकती.

हमने जो कुछ ऊपर दिया है वह बापू के विधान का एक ढाँचा है. पार्लीमेंटी राज को सुधारने और उस पर क़ाबू पाने के जो तरीक़े बापू ने इस विधान में दिये हैं उनपर हम अगले में लिखेंगे.

बराबर की गवरमेन्ट

बापू के विधान को पूरी तरह समझने के लिये हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिये कि वह जनता को देश का असली राजा और हुकूमत को जनता का सच्चा सेवक बनाना चाहते थे. हमारे समाज में जब तक यह इन्क़लाब असली मानी में पैदा नहीं होता तब तक सच्चा लोकराज या इन्सानी भाईचारा क़ायम नहीं हो सकता.

पर जनता के असली राजा होने के मानी क्या हैं और वह किस तरह असली राजा बन सकती है ?

संसार के इतिहास में यहूदी क़ौम का यह दावा था कि उनकी किताब तौरेत में ख़ुदा ने उन्हें दुनिया में एक हुकूमत देने का वायदा किया है. इतिहास के शुरू से वह इस हुकूमत को ढूँढने की धुन में लगे हुए हैं. इसीलिये यहूदियों को 'इतिहास के बाग़ी' (the rebels of history) कहा गया है. हज़रत ईसा ने तौरेत की इस भविष्य बानी को दूसरी तरह समझाया. उन्होंने बताया कि ख़ुदा किसी से इस दुनिया की हुकूमत का वायदा नहीं करता, वह लोगों को परलोक यानी बहिश्त की हुकूमत हासिल करने की दावत देता है, और वही असली और सच्ची हुकूमत है. पर यहूदियों पर इसका कुछ असर न हुआ. यहूदी आज भी वही अपनी पुरानी हुकूमत

फ़िलस्तीन में जमाने की कोशिश कर रहे हैं. उनका शुरू से यह भी ख़याल है कि जो निशान और हवाले इस हुकूमत के उन्हें दिये गये हैं वह फ़िलस्तीन में और उसके आसपास बहुत कुछ मिलते हैं. जहाँ तक ईसाइयों का सम्बन्ध है उन्होंने हज़रत ईसा की इस बात को तो मान लिया कि सच्ची हुकूमत बहिश्त की ही हुकूमत है. पर उन्होंने इसमें यह और जोड़ा कि बहिश्त की हुकूमत हासिल करने के लिये दुनिया की हुकूमत का भी चर्च यानी ईसाई पादरियों के हाथों में होना ज़रूरी है. इसके लिये उन्होंने अपने राजाओं की गवरमेंट के बराबर बराबर अपनी एक अलग पैरेलल गवरमेंट खड़ी करने की कोशिश की. इस पर राजाओं से इनकी टक्कर हुई. राजाओं ने इन्हें हरा दिया और इसके साथ ही साथ अपनी दुनिया की हुकूमत को मज़हब और सदाचार तक से पूरी तरह आज़ाद कर लिया. इस तरह योरप में लामज़हबी और बेदीनी का वह दौर शुरू हुआ जिसने थोड़े ही दिनों में सारी दुनिया पर अपना असर डाल दिया. बापू इसी बेदीनी को दुनिया से मिटाना चाहते हैं. और इसकी जगह परलोक में नहीं इसी दुनिया में वह नैतिक राज क़ायम करना चाहते हैं जिसका रूप वही होगा जो हज़रत मूसा, हज़रत ईसा, भगवत गीता, मुहम्मद साहब और दुनिया के हर बड़े धर्म ने बताया है यानी सच्चा लोकराज और इन्सानी भाईचारा.

नागपुर में कांग्रेस के लिये बापू ने एक नया विधान बनाया था. देशबन्धु चित्तरंजन दास ने उस समय बापू के विधान को देख कर कहा था कि इसमें बापू ने अंगरेज़ी राज के बराबर बराबर एक पैरेलल राज क़ायम करने की दाग़बेल डाली है. यह

राय एक हद तक ठीक थी. पर कांग्रेस बापू का या उस विधान का असली मतलब न समझी. कांग्रेस ने एक ऐसा नैतिक संगठन खड़ा करने के बजाय, जो हुकूमत से ऊँचा और उसके ऊपर हो और जो फ़ौज या पुलिस की ताक़त पर नहीं बल्कि निस्वार्थ सेवा और सदाचार पर क़ायम हो, अंगरेज़ों से राज छीन लेने को ही अपना मक़सद बना लिया.

कांग्रेस ने यह मक़सद हासिल तो कर लिया पर कांग्रेस के राजा बन जाने से वही ख़ूनी और घातक नतीजे पैदा हुए जिनका पैदा होना उस नैतिक संगठन के न बन सकने के कारन स्वाभाविक था. हम कह चुके हैं कि बापू हमेशा कांग्रेस को हुकूमत से बाहर रखने और अपने आप को और मुल्क को इन बुरे नतीजों से बचाने की सलाह देते रहे. इस विधान में उन्होंने आख़िरी बार कांग्रेस को हुकूमत से बाहर आने और इस हुकूमत से ऊपर और इसके बराबर बराबर एक ऐसा पैरेलल राज क़ायम करने की सलाह दी है जो जनता का सच्चा सेवक और रक्षक हो और जो देश की हुकूमत को भी जनता का सच्चा सेवक बना सके. हुकूमत के लिये इस सलाह का मानना आसान नहीं है. पर जनता इस विधान को इस तरह भूल नहीं सकती. जनता के लिये सचमुच राजा बनने का और कोई दूसरा रास्ता है भी नहीं, सिवाय इसके कि वह अपने राजकाज की देख रेख और निगरानी के लिये इस विधान के अनुसार एक नैतिक संगठन खड़ा कर ले.

बापू ने अपने इस विधान में इसी तरह का एक पैरेलल राज क़ायम करने की दाग़बेल डाली है, जो पार्लीमेंटी राज की बुराइय

से पाक हो और जो देश की हुकूमत को इन बुराइयों से बचा सके.

हम दिखा चुके हैं कि बापू ने अपने इस संगठन को हद दरजे का ग़ैरमरकज़ी रखा है और हमारे पुराने इतिहास के आधार पर हर गांव को एक पूरी और आज़ाद रिपब्लिक की सूरत दी है. अगर इस तरह की एक भी रिपब्लिक क़ायम हो जावे तो दूसरी क़ायम होने में देर नहीं लग सकती. कठिनाइयाँ जो कुछ पड़ेंगी शुरू ही में पड़ सकती हैं. इस संगठन की बापू ने जो सबसे छोटी बुनियादी इकाई अपने विधान में रखी है वह हम उन्हीं के शब्दों में नीचे देते हैं —

"पांच ऐसे बालिग़ मर्दों या औरतों की हर पंचायत जो या तो गाँव के रहने वाले हों या जिनके मन में गाँव की लगन हो, इस संघ की इकाई होगी."

बापू की इस इकाई पर निगाह डालते ही हम यह देख सकते हैं कि यह इकाई पार्लीमेंटी राज की उन सब बुराइयों से पाक है जिन्होंने उस राज को इतना ख़तरनाक बना रखा है. चुनाव की इनमें कोई छाया नहीं. क़ानूनी नुमाइन्दगी का इनमें कहीं पता नहीं. इन्हें कोई हक़ या साधन हुकूमत की तरफ़ से नहीं मिले. सरकारी पंचायतों की तरह यह किसी सरकारी क़ानून की पाबंद नहीं. राजकाजी निगाह से इन्हें पूरी आज़ादी हासिल है.

अगर हम इन्हें पुरानी पंचायतों से मिलाकर देखें तो यह उनसे भी ऊँची और अच्छी हैं. पुराने पंचों को नुमाइंदगी का अधिकार चुनाव से मिलता था. यह ठीक है कि उनका चुनाव और उनकी

नुमाइन्दगी दोनों आजकल के मुक़ाबले में सच्चे और असली लोकराज के असूलों पर थे. फिर भी उनको अधिकार चुनाव से ही मिलता था इसलिये वह पञ्चायतें स्वावलंबी नहीं थीं. पुरानी पंचायतों की यही बुनियादी कमी थी. वह अपने अंदर की नैतिक शक्ति से पैदा नहीं हुई थीं इसीलिये उनमें बाहर की शक्तियों से अपने आप को बचाकर रखने की ताक़त पैदा नहीं हो सकी. देश के राजा और बादशाह इन पंचायतों के अधिकारों में तो दख़ल न देते थे, पर वह राजा जिनके दिल में देश के रीत रिवाजों की बहुत अधिक क़दर नहीं थी गांव के दूसरे राजकाजी मामलों में दख़ल दे सकते थे और कभी कभी देते भी रहते थे. पर चूँकि देश की सभ्यता और नैतिक हवा इन पंचायतों की मददगार थी इसलिये वह हजारों साल तक अपना काम अच्छी तरह चलाती रहीं. अब वह हालत बदल गई. अब जब तक कोई संगठन ऐसा खड़ा न हो जाय जो हमारे देश के सदाचार को ग़ैर सदाचारी हमलों से बचा सके तब तक हमारी सभ्यता इस मुल्क में क़ायम नहीं रह सकती. इसलिये एक नये नैतिक संगठन का पैदा होना जरूरी है. बापू की पंचायतें इसी संगठन का बीज हैं. वह पुरानी पंचायतों की जगह लेने नहीं आई हैं. इन पंचायतों के पंच ख़ुद हमेशा गांव के चुनाव और राजकाजी दायरों से अलग रहेंगे. हुकूमत और ताक़त चुनाव और नुमाइन्दगी अपने साथ जो शक्ति और साधन लाते हैं उनमें इन पंचों का कभी कोई हिस्सा न होगा. इनके त्याग, इनकी नेकनीयती और इनकी निस्वार्थ सेवा का जनता के लिये यही खुला सबूत होगा. इसी पर इनके असर और ताक़त की बुनियाद होगी. इनकी सेवा, इनका

साहस, इनकी नेकनीयती, इनका सदाचार और इनका जनता के सुख-दुख में साथ देना, और जनता को बाहर के दबाव से बचाने की दिल जान से कोशिश करना, यह सब चीजें इनकी उस शक्ति को बढ़ाती रहेंगी. इस तरह आजकल की सरकारी पंचायतों से बाहर रहते हुए यह इन्हें स्वावलम्बी बनाने और पूरी आज़ादी हासिल करने की तरफ़ बढ़ाते रहेंगे. गाँव में इनकी वही जगह होगी जो सारे लोक सेवक संघ की देश में होगी.

कहा जा सकता है कि आजकल की दुनिया में कोई गाँव या गाँव की पंचायत स्वावलम्बी कैसे हो सकती है या कोई भी हुकूमत अपने आप को बाहर की माली, समाजी, राजकाजी और नैतिक ज़िन्दगी से बिलकुल नाता तोड़ कर स्वावलम्बी कैसे बन सकती है. यह एतराज़ स्वावलम्बन के मानी ठीक-ठीक न समझने से पैदा होता है. आजकल की चारों तरफ़ फैली हुई उस खेंचातानी से अपने आप को अलग रखना जिसमें हरेक दूसरे को अपना दुश्मन मानता है, दूसरों से नाता तोड़ना नहीं है, नाता जोड़ना है. अपनी सारी ज़रूरतें ख़ुद अपनी मेहनत से पूरी करने की हद दरजे की कोशिश करना दूसरों से नाता तोड़ना नहीं है बल्कि उसी मक़सद की तरफ़ बढ़ना है जिसकी तरफ़ दुनिया बढ़ने की कोशिश कर रही है. उन चीज़ों से बचना जो हमें नुक़सान पहुँचाती हैं, हर आदमी और हर गिरोह का फ़र्ज़ है. ऐसी चीज़ों से अपना काम चला लेना, जो हमें अपने यहाँ मिल सकती हैं और जो हमारी दौलत को बाहर जाने से रोक कर हमारे पेट भरने और तन ढकने में मदद देती हैं, किसी से नाता तोड़ना नहीं बल्कि दुश्मनी, नफ़रत, दंगों और जंगों

से बचने और दूसरों को बचाने का रास्ता निकालना है. इसी से हममें वह शक्ति पैदा हो सकती है जिससे हम अपनी और दूसरों की सच्ची रक्षा और सेवा कर सकें. एक दूसरे से बेजा फ़ायदा उठाने की इच्छा और कोशिश जो आज हम सब की आम ज़िन्दगी है, दूसरों से नाता जोड़ती नहीं तोड़ती है. इस इच्छा और इस कोशिश को अपने अंदर से मिटा देने के बाद ही हम एक दूसरे से सच्चा और सही नाता जोड़ सकेंगे.

दूसरों से बेजा फ़ायदा न उठाना और दूसरों को हर जायज़ फ़ायदा पहुँचाने की कोशिश करना यही स्वावलम्बन के बुनियादी असूल हैं. इसमें अलग रहने या नाता तोड़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता.यह एक दूसरे के साथ हद दरजे का सहयोग है. हाँ इतना ज़रूर है कि यह इस सहयोग को सदाचारी और इन्सानी बुनियादों तक ही रखना चाहता है, और यह बात केवल अपने बचाव के लिये नहीं बल्कि दुनिया के सब इन्सानों की भलाई और बेहतरी के लिये.

बापू के इस विधान और इन पञ्चायतों में अपने को कुछ चीज़ों से अलग रखने की बात भी है. पर अलग रखना किन चीज़ों से? आजकल के जीवन के उन पहलुओं से, जो हमारी सारी इन्सानी ज़िन्दगी को मटियामेट कर रहे हैं. एक दूसरे पर हुकूमत करने से, दुराचारों बेईमानियों और ज़ुल्मों से, जनता के टुकड़े टुकड़े कर डालने से, छूत अछूत और साम्प्रदायिक ज़हर से. यह पंचायतें तो सब धर्मों और सब इन्सानों को एक कुनबे के रूप में लाना चाहती हैं, दुनिया को एक बिरादरी बनाना चाहती हैं, और

आदमी आदमी में सगे भाइयों का सा सम्बन्ध और व्यवहार क़ायम करना चाहती हैं. इनमें दूसरों से अलग रहने और नाता तोड़ने की बात आ ही नहीं सकती. दुनिया की हालत इतनी बिगड़ गई है कि इसमें सच्चे भाईचारे और बराबरी का विचार नाता तोड़ना मालूम होता है. लोगों की ना इन्साफ़ियों, पार्टीबाज़ियों और तरह तरह की बुराइयों में हिस्सा लेना नाता जोड़ना मालूम होता है, और मित्रता का आदर्श माना जाता है. जो पार्टियाँ देश की जनता के टुकड़े टुकड़े कर रही हैं, जो धर्म मज़हब जनता को अलग अलग टुकड़ों में रखने के लिये लोहे की दीवारें बन गए हैं, जो देश एक दूसरे को मारने और लूटने के लिये डाकू बने हुए हैं, और जिनकी सभ्यता अपने फ़ायदे के लिये दूसरे को नुक़सान पहुँचना जायज़ बताती है, इन सब से दूर रहने की कोशिश करना हमें दुनिया से नाता तोड़ना दिखाई देता है. बापू का विधान निस्वार्थ सेवा और मानव प्रेम को जीवन का बुनियादी असूल बना कर किसी से नाता तोड़ता नहीं, बल्कि सब को मिलाने का सब से अच्छा तरीक़ा है. बापू की पंचायतें दुनिया से अलग नहीं रहेंगी. उनके विधान ही में इनके बढ़ने और एक दूसरे से मिलकर काम करने का नक़शा दिया हुआ है. हम उसे उन्हीं के शब्दों में नीचे देते हैं—

"इस तरह की दो पास पास की पंचायतों को मिला कर एक काम करने वाला जत्था बनेगा जो अपने में से ही एक को अपना नेता चुन कर उसके अधीन काम करेगा.

"जब इस तरह की सौ पंचायतें बन जायँगी तो उनके पचास पहले दरजे के नेता अपने में से एक दूसरे दरजे का नेता चुनेंगे, इसी

तरह बराबर होता रहेगा. इस बीच पहले दरजे के नेता दूसरे दरजे के नेता के अधीन काम करेंगे. दो दो सौ पंचायतों के इसी तरह बराबर बराबर के गिरोह बनते रहेंगे जब तक कि यह पंचायतें सारे हिन्दुस्तान में न फैल जायँ. इन पंचायतों का बाद का हर गिरोह पहले गिरोह को तरह अपना दूसरे दरजे का नेता चुनेगा. दूसरे दरजे के सब नेता मिलकर सारे हिंदुस्तान की सेवा करेंगे और अलग अलग अपने इलाक़ों की सेवा करेंगे. दूसरे दरजे के नेता जब कभी ज़रूरी समझें अपने में से एक को सरदार चुन सकेंगे. वह सरदार जब तक चाहेगा उन सब गिरोहों की क़ायदेदारी करेगा और उन्हें अपने हुक्म मे रखेगा."

इससे ज़ाहिर है कि यह पंचायतें दूसरों से नाता तोड़ने के असूल पर क़ायम नहीं की गईं. इनमें से हरेक को अपने ही नहीं सारे हिन्दुस्तान बल्कि दुनिया के भले को सामने रखकर काम करना होगा. साथ ही यह पंचायतें एक इन्क़लाबी पैग़ाम लेकर दुनिया के सामने आई हैं इसलिये इनके संगठन की बुनियाद इस तरह पर पड़नी ज़रूरी है कि वह दुनिया की आपस की दुश्मनियों, लागडाट खेंचातानी और घातक चालों से अपने आपको और अपने इलाक़ों को बचाकर रख सकें.

ऊपर की दफ़ाओं को देखने से मालूम होता है कि बापू ने जो पहलू चुनाव का इनमें रखा है वह आजकल के चुनाव से बिलकुल दूसरे ढंग का है. जो मरकज़ीयत बापू ने इनमें रखी है उसे चुनाव होते हुए भी डिक्टेटरी की शकल दी है. इस विधान में इससे ज़्यादा इन पंचायतों, उनके गिरोहों और नेताओं के आपसी सम्बन्ध

की बाबत कोई और नियम या क़ायदे नहीं दिये गये. यह तीनों बातें पार्लीमेंटी राज के चालू तरीक़ों से बिलकुल अलग हैं.

जहाँ तक इन पंचायतों का सवाल है बापू ने हर तरह की चुनाव की बुराइयों से इन्हें बचाया है. चुनाव का जो पहलू उन्होंने इन पंचायतों में ले लिया है उसमें से भी उसके ज़हर को निकाल देने की एक अजीब सूरत निकाली है. विधान कहता है कि पहले दर्जे के नेता अपने में से एक दूसरे दर्जे का नेता चुनेंगे और उसे अपना लीडर मान कर उसी के नीचे काम करेंगे. बापू ने इस नये तरीक़े में आजकल के चुनाव का सारा रूप और ढंग बदल दिया है.

बापू इस दुनिया में एक ज़बरदस्त नैतिक कीमियागर (Moral Chemist) थे. आम तौर पर चुनाव में लोगों के दिलों के बुरे से बुरे भाव नफ़रत, ग़ुस्सा, तिकड़म, बेईमानी सब ऊपर आ जाते हैं. बापू के इस चुनाव में यह सारी सूरत बदल गई. इससे पहले दर्जे के नेताओं में त्याग और उदारता पैदा होगी और दूसरे दर्जे के नेताओं में नम्रता, एहसानमन्दी, और वफ़ादारी पैदा होगी. और दोनों ही में एक दूसरे के साथ हमदर्दी और मुहब्बत पैदा होगी. एक दूसरे की इज़्ज़त होगी. अगर बापू का बताया हुआ यह ढंग आम हो जाय तो चुनाव की अधिकतर बुराइयाँ दूर हो सकती हैं. पुराने और पहले दर्जे के नेताओं और नये या दूसरे दर्जे के नेताओं में जो खेंचातानी होती है वह हमारे राजकाजी जीवन का सबसे भद्दा और दर्दनाक पहलू है. बापू ने अपने नये विधान में इसे खत्म कर दिया. बापू यह नहीं मानते थे कि अगर ज़िम्मेदार

ओहदों पर अव्वल दर्जे के नेता होंगे तभी उन ओहदों का काम अच्छी तरह चल सकेगा. हुकूमत के और जिम्मेदारी के काम दूसरे दर्जे के नेताओं से लेना और पहले दर्जे के नेताओं का खुद पीछे रह कर जनता की सेवा करना एक नया और बहुत ही अच्छा प्रयोग है. यही सच्ची ग़ैर मरकज़ीयत है. इसी से सच्चा लोकराज पैदा हो सकता है. हम अगर बापू के इस असूल को समझ लें और उस पर अमल करने की कोशिश करें तो दुनिया के राजकाजी जीवन की आधी से ज़्यादा गन्दगी मिट जाय.

इस विधान में दूसरी बात जिसकी तरफ़ हमें ध्यान देना है वह इन पंचायतों का देश की मरकज़ी सरकार के साथ सम्बन्ध है.

इनमें पार्लीमेंटी राज की कोई झलक नहीं है. अगर कोई झलक है तो डिक्टेटरी की. यहाँ भी बापू ने दूसरे दर्जे के नेता को पहिले दर्जे के नेताओं का डिक्टेटर बना कर डिक्टेटरी के ज़हर को निकाल दिया. वह डिक्टेटर भी जबरी नहीं चुना हुआ होगा. डिक्टेटरी या डिक्टेटर शिप इसे कहते हैं कि एक आदमी जो किसी राज या संस्था का सरदार हो बिना किसी दूसरे की राय की परवाह किये सारा काम अपनी अकेली राय से चला सके. आम तौर पर डिक्टेटर या डिक्टेटरी के नाम से हमें इतनी नफ़रत है और अपने आजकल के राज के ढंग पर हम इतने लट्टू हैं कि हमें इन दोनों तरीक़ों की अलग अलग भलाई बुराई दिखाई भी नहीं देती.

सच यह है कि पार्लीमेंटी राज में क़ानून बनाने के ढंग इतने बुरे और इतने खतरनाक हैं कि क़ानून बनाने का इससे ज़्यादा

बुरा ढंग सोचा ही नहीं जा सकता. इनके बनाये हुए आजकल के अधिकतर क़ानून निकम्मे, नुक़सान पहुँचाने वाले और ग़ैर ज़रूरी होते हैं. हमारे इस लोकराज के दौर में क़ानून ऐसे और इतने होने चाहियें कि जिन्हें सब आसानी से समझ सकें और याद रख सकें. आजकल पार्लीमेंटी तरीक़े की बदौलत इतने और ऐसे क़ानून बनते हैं कि जिन सबको जानना तो अलग रहा उनके समझने और समझाने के लिये बड़े से बड़े वकीलों की ज़रूरत होती है. इस पर भी एक एक क़ानून और एक एक दफ़ा के तरह तरह के और एक दूसरे के ख़िलाफ़ मानी किये जाते हैं और हर मानी के लिये बेअंत बहसें होती हैं. इस पर अंधेर यह कि हर छोटे से छोटे आदमी के लिये यह ज़रूरी समझा जाता है कि वह इन सब क़ानूनों को जाने. कोई ग़लती करने वाला किसी कचहरी या दरबार में यह नहीं कह सकता कि मैं इस क़ानून या दफ़ा को न जानता था. मालूम नहीं दुनिया को क़ानूनों की ज़रूरत या क़ानूनों की भूक कितनी बढ़ गई है कि हमारी क़ानून बनाने वाली धारा सभाओं को क़ानून बनाने से कभी फ़ुरसत ही नहीं मिलती. जनता के करोड़ों और अरबों रुपये इन धारा सभाओं और उनकी इमारतों पर ख़र्च होते रहते हैं. दुनिया के किसी शहंशाह के दरबार पर भी शायद इतना ख़र्च न होता होगा. पुरानी दुनिया में दो चार किताबें करोड़ों आदमियों की ज़रूरतों के लिये काफ़ी होती थीं. अब बड़े से बड़े किताब घर भी काफ़ी नहीं होते. करोड़ों रुपये पानी की तरह बहाये जाते हैं. इस सारी फ़ज़ूलख़र्ची और इतने बड़े बड़े लोगों के अपनी जान खपाने और अपने दिमाग़ लड़ाने का नतीजा यह है कि कोई

मुक़दमा ऐसा नहीं होता जिसमें बुरे से बुरे झूट और फ़रेब किसी न किसी पैमाने पर न बरते जाते हों. जिस किसी आदमी का क़ानून से कुछ भी सम्बन्ध रहा है वह जानता है कि शायद ही कोई मुक़दमा बिना झूट के चलाया जा सकता हो या कामयाब हो सकता हो. हमारे अनोखे लोकराज की इस संस्था ने जनता को जानबूझ कर झूट बोलने पर जितना मजबूर किया है उतना शायद ही किसी दूसरी बात ने किया हो. फिर भी क़ानून गढ़ने की इन नई टकसालों को हम पच्छिमी सभ्यता का सबसे चमकता हुआ और बढ़िया कारनामा समझते हैं. इससे ज्यादा बदनसीबी और क्या हो सकती है.

क़ानून साज़ी के इन महलों की एक विशेषता यह भी है कि इनके मेम्बर जिन शर्तों पर चुने जाते हैं उनमें इस तरह की कोई शर्त नहीं है कि जो लोग चुने जावें उन्हें क़ानून बनाने की जानकारी भी हो. क़ानून बनाना इनका पैदायशी हक़ मान लिया गया है. यह कहना कि लोकराज और इन्सानी बराबरी के ज़माने में क़ानून बनाने का हक़ सब को एक बराबर हासिल है और इस तरह का भेदभाव लोकराज और बालिग़ मताधिकार के असूल के ख़िलाफ़ है एक बे बुनियाद बात है. सच यह है कि इस तरह की सब अनोखी और अनहोनी बातें पच्छिमी सभ्यता और मरकज़ीयत की ही पैदावार हैं. हमने इन्हें बिना इनकी असलियत और नतीजों पर ध्यान दिये राजकाज के बहाव में पड़कर नक़्क़ाल की तरह नक़ल कर लिया है. जहाँ तक हक़ का सवाल है दुनिया में हर आदमी को

यह हक़ हासिल है कि वह बढ़ई बन सके या भंगी बन सके पर जो आदमी भी इस हक़ को काम में लाना चाहेगा उसे पहले बढ़ई या भंगी का काम सीखना होगा. तभी वह किसी बढ़ई खाने में या म्युनिसिपैलिटी के सफ़ाई के महकमे में भरती किया जा सकेगा. केवल किसी बात का हक़ होना जब तक हममें वह हक़ अदा करने की योग्यता न हो हमें उस काम के लिये तनख़ाह पाने और तरह तरह के ख़र्चे और भत्ते लेने का हक़दार नहीं बना देता. पच्छिमी सभ्यता हक़ों और अधिकारों का दौर अपने साथ लाई है. हक़दार के मुक़ाबले के कोई फ़र्ज़ भी होते हैं, यह सवाल ही इस दौर में नहीं पैदा होता. हम समझते यह हैं कि हम सब जनताके नुमाइन्दे हैं और इस हैसियत से मुल्क के बादशाह भी हैं. इंगलिस्तान के क़ानून के अनुसार बादशाह के हक़ ही हक़ होते हैं, उसका कोई फ़र्ज़ नहीं होता. फिर अगर वहाँ के इस रिवाज का साया हम पर भी पड़ रहा है तो इसमें अचरज क्या है.

बापू के विधान में मरकज़ीयत केवल काजकारी पहलू (Executive) तक ही रखी गई है. राजकाज से अगर क़ानून बनाने का हक़ ले लिया जावे तो अमली कारबार के लिये डिक्टेटरी सब से अच्छा तरीक़ा है. यह ज़रूर है कि हमें डिक्टेटरी को नैतिक बन्धनों में जकड़ देना होगा,जैसे बापू ने अपने विधान में जकड़ा है. जहाँ तक विधान की मरकज़ीयत का सम्बन्ध है वहाँ तक बापू ने इस विधान में इसके लिये कोई क़ायदे या क़ानून नहीं रखे. ऐसा करने से इनका बढ़ना और फैलना रुक जाता. बापू ने इन्हें बढ़ने और फलने फूलने की पूरी

सुविधा दी है और अपनी समय समय की ज़रूरतों और अनुभवों के अनुसार अपने रूप को बदलने और सुधारने की इन्हें आज़ादी दी है. उन्होंने इन पंचायतों को और उनके गिरोहों को मरकज़ी हुकूमत से अपने सम्बन्ध को भी ज़रूरत के अनुसार तय करने और बदलते रहने के लिये आज़ाद छोड़ा है. यह बात भी ज़रूरी थी. सच्चे लोकराज की ज़रूरतों को आजकल के तरीक़े और संस्थाएँ पूरा नहीं कर सकतीं. हमें आजकल की इन सब संस्थाओं और क़ायदे क़ानूनों को नैतिक बुनियादों पर फिर से नये नये रूपों में तामीर करना होगा.

ऊपर हमने बापू के विधान के कुछ पहलू यह दिखाने के लिये दिये हैं कि बापू की निगाह हर चीज़ पर कितनी रचनात्मक और सुधार की होती थी. अब हम उनके विधान के उस हिस्से की तरफ़ ध्यान दिलाते हैं जो सीधे राजकाज से सम्बन्ध रखता है.

इसमें सबसे पहला सवाल यह है कि इन पंचायतों का बाहरी दुनिया से क्या सम्बन्ध होगा या यह कि इन में मरकज़ीयत किस रूप में और किस पैमानेप र होगी. मरकज़ीयत ख़ुद कोई बुरी चीज़ नहीं है. केवल उससे स्वावलम्बन के असूल में कमी नहीं आनी चाहिये. स्वावलम्बन की असली सूरत यह है कि एक तरफ़ तो हमारा जीवन दूसरे किसी को बेजा नुक़सान न पहुँचा सके और दूसरी तरफ़ जो बातें हमें नैतिक या आर्थिक नुक़सान पहुँचाती हैं उन सबसे अपने को बचाकर रखा जावे. इसी बुनियादी सच्चाई पर इन पंचायतों के सारे बाहर के सम्बन्ध क़ायम

होंगे. जहाँ तक इन पंचायतों के आपस के सम्बन्ध का सवाल है सो पंचायतों के खास पहले दरजे के नेता मिल कर अपना सब का एक नेता और फिर इसी तरह के दूसरे दरजे के नेता मिल कर अगर चाहें तो अपना सबका एक नेता या सरदार चुन सकते हैं और उसी के अधीन अपना सारा काम कर सकते हैं. इस तरह अगर एक जिले में दो हजार गाँव हों और हर गाँव में एक पंचायत हो तो कुल जिले में बीस दूसरे दरजे के नेता होंगे. यही मिलकर जिले की कारकुन कमेटी का रूप ले लेंगे और चाहेंगे तो अपने में से एक को अपना सरदार या मुखिया चुन लेंगे. यह कमेटी स्वावलंबन के असूल पर अपनी मातहत पंचायतों की सेवा करेगी यानी इनके इस तरह के माल के लाने ले जाने, ख़रीदने बेचने और अदल बदल करने में इन्हें मदद देगी जो एक जगह के लिये जरूरी और दूसरे की जरूरत से ज्यादा हो. यह अदल बदल इस असूल पर होगा कि इसमें किसी को भी बेजा फ़ायदा या बेजा नुक़सान न पहुँचे. इस कमेटी के और सब फ़ैसले भी बराबरी और भाईचारे के असूल पर होंगे, लाग डाट या किसी के निजी फ़ायदे के आधार पर नहीं. इसी तरह हर सूबे की पंचायतें अगर चाहेंगी तो इस तरह के कामों के लिये कोई मरकजी पंचायत अपने सूबे के लिये बना लेंगी और सब सूबों की पंचायतें मिल कर अगर चाहेंगी तो सारे हिन्दुस्तान के लिये अपनी मरकजी कमेटी बना लेंगी. यह सारा संगठन बहुत ही सीधा और सरल होगा. अगर इसके चलने में कोई कठिनाई होगी तो तजरबे की रोशनी में उनके हल निकाल लिये जावेंगे. इन पंचायतों के पास कोई क़ानूनी हक़ या राज की

थी हुई कोई दौलत या ताक़त नहीं होगी. इनका जो कुछ भी असर लोगों पर होगा वह केवल इनकी निस्वार्थ सेवा के कारण होगा. जब इन्हें कोई अधिकार या पद राजकाजी चुनाव से या राज की तरफ़ से या कोई इस तरह की नौकरी नहीं मिलेगी तो इनमें आपस में कोई लाग डाट, बैर या खेंचातानी भी आज की तरह पैदा न हो सकेगी.

जहाँ तक इन पंचायतों का सम्बन्ध आजकल के मरकज़ी राज से है उनकी सदा यह कोशिश रहेगी और इसके लिये वह हर तरह के जायज़ तरीक़े काम में लावेंगी कि मरकज़ी राज उनकी तरफ़ और दूसरों की तरफ़ स्वावलम्बन की नीति पर चले. इन पंचायतों की निगाह में दुनिया का हर देश वैसी ही एक इकाई होगा जैसी अपने देश में एक पंचायत इकाई है. इनकी यह बुनियादी माँग होगी कि हर देश दूसरे देश के साथ स्वावलम्बन के असूल पर सम्बन्ध जोड़े. जो देश जिस बात में इस नीति को न मानेंगे उनके साथ हमारा देश उन बातों में सहयोग न करेगा. आजकल हर देश और हर गिरोह एक दूसरे को चूसना और एक दूसरे से बेजा फ़ायदा उठाना अपना हक़ और ईमान समझता है. इस हालत को देखते हुए स्वावलम्बन की नीति बड़ी इन्क़लाबी नीति है. उसे मानने के लिये कोई मुल्क भी आसानी से तैयार न होगा. पर रास्ते की कठिनाइयाँ इन पंचायतों को उनके सीधे रास्ते से न हटा सकेंगी. इन्हीं कठिनाइयों को दूर करने के लिये दुनिया में इन पंचायतों का जन्म हुआ है.

अब सवाल यह रह जाता है कि यह पंचायतें अपनी इन विरोधी

शक्तियों को चाहे वह मुक़ामी हों या मरकज़ी, दूर करने के लिये क्या क्या रास्ते निकालेंगी. इसका अमली तरीक़ा इस विधान में दिया हुआ है. हम उसे नीचे देते हैं.

इस समय हमारे इस सूबे (यू० पी०) की हुकूमत गाँव गाँव में पंचायतें क़ायम कर रही है. बापू की पंचायतें इन्हीं पंचायतों के साथ साथ क़ायम होंगी. सरकारी पंचायतों के पास सारी क़ानूनी शक्ति, अधिकार और साधन हैं. बापू की पंचायतों के पास केवल अपने सेवकों की निस्वार्थ सेवा और मानव प्रेम की शक्ति है. सरकारी पंचायतें सरकार की नीति को चलाने में मदद देंगी जैसे यह कि गाँव में पार्लमेंटी राज के चारों चरण जिनकी हमने ऊपर चर्चा की है और इन चरणों पर धड़ और सर के रूप में मशीनी राज और फ़ौजराज क़ायम हों. बापू की पंचायतों की नीति समग्र सेवा और स्वावलम्बन होगी जिसकी बुनियादी ग़रज़ गाँव के जीवन को पच्छिमी सभ्यता और पारलमेंटी राज से आज़ाद करना है. इस तरह मालूम होता है कि सरकारी पंचायतें और बापू की पंचायतें दो अलग अलग शक्तियाँ हैं एक भौतिक (माद्दी) और एक नैतिक (एख़लाक़ी) यह दोनों गाँव को अपने अपने माली, समाजी और राजकाजी साँचों में ढालना चाहेंगी. ऊपर से देखने में यह दोनों पंचायतें गाँव की हुकूमत चाहेंगी और गाँव के साधनों पर क़ब्ज़ा पाकर अपने अपने ढंग से गाँव का काम चलाना और उसकी हालत सुधारना चाहेंगी. पर असलियत यह नहीं है. इन दोनों तरह की पंचायतों के मक़सदों और काम के तरीक़ों में ज़मीन आसमान का फ़रक़ है. सरकारी पंचायतें सरकार के धन और उसके

अधिकार की मदद से जनता को मरकज़ी हुकूमत के बस में रखकर उसको हुकूमत की मरकज़ी नीति पर चलाना चाहती हैं. बापू की पंचायतें अपने गाँव को स्वावलम्बी बनाकर उसे हर तरह के बाहरी दबाव से पूरी तरह आज़ाद रखेंगी, और उस आज़ादी के हासिल करने के लिये गाँव वालों में जागृति और शक्ति पैदा करेंगी. वह जनता को गांव का सच्चा राजा और गांव की पंचायत को किसी बाहरी राजा का नहीं इसी राजा का सच्चा सेवक बनायेंगी.

इस मक़सद के हासिल करने का बापू ने इन पंचायतों के सामने एक सीधा सादा राजकाजी रास्ता रख दिया है, उसे हम नीचे देते हैं—

"हर काम करने वाला इस बात को देखेगा कि जिन लोगों के नाम क़ानूनी वोटरों के रजिस्टर में दर्ज होने से रह गये हैं उनके नाम उस रजिस्टर में बाज़ाब्ता दर्ज कर लिये जावें.

"हर काम करने वाला उन लोगों को जिनमें अभी तक वोटर बनने की क़ानूनी योग्यता नहीं है इस बात के लिये बढ़ावा देगा कि वह वोट का अधिकार पाने के लिये अपने अन्दर उस योग्यता को पैदा करलें."

सब जानते हैं कि पार्लीमेंटी हुकूमत पर क़ब्ज़ा पाने का क़ानूनी तरीक़ा चुनाव में खड़े होना और कामयाबी हासिल करना है. यह चुनाव देश को उन ख़ानाजंगियों से बचाने के लिये जो तरह तरह की राजकाजी पार्टियाँ राजगद्दी छीनने के लिये एक दूसरे के साथ करती हैं पैदा हुआ था. हिंसा भरे इन्क़लाबों से बचाने का यह अहिंसा का एक तरीक़ा था. पर पच्छिमी सभ्यता ने राजकाज को

सदाचार से पूरी तरह आज़ाद कर दिया इसलिये अव्वल तो इन चुनावों में ख़ुद हद दरजे की हिंसा भर गई, दूसरे चुनाव के रहते हुए भी राजकाजी पार्टियाँ जबरी और हिंसा भरे इन्क़लाबों के तरीक़े बराबर काम में लाती रहती हैं. इसलिये अगर चुनाव ईमान और इन्साफ़ के साथ किया जा सके तो इससे अच्छा ढङ्ग देश को पार्टी बाज़ी की मुसीबतों और घरेलू लड़ाइयों की बरबादियों से बचाने का कोई दूसरा नहीं हो सकता, बापू ने ऊपर की दोनों दफ़ाओं में अपनी पंचायतों का ध्यान वोटरों की तरफ़ दिलाया है. अगर एक बार वोटरों के दिल में यह जम जावे कि जनता के सच्चे नुमाइन्दे और रक्षक हम ही हैं और अच्छी बुरी हुकूमत बनाने की सारी जिम्मेवारी हमीं पर है और हमें इस जिम्मेवारी को किसी पार्टी के भले के लिये नहीं बल्कि कुल गांव के लोगों के भले के लिये पूरा करना चाहिये तो आजकल के चुनाव का रूप बिलकुल बदल सकता है. बरबादी का ज़रिया होने की जगह यही चुनाव लाभ और रचना का ज़रिया बन सकता है.

वोटरों में इस जिम्मेदारी की समझ पैदा करा देने के साथ साथ इन पंचायतों को अपने इलाक़े की जनता में इतनी जागृति और ताक़त पैदा कर देनी चाहिये कि वह किसी पार्टी को किसी वोटर पर नाजायज़ दबाव न डालने दें.' यह पार्टियाँ जनता की मदद और सहयोग से ही ताक़त पकड़ती और फलती फूलती हैं. यह जनता को तरह तरह के धोके देकर और झूठे वायदे करके अलग अलग टुकड़ों में बाँट देती हैं और फिर एक टुकड़े को दूसरे से लड़ाती रहती हैं. गाँव की जनता एक है. इसलिये उसका कोई भी टुकड़ा

बरबाद हो असल में बरबादी गांव और जनता ही की है. बापू की पञ्चायतें इसी बात की समझ वोटरों और जनता में पैदा करेंगी. चूँकि चुनाव में उनका कोई अपना फ़ायदा न होगा इसलिये जनता इनकी बात सुनेगी और उसपर अमल करेगी. अगर इस अमल करने में अन्दर की या बाहर की कोई शक्ति जनता को जबरदस्ती दबाने की कोशिश करेगी तो यह पञ्चायतें जनता को पीछे हटा कर अपना सीना सामने करेंगी. यही रास्ता सच्चे सत्याग्रही का रास्ता है. इसीसे गांव में वह शक्ति और वह एका पैदा हो जायगा जिसका कोई विरोधी शक्ति मुक़ाबला न कर सकेगी. इस तरह वोटर और चुनाव दोनों जनता के हाथ में हो जायँगे और जनता नेक और सच्चे लोगों को चुनाव में जिता सकेगी जो चुने जाने के बाद भी जनता के सच्चे सेवक बने रहें.

आजकल के चुनावों में वोटर बेचारे उम्मीदवारों और उनकी पार्टियों के बहकावे, दबाव, रिशते, झूठे वादों या पार्टीबाजी की उमंगों में आकर वोट देते हैं. जनता को यह समझना होगा कि आख़िर यह पार्टियां किसके रुपये और किसके बल पर चल रही हैं. और जिसके बल पर चल रही हैं उसे ही टुकड़े टुकड़े करके मिटा रही हैं. अगर जनता संगठन करके इन सब पार्टियों से असहयोग करले तो यह पार्टियाँ बिलकुल बेबस और बेकार हो जायँ और जनता इन सब खेंचा-तानियों और बरबादियों से बच जावे.

इस समय जो नेक और अच्छे लोग हैं और जिनपर पुरानी सभ्यता और दीन धर्म का असर अभी कुछ बाक़ी है वह अपने आस पास बुराई और बरबादी के इस तूफ़ान को देख कर दुखी होते

हैं और चुप हो जाते हैं. अगर यह लोग एक बार इस बात को समझ लें कि पच्छिमी सभ्यता के इस नंगे नाच को अपने इलाक़े में से मिटा देना उनका धर्म है और उनमें इसकी शक्ति भी है तो वह कुछ ही दिनों में उसका ख़ातमा कर सकते हैं.

इस समय की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि नेक और अच्छे लोग अपने अपने इलाक़ों के बहके हुए ना समझ और ग़लत रास्ते पर पड़े हुए लोगों से अपने इलाक़े की रक्षा नहीं कर सकते. इसका कारन यह है कि इन नेक और अच्छे लोगों का कोई संगठन नहीं है. दूसरी तरफ़ ग़लत रास्तों पर पड़े हुए लोगों का सबका अपना अपना संगठन है. हो सकता है कि शुरू में इन नेक और बेलाग लोगों को नुक़सान उठाना पड़े. पर उस नुक़सान को सह लेना ही उनका धर्म है. इस तरह का त्याग जनता को बड़ी से बड़ी बरबादी से बचा लेगा. कांग्रेस के थोड़े से त्याग ने बड़ी से बड़ी हुकूमत के पांव उखाड़ दिये. इसलिये जरूरत इस समय केवल इस बात की है कि हर इलाक़े के और हर शहर के नेक, सच्चे और बाअसर लोग जो आजकल की हालत और पार्टीबाज़ियों से परेशान और दुखी हों और इससे देश की बरबादी को देख रहे हों एक बार अपना संगठन करके खुले तौर पर और हिम्मत के साथ इस बुराई का मुक़ाबला करें. फिर वह देखेंगे कि थोड़े ही दिनों में मुल्क की हालत बदल जावेगी.

हर इलाक़े में इसी तरह के संगठन की जरूरत है. इस सङ्गठन के लोग अपने आपको चुनाव की लाग डाट और प्रलोभनों से दूर रखेंगे. वह ख़ुद हुकूमत की गद्दी पर न बैठेंगे. वह अधिकार के

दायरों से ख़ुद अलग रह कर जनता के जीवन के और उन दायरों की भी रक्षा करेंगे. इससे देश में और हर इलाक़े में एक ऐसी नैतिक शक्ति पैदा हो जायगी जो राज शक्ति से अलग रहते हुए भी उस शक्ति को अपने सामने झुका सकेगी और उसे देश का सच्चा सेवक बना सकेगी. बापू का विधान इसी अलग और बराबर की गवरमेंट का सन्देश देश के सामने लाया है.

इस विधान की पंचायतों का काम अपने अपने इलाक़े में इसी तरह के संगठन पैदा करना है. अपनी सेवा से इलाक़े के भले लोगों को अपने साथ लेकर समग्र सेवा, स्वावलम्बन, सत्य और अहिंसा की हवा पैदा कर देना है, जो आज से सौ बरस पहले हमारे गांव में मौजूद थी. इन पंचायतों का काम होगा कि वोटरों की बाबत जो हिदायत बापू ने दी है उसे सामने रख कर अपने इलाक़े के वोटरों को अपने सङ्गठन का एक ऐसा हिस्सा बना लें जिसे राजकाजी पार्टियाँ उनसे अलग न कर सकें. फिर इन वोटरों के ज़रिये से, ख़ुद बाहर रहते हुए, ऐसे सच्चे और नेक सेवकों को चुनाव में कामयाब बनवावें जिनपर जनता को यह पूरा एतबार हो कि वह चुने जाने के बाद जनता की सच्ची सेवा करेंगे.

गांव की इन पंचायतों में इतना ही नहीं, इन्हें जब चाहें इन सेवकों को हटा देने का अधिकार भी अपने हाथ में लेना होगा. जब यह सब बातें हो जायँगी तब ही वह अपने इलाक़ों को पुरानी पंचायतों की तरह पूरी आज़ादी दे सकेंगी. तभी वह अपने इलाक़े की आर्थिक, नैतिक और समाजी आज़ादी को पच्छिमी सभ्यता की ग़ुलामी से बचा सकेंगी. इसी महान उद्देश्य के लिये बापू ने यह

विधान और यह लोक सेवक संघ बनाया है. और इनका यही सङ्गठन देश की वह पैरेलल गवरमेन्ट होगी जिसे बापू का विधान क़ायम करना चाहता है.

हर इन्क़लाब के पैदा करने के लिये एक मक़सद, एक सङ्गठन, एक प्रोग्राम और एक हथियार और इनके साथ साथ एक गिरोह और एक शक्ति की ज़रूरत होती है. अपने विधान में बापू ने यह सारी बातें रखदी हैं. हमने पिछले हिस्सों में विधान के मक़सद, उसके सङ्गठन, उसके प्रोग्राम और उसके हथियारों का पूरा नक़शा पेश करने की कोशिश की है. अगले हिस्से में हम उस शक्ति और उन सेवकों की चरचा करेंगे जिनके सुपुर्द बापू के इस विधान को चलाने और कामयाब बनाने की ज़िम्मेदारी है.

आत्मा की ताक़त

अब हम उस शक्ति और उन सेवकों की चर्चा करेंगे जिनकी मदद से बापू अपने मक़सद को पूरा करना चाहते थे और जिनका उन्होंने अपने विधान में ज़िक्र किया है.

पहिले हम शक्ति को लेते हैं. बापू सत्य और अहिंसा में और उनसे पैदा होने वाले आत्मा के बल में अटल विश्वास रखते थे. वह कहते थे कि पच्छिमी सभ्यता के असर ने हमें इतना चकाचौंध कर दिया है कि अपनी सभ्यता की अच्छाइयों और उसकी नैतिक और आत्मिक शक्तियों की तरफ़ हमारी निगाह भी नहीं जाती. हमारी झोपड़ियों का महलों में बदलते जाना, हमारे छकड़ों का रेलगाड़ियों का रूप ले लेना, हमारा चिड़ियों की तरह आकाश में उड़ते फिरना यह सब हमारी निगाह में सभ्यता और उन्नति के सबूत हैं. हम यह नहीं देखते कि जितना जितना इस तरह की शक्तियों और साधनों का दायरा बढ़ता जाता है उतना उतना ही लड़ाइयाँ, मारकाट, बरबादी और तरह तरह की खेंचा तानी भी बढ़ती जा रही है. हथियारों, हवाई जहाज़ों, ज़हरीली गैसों और ऐटमबमों ने हमारे दिलों और दिमाग़ों पर ऐसी गहरी छाप डाल दी है कि जिससे हमारी अक़्ल गुम और हमारी आँखें धुँधिया गई हैं. यहाँ तक कि हम इन सब चीज़ों के उन बुरे नतीजों को भी नहीं देख पाते. यह ठीक है कि पच्छिमी सभ्यता की सारी शक्ति और उनके राज का सारा आधार फ़ौजों और हथियारों पर है. पर जहाँ तक अमन चैन और सुख शांति का सवाल है वहाँ तक ख़ुद योरप

की क़ौमों की आजकल की हालत रो रो कर दुनिया को अपनी दुख भरी कहानी सुना रही है और कह रही है कि इन फ़ौजों और हथियारों का सहारा बिलकुल धोके की टट्टी है.

इसमें शक नहीं कि हमने बापू के साथ न्याय नहीं किया. बापू का दावा था कि सत्य और अहिंसा में वैसी ही शक्ति है जैसी दुनिया की कोई और शक्ति. उनका यह भी दावा था कि इस शक्ति पर लगभग पचास बरस तजरबे करने के बाद वह इस नतीजे पर पहुँचे हैं. हमने उनकी इन बातों की तरफ़ कभी गहराई से ध्यान नहीं दिया. पच्छिम की डरावनी और घातक शक्तियों के सामने हमें बापू की अहिंसा सदा बेकार महसूस हुई. हमने कभी ठंडे दिल से इतिहास और तजरबे की रोशनी में एक सच्चे साइन्स वाले की तरह इन दोनों तरह की शक्तियों और उनके नतीजों को तोल कर देखने की कोशिश नहीं की. हम बुद्धिवाद और दलीलों की बात करते हैं पर जहाँ तक नेकी और बदी का सवाल है हम पच्छिमी सयभ्ता की दिखावटी तड़क भड़क के मोह जाल में उसी तरह फंस गये हैं जैसे हमारे ही देश के बहुत से रीत रिवाज के पुजारी अपनी आज कल की खोखली रूढ़ियों और झूटी हठ धर्मियों में फंसे हुए हैं. इस मोह जाल में हम इतने गहरे फंस गये हैं कि ख़ुद अपने और अपने देश के हाल के तजरबों से भी हम फ़ायदा नहीं उठा सकते. हमारे अच्छे अच्छे बुद्धिवादी बापू को जादूगर और उनके कामों को जादू या आदमी की बुद्धि से बाहर की चीज़ कह कर टाल देते हैं. चीज़ों को इस तरह से देखना न साइन्स है और न बुद्धिवाद. हम बापू की सलाहों को ग़ैर अमली और उनके विचारों को केवल

आदर्श समझते हैं. इसके मुक़ाबले में हमें यह बात बड़ी अक़्ल की मालूम होती है कि दूसरे देशों के पुराने कंडम किये हुए जहाज़ अपनी रक्षा के लिये ख़रीदें और देश की गाढ़ी कमाई को इसी तरह के हवाई जहाज़ों, तोपों, बमों और बन्दूक़ों के ख़रीदने और बनाने की कोशिशों में लुटा दें. हम अपनी खिलौना फ़ौज बनाने में इतने मगन हैं जितने बच्चे अपने रेती के महल बनाने में होते हैं.

सत्य और अहिंसा या किसी भी नई चीज़ में किसी को कितना भी गहरा विश्वास क्यों न हो और उस विश्वास को वह कितने ही ज़ोरदार शब्दों में क्यों न प्रकट करे, और कितनी ही ज़बरदस्त दलीलें क्यों न दे, दुनिया पर उसका उस समय तक कोई असर नहीं हो सकता जब तक वह अपने असूलों को दुनिया के सामने किसी अमली सूरत में पेश न करे. तभी वह दुनिया को उसके आजकल के ग़लत रास्ते से हटाकर ठीक रास्ते पर ले जाने की आशा कर सकता है. ज़रूरत इस बात की होती है कि कोई दूसरा रास्ता जो चालू रास्ते से ज़्यादा सीधा और अच्छा हो दुनिया के सामने आवे और दुनिया को उसे देखने और आज़माने का अवसर मिले. इसके बाद अगर लोगों को तसल्ली होजावे तो यह हो नहीं सकता कि वह धीरे धीरे अपने पुराने रास्ते को छोड़कर नये पर न चलने लगे.

इसी लिये बापू ने अपने प्रोग्राम को बहसों और दलीलों के साथ पेश करने के बजाय उसे अमली रूप देना, उसे प्रयोगों की कसौटी पर कसना और उस पर खुले अमल करके दिखाना अधिक उचित समझा और अपनी सारी शक्ति इसी में लगा दी. हम यहाँ बापू की सब खोजों और उनके प्रयोगों के विस्तार में नहीं जा सकते.

उनके जीवन के इन पहलुओं पर भी बहुत सी किताबें लिखी जा चुकी हैं जिनसे जो चाहे फ़ायदा उठा सकता है. यहाँ हम सरसरी तौर पर बापू के कुछ प्रयोगों के नतीजों पर एक निगाह डालेंगे.

जिस शक्ति को बापू आदमी को सुधारने के लिये तलवार की जगह देना चाहते थे वह शक्ति मानव-प्रेम की शक्ति है. नीति शास्त्र और आत्मविद्या के बड़े बड़े जानकारों ने हज़ारों साल से इस शक्ति का पता लगा रखा था. जिस तरह लोग माद्दी ताक़तों की छानबीन में लगे रहे हैं उसी तरह रूहानी ताक़तों के समझने और जानने वाले इन ताक़तों की छानबीन में भी उसी लगन के साथ हमेशा लगे रहे हैं. इन्हें अपनी इस खोज में उतनी ही कामयाबियाँ मिली हैं जितनी माद्दी शक्तियों की छानबीन करने वालों को. इन रूहानी शक्तियों के जानकार अपनी खोजों से इन्सानी दुनिया को वैसे ही फ़ायदा पहुँचाते रहे हैं जैसे माद्दी शक्तियों के पंडित अपनी खोजों से. इन्सानी दुनिया का इतिहास जब इस निगाह से लिखा जावेगा तब हमें यह दिखाई देगा कि रूहानी ताक़त और प्रेम की ताक़त के असली प्रयोग से इन्सानी दुनिया को जितना फ़ायदा पहुँचा है उतना माद्दी ईजादों से नहीं पहुँचा. यह एक पक्की बात है कि धीरे धीरे मानव प्रेम की शक्ति मानव जीवन के आर्थिक, नैतिक और समाजी दायरों में तलवार की शक्ति पर विजय पाती जा रही है और धीरे धीरे बड़े से बड़े पैमानों पर उसने तलवार की शक्ति को इन दायरों से निकाल कर उनकी जगह लेली है. इतिहास इस बात को साबित कर देगा कि जिसे हम कलचर और संस्कृति कहते हैं वह असल में धीरे धीरे अहिंसात्मक प्रोग्रामों,

रीत रिवाजों और क़ानूनों का हिंसात्मक रीत रिवाजों, प्रोग्रामों और क़ानूनों की जगह ले लेना है.

पच्छिमी सभ्यता के उठान के बाद से यह सूरत कुछ थोड़ी सी बदल गई. पर इतिहास हमें बताता है कि इस दौर में भी आदमी जाने या अनजाने इसी शक्ति को बढ़ाने और उसका संगठन करने को अपना असली लक्ष्य या मक़सद बनाये रहा. फिर क्या कारन है कि यह शक्ति तलवार की शक्ति पर आख़िरी विजय हासिल न कर सकी और आज तलवार ही इस शक्ति पर छाई हुई दिखाई देती है. इसके कुछ कारन हम नीचे देते हैं—

(१) पहिली बात तो यह है कि तलवार का इस शक्ति को हरा देना या दबा देना केवल एक सतही और चन्द रोज़ा चीज़ है. बड़े दर्जे तक यह हमारी निगाह का धोका है. यह सूरतें इस वास्ते पैदा हो गई हैं कि पिछले दो तीन सौ साल के अंदर हमारी दुनियावी या माद्दी तरक़्क़ी हमारी नैतिक और रूहानी तरक़्क़ी की निस्बत ज़्यादा तेज़ी के साथ आगे बढ़ी है. इससे पहिले हमारी दीनी धर्मी और नैतिक संस्थाएँ संसारी उन्नति को सदाचार और रूहानियत के अधीन रखकर मानव जीवन में एक बहुत अच्छा और तन्दुरुस्त समतोल बनाये रखती थीं. पच्छिम के उठान ने इस समतोल को बरबाद कर दिया. इसीलिये तलवार की शक्ति मानव प्रेम की शक्ति पर हावी दिखाई देने लगी. पर इसके साथ ही साथ वह संसारी रुकावटें जो आदमी को इन्सानी भाई चारे और लोक राज के साँचे में ढलने से रोकती थीं इतनी तेज़ी के साथ और इतनी

अच्छी तरह दूर होती जा रही हैं और हो गई हैं कि जो पिछले हज़ारों साल में भी न हुई थीं.

(२) दूसरी बात यह है कि लड़ाई और मारकाट के तूफ़ान आदमी के दिल और दिमाग़ को हिला कर तलवार के ख़तरों और उसकी बरबादियों से डरा डरा कर भौंचक्का कर रहे हैं. लोग इस तूफ़ान से इस हद तक घायल और परेशान हो गये हैं कि दुनिया के इतिहास में पहिली बार वह सच्चे दिल से ऐसी सूरतों की खोज में हैं जो आदमी को किसी तरह आजकल की बरबादियों से बचा सकें.

(३) तीसरे दुनिया की वह नैतिक और रूहानी शक्तियाँ जो थोड़े दिनों के लिये तलवार की चका चौंध से दब गई थीं, उनमें अब दोबारा एक नई जान, नई ताक़त और नया संगठन पैदा हो रहा है. अब अगर एक बार इन शक्तियों का संगठन हो गया तो तलवार का दौर हमेशा के लिये ख़त्म हो जायगा.

(४) चौथे बापू के जन्म और उनकी कामयाब कोशिशों ने एक नया प्रोग्राम और नया हथियार दुनिया के सामने रख दिया है. यह प्रोग्राम और यह हथियार थोड़े ही दिनों में नैतिक और रूहानी संगठनों को अहिंसा के तरीक़ों पर तलवार की शक्ति से सीधे टक्कर लेने के लिये तैयार कर देंगे. इसी के साथ साथ जो लोग अब तक हिंसा के तरीक़ों पर इसलिये लट्टू हैं कि वह इसे आदमी की भलाई, तरक़्क़ी और रक्षा का अकेला रास्ता समझते हैं, किसी ऐसे दूसरे रास्ते के सामने आते ही जिससे इन्हें भलाई की कुछ उम्मीद दिखाई देगी, ख़ुद बख़ुद उसकी तरफ़ झुक जावेंगे.

अब सवाल यह है कि दुनिया ने तलवार के इस्तेमाल को क्यों

जारी रहने दिया. इसका कारण राजकाजी और आर्थिक है. तलवार किसी देश या गिरोह में केवल सुधार ही का काम नहीं करती थी बल्कि रक्षा का काम भी करती थी. इसमें दो दायरे उसके सुपुर्द होते थे. एक अंदर की रक्षा और दूसरे बाहर से रक्षा. इतिहास बताता है कि जहाँ तक अंदर की रक्षा का सवाल था वहाँ तक मानव प्रेम की शक्ति के जानकारों ने हर देश और हर सभ्यता में ऐसे ऐसे तरीक़े पैदा कर लिये कि जिन्होंने धीरे धीरे शहरी जीवन से फ़ौजों की ज़रूरत को बिलकुल मिटा कर उसे ग़ैर फ़ौजी पुलिस और अदालतों के सुपुर्द कर दिया. पहिले हर आदमी को और हर गिरोह को अपनी रक्षा का ख़ुद अधिकार होता था. इस अधिकार को काम में लाने में हर आदमी आमतौर से हथियारों से काम लेता था या अपने मददगारों को हथियार देकर दूसरे से ख़ुद फ़ैसला कर लेने में मदद लेता था. और यह बात जायज़ समझी जाती थी. धीरे धीरे इस तरह की बातें मानव जीवन से ख़तम कर दी गईं. हर आदमी को क़ानून अपने हाथ में लेने की इजाज़त नहीं दी गई और सब तरह के आपसी झगड़े चुकाने के लिये हथियारों के इस्तेमाल की जगह अदालतों और दूसरी इसी तरह की संस्थाओं से काम लेना सब के लिये ज़रूरी कर दिया गया. पुलिस की संस्था भी इसी तरह फ़ौज की जगह एक ग़ैर फ़ौजी शहरी संस्था बनी जिसका काम शुरू में ग़ैर फ़ौजी ढंग से शांति क़ायम रखने में मदद देना था. इस तरह की पुलिस को भी अदालतों के अधीन रख कर उनके हिंसा के दायरे को एक बहुत बड़े पैमाने पर अहिंसा में बदल दिया गया.

अगर मानव उन्नति का दायरा कुल मानव जाति होती और कुल इन्सान एक ही हुकूमत के नीचे होते तो यह प्रबंध और यह प्रोग्राम ऐसा था जिसने आज से हजारों साल पहिले ही इन्सानी दुनिया से तलवार के इस्तेमाल को मिटा दिया होता. पर कठिनाई यह थी कि जहाँ तक राजकाज का सम्बन्ध है आदमी छोटे छोटे हजारों ऐसे टुकड़ों में बँटता रहा है कि जो एक दूसरे से बिलकुल आजाद होते थे. यह बँटवारा इतिहासी और भूगोली कारनों से होता था. शुरू शुरू में इनमें से हजारों गिरोह अपने रहन सहन, खानपान, धर्म मजहब, पेशों, संगठन के तरीक़ों और आदर्शों में बिलकुल एक दूसरे से अलग और अकसर एक दूसरे के खिलाफ़ सांचों में ढल जाते थे. फिर एक बार अलग अलग सांचों में ढल जाने के बाद आदमी क़ुदरती तौर पर अपने पुराने ढांचों से ही चिपटे रहना चाहता है. वह अपने या अपने गिरोह के रीत रिवाजों से इतनी मुहब्बत करने लगता है कि फिर उन्हीं का मोहताज हो जाता है. फिर उसके लिये इन साँचों को बदलना लगभग नामुमकिन हो जाता है. इसी तरह अलग अलग जातियां, अलग अलग क़ौमें, अलग अलग कलचर और अलग अलग राष्ट्र बन जाते हैं और यह सब अलग अलग हालतों में रह कर अलग अलग साँचों में ढले होते हैं. फिर जब इतिहास के उलट फेर या भूगोली शक्तियाँ इन्हें एक दूसरे से पास लाईं या उन्होंने इन्हें एक दूसरे से मिलाया तो एक दूसरे से अपनी रक्षा के लिये इनके पास तलवार के सिवा और कोई साधन था ही नहीं इसीलिये यह तलवार काम में लाने पर मजबूर हो जाते थे.

कुछ टक्करों के बाद एक दूसरे को जीत कर राजकाजी निगाह से यह एक दूसरे में मिल जाने पर मजबूर हो जाते थे. इसके बाद इनके अंदर के समाजी और माली पहलुओं पर मानव प्रेम की शक्ति धीरे धीरे अपना असर फैलाकर इनके आपसी फ़र्क़ों को मिटा मिटा कर इन्हें एक भाई चारे या राजकाजी और माली बिरादरी में ढालती रहती थी और इनमें एकता और एकरंगापन पैदा करती रहती थी. यहाँ तक कि इस तरह के मिले हुए गिरोहों में अपने आपसी सम्बन्धों और संगठन के लिये तलवार की कोई ज़रूरत या गुंजाइश बाक़ी न रहती थी. यही हालत दुनिया की आज तक बाक़ी है. इस हालत को ज्यादा बड़ी और फैली हुई इन्सानी बुनियादों पर लाने के लिये इतिहासी और भूगोली शक्तियाँ पहिले से कहीं बड़े पैमाने पर अपना काम कर रही हैं.

अब छोटी छोटी हुकूमतों की जगह दुनिया में बड़ी से बड़ी हुकूमतें और छोटी छोटी कलचरों की जगह बड़ी से बड़ी कलचरें और सभ्यताएँ बन रही हैं और बन गई हैं. फिर भी अभी इतनी अलग अलग आज़ाद हुकूमतें और क़ौमें बाक़ी हैं कि इन्हें एक दूसरे से अपनी रक्षा के लिये अभी तक तलवार की ज़रूरत मालूम होती है. जब तक यह ज़रूरत इस रूप में बाक़ी रहेगी तब तक आदमी के दिल में तलवार को काम में लाने और उससे फ़ायदा उठाने की इच्छा बनी रहेगी और तब तक तलवार इन्सानी दुनिया से मिट न सकेगी.

पर अब यह सारी हालत जड़ से बदल रही है. मानव संसार की आज कल की हालत और उसके आज कल के संगठन पर

निगाह डालने से हमें एक दूसरा पहलू दिखाई देता है. हम यह देखते हैं कि जिन शक्तियों की हमने ऊपर चर्चा की है उन्होंने मानव संसार की हुकूमतों, संस्कृतियों और क़ौमों की तादाद पहिले से बेहद कम कर दी है. आज थोड़ी सी बड़ी बड़ी हुकूमतें क़ायम हो गई हैं और इनकी शक्ति और साधन इतने अधिक हैं कि इनके सामने छोटी हकूमतों की कोई हक़ीक़त ही बाक़ी नहीं रही. आज कल के मशीन के दौर ने हथियारों को भी बड़ी बड़ी मशीनों का रूप दे दिया है. इस इन्क़लाब ने छोटी हुकूमतों को बड़ी हुकूमतों के सामने बिलकुल बेबस और लाचार कर दिया है. इसलिये आज तलवार दुनिया की छोटी क़ौमों और मुल्कों की इस तरह रक्षा नहीं कर सकती और उन्हें आज़ाद नहीं रख सकती जिस तरह पहिले रखती थी. अपनी आज़ादी को क़ायम रखने के लिये आज यह सब किसी दूसरी ताक़त या संगठन के मोहताज हो रहे हैं.

अगर हम आज की राजकाजी हालत पर निगाह डालें तो हम यह देखते हैं कि बड़ी बड़ी मशीनों वाले हथियारों और बड़ी बड़ी फ़ौजों को बड़े से बड़े पैमाने पर काम में लाने की शक्ति दुनिया की तीन क़ौमों के हाथ में आकर जमा हो गई है—अमरीका, इंगलिस्तान और रूस. इनमें से हम अमरीका और इंगलिस्तान को इस मानी में एक ही हुकूमत कह सकते हैं. अब जहाँ तक सच्ची राजकाजी आज़ादी का सवाल है वहाँ तक दुनिया में केवल दो ही हुकूमतें पूरे तौर पर आज़ाद रह गई हैं—अमरीका और रूस. बाक़ी सारी हुकूमतें देखने में आज़ाद हैं पर सच यह है कि अपनी आज़ादी बनाये रखने के लिये उनका तलवार पर जो

भरोसा था वह हमेशा के लिये मिट चुका. हम हमेशा के लिये इस लिये कहते हैं कि जो बड़ी बड़ी मशीनों की शकल के हथियार आज कल काम में लाये जा रहे हैं उनका बनाना, तरक़्क़ी देना और बढ़ाना ऐसे साधन चाहता है कि जो रूस और अमरीका के सिवाय न किसी दूसरे के पास हैं और न इन हालात में हो सकते हैं. और अगर कोई भी बड़ी हुकूमत इन दो हुकूमतों की जगह लेले तो वह भी इन छोटी हुकूमतों को सदा इस तरह के हथियार बनाने से रोकेगी. नतीजा यह कि अब छोटी हुकूमतें हथियारों की मदद से हरगिज़ अपनी आज़ादी या अपने अधिकारों की रक्षा नहीं कर सकतीं. छोटी हुकूमतों से हमारा मतलब उन हुकूमतों से है जो इस तरह के हथियार बनाने की दौड़ में रूस और अमरीका से पीछे रह गई हैं चाहे उनमें आदमियों की गिनती, देश का फैलाव या दूसरे साधन कितने भी ज्यादा क्यों न हों.

दूसरी तरफ़ दुनिया की हालत बता रही है कि यह दो बड़ी हुकूमतें भी बहुत दिनों तक अपने अलग अलग वजूद को इसी तरह क़ायम नहीं रख सकतीं. या तो यह सुलह और समझौते करके एक दूसरे से मिल जायँगी और या एक दूसरे से लड़ कर कोई एक दूसरी पर अपना क़ब्ज़ा जमा लेगी. ऐसी सूरत में जीती हुई हुकूमत हारी हुई हुकूमत से इस तरह के हथियार बनाने का अधिकार पूरी तरह छीन कर उसे हमेशा के लिये अपना महकूम और मोहताज बना लेगी. इस तरह दुनिया की हालत बता रही है कि सारी इंसानी सभ्यता, जहाँ तक उसका राजकाजी पहलू है और उस पहलू का तलवार से सम्बन्ध है, एक बड़ी हुकूमत के

अधीन होने जा रही हैं. इस बहाव को कोई शक्ति रोक नहीं सकती. इस सचाई को न समझना आजकल की दुनिया के सबसे बड़े इन्क़लाब से बेख़बर रहना है. यह बात किसी भी देश या राष्ट्र के लिये बहुत ख़तरनाक है. ऐसी हालत में हर समझदार आदमी को यह मानना चाहिये कि अपने राजकाजी जीवन की रक्षा और आज़ादी के लिये तलवार को अपना आख़िरी भरोसा और सहारा समझते रहना किसी भी राष्ट्र या राज के लिये बिलकुल बेकार और बेमानी है.

आज दुनिया की लगभग वह हालत है जो हिन्दुस्तान की सन् ५७ के ग़दर के बाद थी. हिन्दुस्तान की सारी फ़ौजी और राजकाजी ताक़त एक नई मरकज़ी हुकूमत के हाथ में आ गई. उसने देश का संगठन इस ढंग पर किया कि देश के एक बड़े हिस्से से तो देशी राज बिलकुल ख़तम कर दिया और दूसरे हिस्से में देशी राजाओं का राज बनाये रखा. अगर वह मरकज़ी हुकूमत चाहती तो देश से सब देशी हुकूमतों को ख़तम कर सकती थी पर उसने अपने मतलब के लिये बहुत सी देशी रियासतों को क़ायम रखा. उन्हें हथियार रखने की भी इजाज़त दी पर अपनी सलामती और अपने अधिकारों का उसमें भी पूरा ख़याल रखा. उसने एक ऐसी सूरत पैदा कर दी कि ऊपर से दिखाई देने में तो हर देशी रियासत ख़ुद मुख़्तार थी और एक दूसरे के ख़िलाफ़ अपने को आज़ाद मानती थी और यह भी समझती थी की उसकी यह आज़ादी फ़ौजों और तलवार के बल पर क़ायम है. पर असलियत में यह सब रियासतें हर मानी में मरकज़ी हुकुमत की मोहताज और ग़ुलाम थीं.

लगभग सौ साल तक हिन्दुस्तान की यही हालत रही. इन छै सौ राजकाजी इकाइयों में कोई ऐसा संगठन या कोई ऐसी शक्ति पैदा न हो सकी जिससे यह आपस में मिल कर अपने आप को मरकज़ी हुकूमत से सच्चे मानी में आज़ाद कर सकतीं. ऐसे ही देश की तीस करोड़ आबादी भी बहुत कुछ इच्छा रखते हुए भी अपने में कोई ऐसी शक्ति या संगठन पैदा न कर सकी जिसके बल यह अपने आपको मरकज़ी हुकूमत की फ़ौजी ताक़तों से आज़ाद कर सकती.

आज दुनिया की बहुत सी क़ौमें जिनमें वह भी शामिल हैं जिनकी तलवारों का सिक्का दुनिया पर जमा हुआ था जैसे जर्मनी और जापान, उस ज़माने के हिन्दुस्तान ही की तरह निहत्थी हो गईं. उनकी हालत को देख कर अब उनका हथियारों की मदद से सच्ची आज़ादी हासिल कर लेना बिलकुल नामुमकिन मालूम होता है. यह ठीक है कि दुनिया अभी इतने बड़े इन्क़लाब के नतीजों को पूरी तरह नहीं समझ सकती. इसके लिये कुछ बरसों की ज़रूरत है. फिर भी जो हालत हमारे सामने है उस पर अगर हम ठंडे दिल से और बेलाग होकर नज़र डालें तो हम देखेंगे कि सचमुच अब दुनिया की पंचानवे फ़ीसदी हुकूमतें तो अपनी आज़ादी तलवार और फ़ौजों की मदद से बचाकर नहीं रख सकतीं.

हमें इस पहलू को भी निगाह में रखना चाहिये कि दुनिया की यह मरकज़ी हुकूमत जितना जितना हिंसा के आधार पर क़ायम होती जाती है और जितना जितना उसकी मरकज़ीयत बढ़ती जाती है उतना उतना ही इन्सानी भाई चारे और मानव प्रेम की ताक़त मरकज़ीयत से दूर होती जाती है, उतना उतना ही अन्याय, ज़ुल्म

और दूसरों का चूसना या उनसे बेजा फ़ायदा उठाना फिर बढ़ने लगेगा, अलग अलग राजकाजी इकाइयों के अधिकार बच नहीं सकेंगे, न इनमें अमन अमान और आराम चैन किसी अच्छे पैमाने पर पैदा हो सकेंगे. इसलिये दुनिया भर की इन सब इकाइयों को ज़रूरी तौर पर अपने अधिकारों की रक्षा और अपने यहाँ के अमन चैन और सुख शांति के लिये दूसरे शब्दों में अपनी सच्ची आज़ादी के लिये किसी न किसी दूसरी शक्ति और दूसरे साधनों की तरफ़ देखना होगा. हथियारों से यह उस मरकज़ीयत का मुक़ाबला न कर सकेंगी. कोई न कोई नई शक्ति ढूँढने की तरफ़ इनका ध्यान ज़ोरों में जायगा. ऐसी हालत में बापू के दिखाये हुए तरीक़े के सिवाय कोई दूसरा रास्ता ऐसा नहीं है जिससे यह अपने बचाव की आशा कर सकें.

हमारा दावा है कि आज कल की हालतों में बहुत जल्दी वह समय आये बग़ैर नहीं रह सकता कि जब दुनिया अहिंसा और मानव प्रेम के उन पहलुओं पर ध्यान देने के लिये मजबूर होगी जो बापू ने दुनिया के सामने रखे हैं. तब दुनिया ठंडे दिल से इस नई शक्ति की असलियत और इसके रूप को समझने की कोशिश करेगी और ख़ुद तरह तरह के तजरबे करके इस बात को भी समझेगी और सीखेगी कि इस शक्ति से दुनिया में क्या कुछ हो सकता है.

हम कह चुके हैं कि अभी तक आत्मबल की शक्ति की तरफ़ केवल मज़हबी, रूहानी और नैतिक संस्थाएँ ही ध्यान देती रही हैं. नैतिक और कलचरी जीवन में इन संस्थाओं ने आत्मबल को काम

में लाने को बड़ी से बड़ी कोशिशें की हैं और उन्हें सफलता भी मिली है. पर इसमें भी शक नहीं कि यही संस्थाएँ राजकाजी और दूसरी हिंसा की शक्तियों से अपने को हमेशा तलवार ही के ज़ोर से बचाने की कोशिश करती रही हैं. इसलिये इन संस्थाओं में भी राजकाज ही की तरह तलवार की ज़रूरत और उसकी सारी बुराइयाँ बराबर क़ायम रही हैं. यही कारन है कि यह मज़हबी संस्थाएँ भी मानव प्रेम की शक्ति को ऐसा हथियार और ऐसा साधन न बना सकीं जिससे वह राजकाज के मैदान में, आत्मबल के ज़रिये हिंसात्मक हमलों पर क़ाबू पा सकती. इन संस्थाओं के लिये भी अब दुनिया बदल गई है. अपनी ही सलामती और उन्नति के लिये इन्हें बापू के असूलों और प्रोग्रामों पर ठंडे दिल से विचार करना होगा.

आजकल की हालतों में अगर मुक़ाबला करके यह देखा जायगा कि इन्सानी दुनिया को तलवार से ज्यादा फ़ायदा पहुंच सकता है या मानव प्रेम से और दुनिया तलवार से ज्यादा सुधर सकती है या मानव प्रेम की शक्ति से तो यह हो ही नहीं सकता कि दुनिया के दुखी इन्सान मानव प्रेम के हक़ में फ़ैसला न दें और इस नतीजे पर न पहुँचें कि तलवार से ज्यादा बुरा कोई सुधार का तरीक़ा हो ही नहीं सकता. हम अपने मतलब को और भी साफ़ कर देना चाहते हैं और यह दिखाना चाहते हैं कि मानव प्रेम की शक्ति मानव सुधार और मानव उन्नति दोनों के लिये तलवार की शक्ति से कहीं ज्यादा अच्छी है.

अगर हम इन दोनों शक्तियों को ध्यान से देखें तो हमें पता चलेगा कि मानव प्रेम और तलवार दोनों की असली ताक़त हमारे विचारों, हमारी इच्छाओं और हमारी उमंगों पर निर्भर है, हम

अपनी संसारी ज़रूरतों को पूरा करने के लिये और अपने भाइयों से अपनी रक्षा के लिये स्वार्थ, नफ़रत गुस्सा, दुश्मनी और एक दूसरे से डाह को दुनिया के बुरे से बुरे साधनों की मदद से एक संगठन और एक संस्था का रूप दे देते हैं. इसमें आदमी हमारी फ़ौज और उसके सिपाहियों का काम देते हैं और तलवार, बन्दूक़, तोप, बारूद, ऐटमबम इन सिपाहियों के हाथों में हथियार का काम देते है. जो असली शक्ति इस संगठन के पीछे काम करती है और जो इसे चलाती है वह हमारे दिलों के अन्दर के वही भाव हैं जिन्हें हमने ऊपर बयान किया है. इस तरह के भाव जिस तरह हमें अपनी रक्षा के लिये काम देते हैं उसी तरह हमारे विरोधी की रक्षा के लिये भी काम में आते है. नतीजा यह होता है कि यह भाव दोनों तरफ़ बढ़ते चले जाते हैं. इन्हीं के साथ साथ उन साधनों का संगठन भी दोनों तरफ़ बढ़ता चला जाता है. फिर हम केवल इतना ही नहीं करते कि इन साधनों की मदद से अपनी रक्षा कर लें. बल्कि हम और आगे बढ़कर अपने विरोधी से अधिक से अधिक फ़ायदा उठाने की इन साधनों की मदद से कोशिश करते हैं चाहे वह फ़ायदा जायज़ हो या नाजायज़. अन्त में यह शैतानी चक्कर दोनों तरफ़ से ज़ुल्म ज़बरदस्ती और बरबादी का एक बहुत बड़ा सरचश्मा बन जाता है. इसी तरह मानव प्रेम की शक्ति के पीछे प्रेम, दया, क्षमा, त्याग, एक दूसरे की सेवा, और हमदर्दी के भाव होते हैं. इस में कोई ख़ुदग़रज़ी का पहलू या दूसरों से जबरदस्ती अपनी इच्छाएं पूरी करवाने का पहलू नहीं होता. इन दोनों बातों में यह शक्ति तलवार की शक्ति से बिलकुल एक अलग चीज़

है. फिर भी एक बात इन दोनों में एक सी है. यह दोनों आदमी के दिल और दिमाग़ पर कब्ज़ा पाना चाहती हैं. पर इनके कब्ज़ा पाने के तरीक़े एक दूसरे से बिलकुल अलग हैं. इनमें तलवार आदमी के दिल में उसके तन मन या धन को कुछ न कुछ नुक़सान पहुँचा कर और उसमें डर पैदा करके अपना मतलब पूरा करती है. इसके ख़िलाफ़ मानव प्रेम की शक्ति अपने प्रेम, त्याग और सेवा से लोगों के दिलों को जीतना चाहती है और इसी रास्ते चलकर अपना मक़सद पूरा करती है.

अगर हम इन दोनों शक्तियों के काम और नतीजों को एख़लाक़ी निगाह से ही देखें तो तलवार दूसरे के दिल में डर बैठा कर उसे किसी एक रास्ते पर चलने के लिये मजबूर करती है चाहे वह रास्ता नेकी का हो या बदी का. इसके ख़िलाफ़ मानव प्रेम आदमी की पूरी आज़ादी कायम रखते हुए उसे अपना मुहब्बत के जादू और त्याग की मोहिनी से बस में करता है. इन दोनों में अपने विरोधी को जीतने और सुधारने की बे अंत शक्ति है. लेकिन तलवार दूसरे को कम या ज्यादा नुक़सान पहुँचाने से कभी भी पाक नहीं हो सकती. या तो यह खुले तौर पर छोटे या बड़े पैमाने पर लोगों को जान और माल का नुक़-सान पहुँचाती है या कभी कभी खुला नुक़सान पहुँचाए बिना ही अपने विरोधी के दिल में डर और हैबत बैठाकर उसे ठीक करने की कोशिश करती है. गिरोहों और क़ौमों की क़ौमों के दिल में यह डर बैठ जाना उनके लिये जान और माल के नुक़-सान से भी ज्यादा बुरा होता है. यह उनके अंदर के ग़ुस्से, नफ़रत

और दुश्मनी को न खतम करता है और न कम करता है. केवल उन्हें इस योग्य नहीं छोड़ता कि वह हिम्मत के साथ अपने दिल के इन भावों को प्रगट कर सकें. इस तरह अन्दर ही अन्दर इन भावों का ज़हर उनमें और भी बढ़ता जाता है. हिंसा की शक्ति का यह बुरा नतीजा इतना बुनियादी है कि उसके ज़रिये कोई सच्चा सुधार हो ही नहीं सकता. सुधार की जगह यह लाखों इंसानों के शरीरों का ही नहीं उनकी आत्माओं और ज़मीरों का भी खून कर देती है.

आज कल के नैतिक साइंस के जानने वाले और मन-विद्या के पंडित इस बात पर सब एक राय हैं कि किसी तरह की भी हिंसा दबाव या सज़ा का ख़याल किसी तालीमी मक़सद या किसी तरह के सुधार को पूरा करने में केवल बेकार ही नहीं बल्कि उल्टा नुक़सान देने वाला साबित होता है. आदमी के अंदर की कमज़ोरियों और बुराइयों को कम करने या सुधारने की जगह वह इन्हें और ज़्यादा गहरा और टिकाऊ बना देता है. इस असूल को आज दुनिया में आम तौर पर तालीम और सुधार के पंडितों ने ठीक मान लिया है. अब इन्सानी दुनिया अपनी सारी तालीमी संस्थाओं, सुधार की कोशिशों यहाँ तक कि जेलों तक में मुजरिमों के सुधार के लिये बिलकुल नये नये तरीक़े काम में लाती जा रही है, जिनमें हिंसा या सज़ा की भावना मिटती जा रही है. इस इन्क़लाब का बुनियादी असूल यह है कि हिंसा और ज़बरदस्ती के तरीक़े बन्द किये जावें और उनकी जगह अहिंसा के तरीक़ों

से काम लिया जावे. यह इस बात का सबूत है कि हिंसा या तलवार सब तरह के सुधार के लिये बिलकुल बेकार है.

जहाँ तक मानव प्रेम का सम्बन्ध है वह किसी को किसी तरह का जान या माल का नुक़सान पहुंचा ही नहीं सकता. वह दोनों तरफ़ के दिलों से डर को बिलकुल मिटा देता है. डर ही हर तरह की हिंसा की जड़ है. जब आदमी बिलकुल निडर हो जाता है तो उसे अपनी रक्षा के लिये भी किसी संगठन की ज़रूरत दिखाई नहीं देती. इसलिये तलवार का यह काम भी कि उससे लोगों की रक्षा की जाती है बिलकुल ख़त्म हो जाता है.

सुधार या रक्षा के अलावा तलवार का एक काम और रह जाता है.वह है दूसरों को जीतना. अव्वल तो इन्सानी दुनिया आज इस गिरी हुई हालत में भी इस तरह के जीतने को नाजायज़ समझती है इसलिये हमारे जीवन के इस पहलू को जारी रखने का सवाल ही नहीं होना चाहिये. फिर भी अगर हम तलवार के इस पहलू का मानव प्रेम के इसी पहलू से मुक़ाबला करें तो इस बारे में भी मानव प्रेम का हथियार ज़्यादा ऊँचा और काम का साबित होता है. मानव प्रेम की शक्ति हार जीत का जवाब त्याग से देती है. इस तरह हार जीत की बुराइयाँ भी बहुत कम हो जाती हैं और धीरे धीरे उसके मिट जाने की भी आशा पैदा हो जाती है. अगर हम त्याग में आदमी को सच्चा आदमी बनाने की शक्ति न भी मानें तब भी हम त्याग के फ़ायदे से इन्कार नहीं कर सकते न हम इस बात से इन्कार कर सकते हैं कि त्याग का रास्ता सुलह और समझौते की राहें खुली रखता है और

खेंचातानी, मारकाट और दुश्मनी की राहों को कम करके उनके मिटने की सूरतें पैदा कर देता है.

जहाँ तक इन दोनों शक्तियों के इस्तेमाल में बाहरी साधनों और सामान की ज़रूरत होती है वहां तक भी इन दोनों में ज़मीन आसमान का फ़रक़ है. तलवार के लिये माद्दी साधनों की बहुत बड़े पैमाने पर ज़रूरत पड़ती है जिसमें अनगिनत दौलत ख़र्च करनी पड़ती है. यह सारे साधन दुनिया को बनाने वाले नहीं बिगाड़ने वाले हैं. इनके जवाब के लिये विरोधी को इसी तरह के घातक साधन काम में लाने पड़ते हैं. इनके मुक़ाबले में मानव प्रेम की शक्ति हमें रचना और स्वावलम्बन की तरफ़ ले जाती है. वह किसी माद्दी साधनों की मोहताज है ही नहीं. इससे भी ऊँची बात उसमें यह है कि उसका असर और जवाब और जवाब का जवाब, दोनों तरफ़ से और दोनों के लिये रचनात्मक होता है. उससे दोनों का सुधार ही सुधार होता है. तीसरा फ़रक़ यह है कि तलवार इन्सानी गुत्थियों को सुलझाती नहीं, उन्हें और भी उलझा कर कड़ा कर देती है. इससे हिंसा और दुश्मनी का एक दौर शुरू हो जाता है जिसे तलवार किसी तरह ख़त्म कर ही नहीं सकती. इस दौर को अगर दुनिया की कोई शक्ति ख़त्म कर सकती है तो वह मानव प्रेम की ही शक्ति है.

इनमें चौथा फ़रक़ यह है कि तलवार अपनी कामयाबी के लिये बाहर के साधनों की मोहताज होने की वजह से अपने से ज़्यादा बड़े और ज़्यादा साधनों वाले संगठन के सामने झुक जाने और हार मान लेने पर मजबूर हो जाती है. इसलिये इसमें कोई आत्म गौरव या ख़ुद्दारी का पहलू है ही नहीं. न इसमें कोई संतोष का

पहलू है. इसके लिये अपना फ़ौजी संगठन हर समय पूरा रखना और उसे बराबर बढ़ाते रहना जरूरी है. जब तक कोई ताक़त दुनिया की सबसे बड़ी ताक़त न बन जावे तब तक उसे यह कोशिश और तैयारी जारी रखनी ही होगी, क्योंकि इसके बिना वह दूसरों से अपने को बचा कैसे सकेगी. दुनिया की सबसे बड़ी ताक़त बन जाने के बाद भी नये दुश्मन पैदा होने और पुराने दुश्मनों के इसके ख़िलाफ़ मिल जाने का डर हमेशा बना रहेगा. तलवार की यह आख़िरी बदनसीबी है कि इसे चैन और शांति कभी मिल ही नहीं सकती, इसके ख़िलाफ़ मानव प्रेम की शक्ति इतना सब्र और शांति पैदाकरती है कि जिस पर कोई बाहर की ताक़त अपना असर नहीं डाल सकती. बाहरी दबाव से असर लेने का डर इसमें बहुत ही कम होता है. इस डर से यह लगभग आज़ाद रहती है. इस निगाह से इसमें सच्ची ख़ुददारी होती है जिसे सारी दुनिया की माद्दी ताक़तें भी मिलकर नहीं मिटा सकतीं.

हमारी सारी पुरानी मज़हबी क़िताबें और संस्थाएँ मानव प्रेम की शक्ति को दुनिया की सबसे बड़ी रचनात्मक शक्ति बताती हैं. वह यह दावा करती हैं कि यह शक्ति हिंसा की हर शक्ति पर हमेशा विजय हासिल कर सकती है. इनका कहना है कि ग़ुस्सा, नफ़रत और दुश्मनी आग का जौहर रखती हैं. तलवार इसी जौहर का साक्षात् रूप है. इसीलिये यह आग दूसरों की आग बुझा नहीं सकती उसे बढ़ा और भड़का ही सकती है. मानव प्रेम की शक्ति इस आग के लिये पानी है जो क़ुदरती तौर पर आग को बुझा देगा या कम कर देगा.

इन धर्म पुस्तकों ने विस्तार के साथ वह साधन बताये हैं जिनसे आदमी इस शक्ति को बड़े से बड़े पैमाने पर अपने अंदर पैदा कर सकता है. जिस तरह बाहर की साइंस में दुनिया के माद्दी क़ानूनों की छानबीन की जाती है उसी तरह मानव प्रेम और आत्मबल के इन जानकारों ने तजरबे कर करके इस शक्ति के असली रूप का पता लगाया है और इस बात की खोज भी की है कि इस शक्ति के ज़रिये इन्सानी ज़िन्दगी की किन किन कठिनाइयों को किस किस तरह हल किया जा सकता है. उन्होंने इस शक्ति से काम लेने के लिये नियम और तरीक़े लिख दिये हैं जिनसे पता चलता है कि किस किस हालत में इस शक्ति से काम लेने के क्या क्या नतीजे होंगे. और उनके बाद फिर क्या क्या करना होगा.

इन खोजों और प्रयोगों से फ़ायदा उठाकर दुनिया के बड़े से बड़े सदाचारी और रूहानी जानकार जैसे ऋषी, मुनि, नबी, वली, तीर्थंकर और अवतार दुनिया के सामने आकर इतिहास के पन्नों पर अपने अचरज भरे कारनामे छोड़ गये हैं. इन कारनामों को देखने से यह साफ़ पता चलता है कि इन्सानों पर अपनी हुकूमत क़ायम करने के लिये तलवार की शक्ति मानव प्रेम की शक्ति का किसी तरह मुक़ाबला नहीं कर सकती.

हम इस सवाल की लम्बी बहस में न जाकर केवल थोड़ी सी मिसालें नीचे देते हैं—

दुनिया के कुछ महान से महान पुरुषों ने जो नैतिक और आत्मिक शक्ति के जानकार थे जैसे बुद्ध, ईसा, मुहम्मद, राम, कृष्ण,

ज़रतश्त, मूसा और इसी तरह के दूसरे देशों के बड़े बड़े बुज़ुर्गों ने दुनिया में अपनी अपनी एख़लाक़ी और रूहानी हुकूमतें जिन्हें हम धर्म मज़हब कहते हैं, क़ायम कीं. अगर हम इन हुकूमतों को देखें और फिर उन हुकूमतों को देखें जो दुनिया के बादशाहों और शहंशाहों ने क़ायम कीं तो साफ़ दिखाई दे जायगा कि जहाँ तक शान शौकत, फैलाव और मज़बूती का सम्बन्ध है, इन दोनों तरह की हुकूमतों का कोई मुक़ाबला ही नहीं हो सकता.

यह कहना कि इन हुकूमतों के क़ायम होने में भी बड़े बड़े पैमाने पर तलवार से काम लिया गया. अगर यह सच भी हो तो, हमारी बात पर इसका कोई असर नहीं पड़ता. क्योंकि अगर हम यों देखें तो जितना हर बादशाह और शहंशाह ने अपनी हुकूमत बनाने और बनाये रखने में इस तरह की मज़हबी संस्थाओं से या मानव प्रेम की शक्ति से काम लिया है वह इतना अधिक है कि जिसके सामने मज़हब का तलवार की मदद लेना कुछ भी नहीं रह जाता. इसके अलावा इतिहास की मदद से यह अच्छी तरह साबित किया जा सकता है कि जिस पैमाने पर किसी मज़हब ने अपने सच्चे मतलब को पूरा करने में तलवार से काम लिया उसी पैमाने पर वह मज़हब अपने असली मक़सद को पूरा करने में नाकाम रहा और उसने अपनी कमज़ोरी और बरबादी के बीज बोये.

दुनिया की एक बड़ी बदनसीबी यह है कि धर्म मज़हबों के बाद के आचार्य और माननेवाले ज्यों ज्यों अपने सच्चे नैतिक और आत्मिक सोतों से दूर होते गये उतना उतना ही वह बाहर के

संसारी साधनों के ज़्यादा ज़्यादा मोहताज होते चले गये, और उनमें दुनिया की वह इच्छाएँ और वह बुराइयाँ जिन्हें मज़हब कम करने और मिटाने आया था बढ़ती चली गईं. राजकाज के हिंसा भरे मैदानों से भी इन मज़हबी संस्थाओं और आचार्यों को तलवार का प्रयोग मिटाना चाहिये था. उनसे आशा थी कि वह राजकाज को भी पूरी तरह सदाचारी और रूहानी शक्तियों के अधीन कर सकेंगे इस सब की जगह धीरे धीरे यह मज़हबी लोग ख़ुद राजकाज के अधीन और फ़र्मांबरदार बन गये और राज दरबारों से लाभ उठाने की इच्छाएं इनकी इतनी बढ़ीं कि अंत को इनमें और दुनिया के दूसरे लोगों में सिवाय ऊपर की दिखावटी और निकम्मी बातों के कोई सच्चा फ़र्क़ या कोई ऊँचाई न रह गई. इसका सबसे बुरा नतीजा यह हुआ कि इन्सानी दुनिया को एक भाईचारे के साँचे में ढालने की जगह यह लोग ख़ुद उस भाईचारे के पैदा होने में सबसे बड़ी रुकावटें और लोहे की दीवारें बनकर रह गये. इनकी इस गिरावट का एक नतीजा यह हुआ कि इन्सानी जीवन के राजकाजी और माली पहलुओं को रूहानी और एख़लाक़ी पहलुओं पर छा जाने का मौक़ा मिल गया. एक तरफ़ रूहानियत और मानव प्रेम और दूसरी तरफ़ राजकाज और तलवार यह दोनों एक दूसरे के ख़िलाफ़ शक्तियाँ थीं जिनका एक जगह पर मिल जाना कठिन ही नहीं बल्कि अनहोनी बात थी. तलवार के साये में रूहानियत का आश्रय लेना अपनी सारी सच्ची ऊँचाई और भलाई को ख़तम कर देना था. इस तरह गिरते गिरते जब इन मज़हबों ने अपने को क़ौमी और नसली ऐसे ही वर्ण और सम्प्रदाय

की गिरोह बन्दियों में बाँट लिया और सच्चे दीन धर्म के टुकड़े टुकड़े कर डाले तो इन्सानी भाई चारे को अमली रूप देने के नैतिक और धार्मिक दरवाज़े बंद हो गये. इसके बाद राजकाजी और दूसरे समाजी नेताओं को इस मक़सद को पूरा करने के दूसरे रास्ते निकालने पड़े जिन्होंने आज लोकराज, समाजवाद (सोशलिज़्म) और साम्यवाद (कम्युनिज़्म) के रूप ले लिये हैं. आज पुराने धर्म मज़हबों के दावेदार बड़े पैमानों पर इन्हीं आन्दोलनों की तरफ़ झुक रहे हैं. उन्हें यह दिखाई नहीं देता कि यह रास्ते उनके अपने मिटने के रास्ते हैं. यह समझ उनमें तभी आ सकती थी जब उनमें कुछ भी सच्चा सदाचार या रूहानियत बाक़ी होती. अगर आज भी वह अपनी असलियत को, अपने दीन धर्म के सच्चे रूप को और दुनिया के झुकाव को पूरी तरह समझ लें तो यह दुनिया की हालत में एक बहुत बड़ा इन्क़लाब पैदा कर दे सकते हैं. इनके लिये सीधा रास्ता यह है कि राजकाज के रौब में न आकर और उसके प्रलोभनों से ऊपर उठकर अपने पुराने दीनों और सदाचारी रास्तों पर आ जायँ और राजकाज से बाहर रह कर एक बड़ा और शानदार नैतिक और आत्मिक संगठन बना लें, जिस संगठन का एक अकेला मक़सद आदमी को आदमी बनाना और दुनिया को राजकाज की भूलों और बुराइयों से बचाना हो. इस संगठन का काम होगा राजकाज को सच्चे धर्म और सदाचार के अधीन करके उसके हाथ से हिंसा और ज़बरदस्ती का हथियार छीन कर उसे मानवजाति का सच्चा सेवक बना लेना. आजकल के

मजहबों के आचार्य अगर यह काम नहीं कर सकते तो दुनिया की भलाई करने के बजाय वह उसकी उन्नति के रास्ते में एक बहुत बड़ी रुकावट होंगे जिसे दुनिया किसी तरह भी देर तक बरदाश्त न करेगी.

सेवक और सेवा

दुनिया की इस तरह की नाजुक और दर्दनाक हालत में बापू का जन्म हुआ. उन्होंने इतिहास में पहिली बार मानव प्रेम को तलवार के मुक़ाबले में लाकर खड़ा कर दिया और वह भी राजकाज के मैदान में. इस ताक़त की मदद से वह इन्सानी जीवन में एक नैतिक इन्क़लाब पैदा करना चाहते थे. जो पाँच बातें किसी भी इन्क़लाब के पैदा करने के लिये ज़रूरी होती हैं और जो बापू ने अपने विधान में रखी हैं उनमें से तीन (मक़सद, साधन, संगठन) हम ऊपर बयान कर चुके हैं. चौथी वह शक्ति है जिसके बल यह इन्क़लाब पैदा किया जा सकता है यानी आत्मबल और मानव प्रेम की शक्ति. पाँचवीं जगह हम उन निस्वार्थ, त्यागी सेवकों को देते हैं जो इस शक्ति की मदद से उस इन्क़लाब को पैदा करेंगे. मानव प्रेम की शक्ति के बारे में हम बहुत कुछ कह चुके अब हम इस विधान के सेवकों की बाबत कुछ कहना चाहते हैं.

जब से बापू को इस शक्ति का और अपने मिशन का अनुभव हुआ तभी से उन्होंने इस तरह के सेवक पैदा करने की कोशिश शुरू कर दी थी जो इस शक्ति को अपने अंदर पैदा करके उस मिशन के पूरा होने में मदद दें. उन्होंने अपने आश्रमों और आन्दोलनों के ज़रिये ऐसे बहुत से सेवक मुल्क में पैदा कर दिये हैं. इस विधान को देखने से मालूम होता है कि बापू ने इन्हीं सेवकों

पर इस नये आन्दोलन के चलाने की जिम्मेदारी डाली है और इस तरह के सब सेवक इस काम में लग सकें इसलिये बापू ने अपने सारे रचनात्मक संगठनों को "लोक सेवक संघ" में मिल जाने को कहा है. जिन संगठनों को उन्होंने इस नये संघ में शामिल किया है उनके नाम हम नीचे देते हैं. यह विधान की दफ़ा दस में दिये हुए हैं.

१. कुल हिंद चरखा संघ
२. कुल हिंद ग्राम उद्योग संघ
३. हिन्दुस्तानी तालीमी संघ
४. हरिजन सेवक संघ
५. गो सेवा संघ

दफ़ा दस में ऊपर के 'मक़सद' कह कर जिन मक़सदों का हवाला दिया गया है उन सब को हम पीछे दे चुके हैं. जो योग्यताएँ सेवकों में होनी ज़रूरी हैं वह भी हम बयान कर चुके हैं. जिन रचनात्मक कामों को पूरा करना इन सेवकों का फ़र्ज़ बताया गया है वह भी लगभग वही सब हैं जिन्हें ऊपर लिखे पाँच संघ मुल्क में चला रहे हैं. इस सब से ज़ाहिर है कि यह नया आंदोलन भी बापू अपने परखे हुए जानकारों के ही सुपुर्द करना चाहते थे और चूँकि इन्हें उस मानव प्रेम की शक्ति से काम लेना था जिसे वह हर तरह की हिंसा से बचाना चाहते थे, इसलिये उन्होंने अपनी पंचायतों में ऐसे सेवकों के सिवाय और किसी को कोई जगह नहीं दी. बापू की ग़रज़ यह थी कि इस नये आन्दोलन को उन बातों से

बचाया जावे जिनकी बदौलत कांग्रेस सीधे रास्ते से भटक चुकी थी. आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सामने विधान की यह शर्त पेश करने के साफ़ मानी यह थे कि कांग्रेस वाले इस बात को अच्छी तरह समझ लें कि उन लोगों को जिनका झुकाव केवल राजकाज की तरफ़ है अब रचनात्मक प्रोग्राम के काम करने वालों की रहनुमाई में काम करना होगा. यह उस हालत को उलट देना था जो पिछले तीस साल तक रह चुकी थी. यह कांग्रेस के पिछले राजकाजी जीवन को मिटा कर उसे एक अहिंसात्मक, रचनात्मक सेवक की तरह काम करने पर मजबूर करना था.

बापू ख़ुद अपनी ज़िन्दगी में इस विधान को अमली रूप देते तो क्या क्या सूरतें पैदा होतीं इसका विचार करना अब कुछ मानी नहीं रखता. ज़ाहिर है कि कांग्रेस इस तरह के इन्क़लाब को पसंद नहीं कर सकती थी इसलिये इस आंदोलन को चलाने का सारा भार और ज़िम्मेदारी उन काम करने वालों पर है जो बापू के पुराने आन्दोलनों में काम कर चुके हैं या ऐसे नये लोगों पर है जो बापू के प्रेमी हैं, उनके असूलों को मानते हैं और अब इसमें अमली हिस्सा लेकर इस आन्दोलन को सफल बनाना चाहते हैं.

बापू हमेशा अपने काम करने वालों के सामने सेवा और त्याग का वह ऊँचा आदर्श रखते थे जो मज़हबी सन्यासियों और योगियों के सामने रहता है. दुनिया के किसी राजकाजी काम करने वालों के सामने सेवा का इतना ऊँचा आदर्श शायद ही कभी रहा हो. ऐसे ही दुनिया के शायद कम काम करने वालों ने इस ऊँचे

आदर्श को हमेशा अपने सामने रखने की इतनी सच्चाई से कोशिश की होगी जितनी बापू के सेवकों ने. फिर भी किसी आदर्श को पूरी तरह अपने जीवन में ढाल सकना आदमी की शक्ति से बाहर है. बापू इस बात को अच्छी तरह समझते थे. इसीलिये वह बड़े प्रेम के साथ हमेशा अपने सेवकों की हिम्मत बढ़ाते रहते थे. अपनी कमज़ोरियों को दूर करने की कोशिश में लगे रहना और अपनी ताक़त और हिम्मत के अनुसार अपनी ज़िम्मेदारियों को लगन के साथ पूरा करने की कोशिश करते रहना यही बापू की निगाह में सच्चे सेवक का काम था. वह कहते थे कि हमारी सच्चाई और कोशिश ही, अगर हम लगे रहेंगे तो हमारी कमज़ोरियों को दूर कर देगी और धीरे धीरे हमारी सेवा के दायरे के बढ़ने के साथ साथ हमारा असर भी बढ़ता जायगा. इस असर का बढ़ना ही हमारी सेवा की सच्चाई की कसौटी होगा

बापू अपने सेवकों के लिये कोई क़ानूनी हक़ या माली साधन या इसी तरह की बाहरी सहूलतें जमा कर देना पसंद न करते थे. वह इन लोगों के सामने हमेशा स्वावलम्बन का आदर्श रखते थे. मानव प्रेम से और अपने त्याग और निस्वार्थ सेवा से लोगों के दिलों को जीतना, अपने समय, अपने साधनों, अपनी सारी शक्ति और श्रद्धा के अनमोल मोती मानव समाज की भलाई पर क़ुर्बान कर देना—यह ही बेलाग सेवा के सच्चे जौहर हैं. इसी से वह नैतिक बल या आत्मबल पैदा होता है जो तलवार और हिंसा से टक्कर लेता है और जो

लोगों के दिलों पर अपना असर डाल कर एक छोटे से सेवक को उनका प्यारा बना देता है. माद्दी शक्ति और बेलाग सेवा दोनों अपनी अपनी हुकूमतें क़ायम करती हैं. एक लोगों के जान और माल पर क़ाबू पाकर, और दूसरी उनके दिल और दिमाग़ पर अपनी मुहब्बत और सेवा का सिक्का जमा कर. एक ख़िराज या टैक्स लेती है, दूसरी अपना सब कुछ दे देती है. तलवार चार दान लेती है तन, धन, जान और हिम्मत. मानव प्रेम चार दान देता है—धन, तन्दुरुस्ती, विद्या और निडरता. यही चार दान बापू ने अपनी समग्र सेवा की दफ़ाओं में शामिल किये हैं. इन्हीं चार दानों से तलवार और राजकाज की सब बड़ी से बड़ी ताक़तों का मुक़ाबला किया जा सकता है. तलवार एक डरावनी चीज़ है. मानव प्रेम और सेवा एक मोहनी शक्ति है जैसे दीपक में परवाने के लिये और चन्द्रमा में चकोर के लिये होती है. यह शक्ति सेवक के त्याग का असर जनता के दिल में डाल कर उसे तलवार के डर और हुकूमत की हिंसा दोनों से निडर और आज़ाद कर देती है और उसके मन की ताक़त को फ़ौलादी बना देती है. त्याग की वह शक्ति जो सेवक में होती है और जिसमें मानव प्रेम की मोहनी घुली हुई है लोगों के दिलों में घुस कर उन्हें माला माल कर देती है. त्याग उनके लिये एक फ़र्ज़ ही नहीं बलकि अन्दर की शांति, संतोष और आनन्द का ज़रिया बन जाता है. बापू अपने सेवकों में यही सेवा की शक्ति और यही मानव प्रेम पैदा कर देना चाहते थे. इस सब के बदले में बापू एक ही

गुरु दक्षिणा माँगते थे. वह यह कि सेवक अपना राज जमाने में इस शक्ति के सिवा दुनिया की किसी दूसरी शक्ति से कोई सहारा न लें. सेवकों के जीवन में यह उसी स्वावलम्बन का चित्र है जो बापू को इतना प्यारा था और जिसे वह सारी सुख शांति और शक्ति का सोता बताते थे. इस विधान में उन्होंने जिन शब्दों में यह गुरु दक्षिणा माँगी है वह हम नीचे देते हैं—"यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि सेवकों की इस जमात को जो कुछ अधिकार होंगे या जो कुछ शक्ति उन्हें मिलेगी वह उस सेवा से मिलेगी जो वह अपने मालिक यानी सारे हिन्दुस्तान की पूरे दिल से ख़ुशी ख़ुशी और समझदारी के साथ करेंगे."

यही बापू का गायत्री मंत्र है. निस्वार्थ सेवा का यही रूप है. लोगों के दिलों को अपनी तरफ़ खींचने के लिये यही चुम्बक शक्ति है. तलवार को क़ाबू में करने का यही वशीकरण मंत्र (तावीज़े हुब्ब) है और नैतिक इन्क़लाब के लिये यही रामबान या इस्मे आज़म है.

बापू का सेवा को अपने विधान में यह शानदार जगह देना, उनके समग्र सेवा के प्रोग्राम को उस ब्रह्म यज्ञ या यज़दानी यज्ञ की शकल दे देता है जिसमें गीता के अनुसार सारे संसार की सृष्टि हुई है. गीता का यह उपदेश निस्वार्थ सेवा और त्याग ही हमको क़ुदरत के सारे क़ानूनों की धुरी बताता है. इस त्याग में हिस्सा लेना सब प्राणियों का फ़र्ज़ है. यही क़ुदरत का नियम और तक़ाज़ा है. कोई जानदार या बेजान इस क़ानून के दायरे से बाहर नहीं जा सकता. अगर वह इस सच्चाई

को समझ कर ख़ुशी ख़ुशी और पूरे दिल से उसमें हिस्सा लेता है तो उससे दुनिया को और दुनिया से उसको बेहद फ़ायदा पहुँचता है. लेकिन अगर वह इस धर्म के रास्ते से, इस राहे-मुस्तक़ीम से भटकता है तो वह क़ुदरत की नियामतों से दूर हट कर दुनिया के दुखों और मुसीबतों में फँस जाता है हो सकता है कि वह इस क़ानून से अनजान हो और अपने संसारी दुख के असली कारनों को न समझ पाता हो पर इससे वह इस क़ानून के नतीजों से बच नहीं सकता. अगर वह समझ कर भी अपने इस फ़र्ज़ को पूरा नहीं करता, तो उसे अपनी इस भारी भूल का ख़मियाज़ा भोगना पड़ेगा.

इसी क़ानून पर हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता की सारी तामीर हुई थी. इसलिये उस सभ्यता ने दुनिया में इतनी ऊँचाई और कामरानी हासिल की पर उस सभ्यता के नाम लेवा त्याग के इस ऊँचे आदर्श पर पूरे न उतर सके. इसी से हमारा देश बरबादी के भँवर में फँस गया है. बापू हमें इस भँवर से निकलने का रास्ता बताने आये थे. हम इसे मानें या न मानें पर क़ुदरत और दुनिया की हालत दोनों यह बता रहे हैं कि हमारे और दुनिया के लिये कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं.

बापू ख़ुद त्याग और मानव प्रेम की मूर्ति थे. उन्होंने निस्वार्थ सेवा की एक बाढ़ इस देश में पैदा कर दी थी. उनके लिये मानव प्रेम वैसी ही असली और सच्ची शक्ति थी जैसी बिजली या ऐटोमिक ऐनर्जी साइंस वालों के लिये. उनका ख़याल था कि हर आदमी यह शक्ति अपने अंदर पैदा कर सकता है और उसे जितना

चाहे बढ़ा सकता है. प्रकृति के नियमों में इस शक्ति के बढ़ने के लिये कोई हद या सीमा नहीं है. न कोई बाहरी रुकावट हमें इस शक्ति के अपने अंदर बढ़ाने में कठिनाई पैदा कर सकती है. रुकावटें जो हैं वह हमारी अपनी पैदा की हुई हैं. मनुष्य ने अपनी ग़लतियों से ही अपने आप को बरबाद किया है. जितनी कोशिश, मेहनत और दौलत खर्च करके हमने अपने तलवारी संगठन को बनाया है और उसे बढ़ाने में जितनी कोशिश, मेहनत और दौलत हम खर्च करते रहते हैं उसका एक छोटा सा हिस्सा भी अगर हम मानव प्रेम की शक्ति को अपने अंदर पैदा करने और बढ़ाने में खर्च करें तो इन्सानी क़ौम की सारी मुसीबतें दमके दम में खतम हो सकती हैं. जनता और राज दोनों मिल कर इस काम को करना चाहें तो लोकराज और इंसानी भाई चारा दोनों का सच्चा दौर इस भूमि पर दो दिन के अंदर क़ायम हो सकता है. इसी आधार पर बापू ने यह कहा था कि अगर राज की बाग मेरे हाथ में आजावे तो मैं बिना फ़ौज और बिना पुलिस की मदद के इसे चला सकता हूँ.

बापू कोई जादूगर नहीं थे. उन्होंने यह बात उसी तरह सोच समझ कर और हिसाब लगा कर कही थी जिस तरह एक साइंस वाला साइंस की बात करता है या हिसाब जानने वाला हिसाब के किसी सवाल का जवाब बताता है. वह जानते थे कि राज अगर अपनी ग़लतियों और भूलों से बाज़ आजावे और खुद मानव प्रेम के आधार पर अपने को चलाने लगे तो इसमें कोई शक नहीं कि वह सारे देश के दिलों को मानव प्रेम से अपने बस में कर

सकता है और देश भर में इस तरह के नये संगठन खड़े कर सकता है जो विरोधी शक्तियों के मुक़ाबले के लिये तलवार से कई गुना ज़्यादा काम के साबित हों. नफ़रतें और ग़ुस्से और एक दूसरे की खेंचातानी मिट सकती है और मुल्क के कोने कोने में एक नई जान, नया जोश और नई तरह का आत्मबल पैदा हो सकता है. यह नामुमकिन बातें नहीं थीं. इसमें केवल जनता और राज दोनों के सहयोग की ज़रूरत थी. बापू को विश्वास था कि अगर राज उनका साथ दे दे तो जनता पूरा पूरा सहयोग देने से इन्कार नहीं कर सकती.

इसका मतलब यह नहीं है कि बापू खुद राजा या बादशाह या वज़ीर या इस तरह की कोई चीज़ बनना चाहते थे. वह केवल हुकूमत से और कांग्रेस से दिली सहयोग की भीक माँग रहे थे. जनता पर तो उन्हें भरोसा था ही. उनका दुख और उनकी बेबसी इसी में थी कि कांग्रेस और राज से उन्हें यह सहयोग न मिल सका.

बिना फ़ौज और बिना पुलिस के राज चलाने के लिये दो बातें दरकार हैं. एक देश को दूसरे देशों के हमलों और चालों से बचाना, दूसरे देश के अन्दर अमन अमान क़ायम रखना.

इनमें पहली बार बापू ने अँगरेज़ी राज की बुनियादों को हिला कर देश को खुद आज़ाद करके दिखा दिया. यह ऐसी हालत में जब कि देश के पास हथियार न थे और देश विदेशी राज की गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ था. अब देश आज़ाद है. वा अपनी शक्ति को समझ चुका है. यह कहना कि इस बदली हुई हवा में बापू अपने मानव प्रेम की शक्ति और अहिंसा के साधनों ं

विदेशी ताक़तो की चालों से मुल्क को न बचा सकते थे, बिलकुल जबरदस्ती है. कोई आदमी जो थोड़ा बहुत भी इंसाफ़ और समझ से काम ले इस तरह की बात नहीं कह सकता.

जहाँ तक देश के अन्दर बिना फ़ौज और पुलिस के अमन अमान क़ायम रखने का सवाल है वहाँ तक बापू ने राज काज से भी बढ़ कर सबूत मानव प्रेम की शक्ति और आत्मबल के कार-नामों के दिये हैं. बापू के जीवन के आख़िरी दिनों के चमत्कार, उस समय जब कि साम्प्रदायिक तूफ़ान अपनी चोटी पर था, दुनिया के किसी भी आदमी को प्रेम की शक्ति और आत्मबल में विश्वास दिलाने के लिये काफ़ी है. हमारे पच्छिमी उस्तादों ने हमें दुनिया का यह एक बुनियादी असूल समझाया है कि कोई काम बिना कारन के नहीं होता. मानी हुई बात है कि नफ़रत, गुस्सा और हिंसा शक्तियाँ हैं और यही वह शक्तियाँ हैं जो आदमी को हैवानी और ख़ूनी हरकतें करने पर मजबूर करती हैं. तलवार इन शक्तियों को लोगों के दिलों में डर बैठा कर दबा सकती है. सदाचार के पंडितों का दावा है कि यह शक्तियाँ मानव प्रेम की शक्ति से भी दबाई जा सकती हैं. जहाँ तक उन साम्प्रदायिक तूफ़ानों का सम्बन्ध है जो बापू के आख़िरी जीवन में देश के बँटवारे से पैदा हुए वहाँ तक हम सब जानते हैं कि हुकूमतों की पुलिस और फ़ौजें उन तूफ़ानों को दबाने में नाकाम साबित हो रही थीं. बापू उस संकट के समय अपने विश्वास से काम लेकर उस तूफ़ान को अपने हथियारों से दबाने के लिये निकल पड़े. नोआखाली में वह पुलिस और फ़ौज के बजाय मुट्ठी भर निहत्थे मर्दों और

औरतों को अपने साथ लेकर चले गये. उन्होंने वहाँ के लोगों की उनके घरों पर जाकर निस्वार्थ सेवा की. इन लोगों में बहके हुए और न के प्यासे इन्सान और सहमे और दबे हुए मज़लूम दोनों शामिल थे. बापू दोनों से मिले. उन्होंने दोनों की सेवा की. दोनों की मदद की. दोनों के दिलों को पिघलाया और बदला. थोड़े ही दिनों में उनके मानव प्रेम की शक्ति ने वहाँ की हवा पर इतना असर डाला कि जितना कोई दूसरी शक्ति न डाल सकती थी. बापू के इस असर को देख कर देश के बड़े से बड़े लोगों ने बापू की नैतिक शक्ति और आत्मबल का सिक्का माना.

बापू के इस असर को अगर हम एक साइन्स वाले की तरह देखें और समझें तो इसका यही मतलब है कि बापू की नैतिक और आत्मिक शक्तियों ने वहाँ के मुसलमानों के ग़लत जोश और हिन्दुओं के डर दोनों पर इतना गहरा असर डाला कि यह दोनों एक बहुत बड़े पैमाने पर ठंडे हो गये. ग़लत जोश, प्रेम और पशेमानी में और डर, हिम्मत और धीरज में बदल गये. इससे एक ही नतीजा निकल सकता है वह यह कि नैतिक साइन्स के जानने वालों का जो दावा मानव प्रेम और आत्मबल की शक्ति के बारे में है वह ग़लत नहीं है.

इसके बाद दूसरी घटना हमें बिहार की मिलती है. बिहार के ज़ुल्मों से बापू की बेचैनी और उनका दुख इतना बढ़ गया था कि उन्होंने नोआखाली ही से बिहार के लोगों को यह सन्देश भेजा कि अगर तुम लोग अपने इन ज़ुल्मों से बाज़ न आओगे तो मैं लाचार होकर अपनी जान दे दूँगा. इससे बढ़कर प्रेम और

दर्द भरा दूसरा संदेश नहीं हो सकता. दुनिया जानती है कि बिहार के लोगों पर इस संदेश का इतना गहरा असर हुआ कि दुनिया की किसी दूसरी शक्ति का न हो सकता था. बिहार वालों के दिलों में बापू का जो प्रेम और आदर था उसका एक कारन वह सेवा थी जो बापू ने हिन्दुस्तान की और ख़ास कर बिहार की की थी. बिहार की यह घटना नोआखाली से भी बढ़कर मानव प्रेम की शक्ति को साबित करती है. बिहार की घटना साबित करती है कि सैकड़ों मील की दूरी पर आत्मबल की शक्ति लाखों आदमियों के दिल को एक बारगी बदल सकती है. यह नतीजे पुलिस, फ़ौज या कोई भी हिंसा का साधन पैदा नहीं कर सकता था. यह इस बात का सबूत है कि मानव प्रेम की शक्ति तलवार की शक्ति से कहीं बढ़कर है.

यही सूरतें कलकत्ते और दिल्ली में दिखाई दीं. सब जगह इस एक ही तरह की घटनाओं से नैतिक साइन्स के जानने वालों का दावा सच्चा साबित होता है. इन सारी घटनाओं को हम जादू या करामात कह कर नहीं टाल सकते.

ख़ास ख़ास जगहों पर बापू का जो इस तरह असर पड़ा उसके अलावा सारे देश पर जो उन्होंने असर डाला वह भी हमारे सामने है. सारी दुनिया इस बात को मानती है कि साम्प्रदायिक तूफ़ान ने जो हालत उस समय पैदा कर रखी थी उसे बापू की मौत के सिवा कोई दूसरी शक्ति बदल न सकती थी. राज की फ़ौजें और पुलिस और दूसरी सारी कोशिशें बेकार साबित हो चुकी थीं. डर था कि अगर यह तूफ़ान और बढ़ा तो सारा मुल्क इसमें पड़

कर बरबाद हो जावेगा. इस सब के बाद भी अगर किसी को मानव प्रेम और आत्मबल की शक्ति में विश्वास न हो तो कमी इसमें उस आदमी की समझ की है.

देश का हर आदमी इस बात को मानता है कि अगर बापू अपने आपको क़ुरबान न करते तो देश, कांग्रेस और राज सबका ख़ातमा होगया होता. फिर जब मानव प्रेम ऐसी तूफ़ानी हालत में देश को इस तरह बचा सकता है तो अगर इसी शक्ति के बड़े से बड़े पैमाने पर देश के कोने कोने में संगठन पैदा कर दिये जावें तो क्या यह संगठन देश में अमन अमान क़ायम नहीं रख सकते? अगर एक महान त्यागी अकेला करोड़ों आदमियों के शैतानी भावों को ऐसे जोश और पागलपन के दिनों में इंसानियत के भावों में बदल दे सकता है तो क्या लाखों आदमी मिल कर कामयाबी के साथ मुल्क में अमन अमान बनाये न रख सकेंगे? जरूरत केवल इस बात की है कि उन लाखों आदमियों को अपने अंदर मानव प्रेम पैदा करने और उसे काम में लाने की तालीम ठीक उसी तरह और उसी पैमाने पर दी जाय जिस तरह और जिस पैमाने पर हिंसा के सिपाहियों को तलवार चलाने और ख़ून बहाने की तालीम दी जाती है. हर आदमी के अंदर इंसानियत और हैवानियत दोनों मौजूद हैं. जिस तरह हम अपने स्कूलों और अपनी सारी जिन्दगी में जाने और अनजाने इतने बड़े पैमाने पर हैवानियत पैदा कर सकते हैं तो क्या हम इन्हीं स्कूलों की तालीम के ढंग को जड़ से बदल कर और उसी तरह अपने जीवन के हैवानी पहलुओं की जगह इन्सानी पहलू क़ायम करके इन्सानियत पैदा नहीं कर सकते?

इन सवालों के जवाब में एक ही बात कही जाती है. वह यह कि बापू महात्मा थे. तो क्या महात्मा आदमी नहीं होता ? क्या वह देवता या फ़रिश्ता होता है ? पर हमारा सवाल तो उन पढ़े लिखे लोगों से है जो साइंस के तरीक़े से सोचते हैं और जो देवता फ़रिश्ते क्या ईश्वर तक को नहीं मानते. जब आदमी के सिवाय और उससे बढ़कर और कोई है ही नहीं तो बापू केवल एक आदमी थे. सवाल यह है कि उस आदमी में यह शक्ति कहाँ से आई ? ज़ाहिर है कि यह उसकी तालीम और तरबियत से ही पैदा हुई होगी. क्योंकि और कोई सूरत तो इसके पैदा होने की हो ही नहीं सकती थी. इसके अलावा हर धर्म मज़हब की ख़ास ख़ास किताबें एक स्वर से इस शक्ति की चर्चा करती हैं और इसके पैदा करने और काम में लाने के ढंग बताती हैं. क्या वह सब ग़लत और बे बुनियाद हैं ? बापू ख़ुद कहते थे कि उन्हें इस शक्ति का पता और इसके बढ़ाने और काम में लाने के तरीक़े इन्हीं धर्म पुस्तकों से मालूम हुए और इन्हीं धर्म पुस्तकों के बताए हुए रास्तों पर चलकर उन्होंने इस शक्ति को अपने अन्दर पैदा किया और इतना बढ़ाया. तो क्या बापू यह सब बातें दुनिया को बहकाने और धोका देने को कहा करते थे ? आख़िर इस बहकाने से उन्हें क्या फ़ायदा हो सकता था ? और अगर उनकी यह सब बातें सच थीं तो क्या हमें उनसे फ़ायदा नहीं उठाना चाहिये.

यह कहना कि हरेक बापू नहीं हो सकता, अव्वल तो वैज्ञानिक निगाह से बिलकुल बेमानी है, दूसरे अगर हम यह मान भी लें तो क्या हम सब छोटे छोटे हज़ारों गांधी नहीं बन सकते ? और

क्या इन सब हज़ारों गांधियों की मिली हुई कोशिश हमारे मतलब के लिये काफ़ी न हो जायगी. क्या और गांधी पैदा करने में इतनी कठिनाई इसीलिये नहीं है कि दुनिया अपनी सारी शक्ति हिटलर, मुसोलिनी और स्टैलिन पैदा करने में ख़र्च कर रही है ? दुनिया ने अपने सारे रीत रिवाज, क़ायदे क़ानून, खेल तमाशे, स्कूल कालिज और जीवन के सब कारबार उन्हीं असूलों पर क़ायम कर रखे हैं जिनसे हिटलर और मुसोलिनी पैदा होते हैं. क्या इन सब चीज़ों, संस्थाओं और उनके बुनियादी असूलों का बदल देना नामुमकिन है ? और क्या मानव प्रेम के इन चमत्कारों और नतीजों को देखते हुए भी हमें इस तरफ़ अमली क़दम नहीं बढ़ाना चाहिये ?

हमारा ख़याल है कि कांग्रेस और हुकूमत को बापू के जीवन और उनकी क़ुर्बानी को इस तरह भुलाना नहीं चाहिये, उन्हें उनसे फ़ायदा उठाना चाहिये.

लेकिन यह साफ़ ज़ाहिर है कि यह कोई आसान बात नहीं है. पच्छिमी तहज़ीब ने हमारे सारे पढ़े लिखे लोगों पर एक गहरा और ख़ास असर डाल रखा है. इसके साथ साथ हमारे मुल्क के क्या भीतरी और क्या दूसरे मुल्कों से ताल्लुक़ रखने वाले बाहरी मामले बहुत ज़्यादा पेचीदा हो गये हैं. इन पेचीदगियों ने हमारी ज़िन्दगी के हर पहलू को ही राजकाजी भँवरों में फंसा दिया है. इन सबसे निकल सकने की कोई सूरत आसानी से दिखलाई नहीं पड़ती है. इस तरह हमारे पढ़े-लिखे और राज काज में लगे हुए लोग अपनी उलझनों में बुरी तरह डूब गये हैं. मगर मुसीबत कुछ और भी है. वह यह कि हमारी अपनी पुरानी

सभ्यता का सारा झुकाव राजनीति से परे था. उसका जोर इसी पर था कि आम लोग राज काज को नजर अन्दाज करें और उससे अलग रह कर अपना काम संभालें. इन सब बातों ने बापू की जिन्दगी से पूरा फ़ायदा उठाने के रास्ते में गहरी दुशवारियाँ पैदा कर दी हैं.

इसके अलावा एक दुशवारी और भी है. बापू एक सम्पूर्ण या मुकम्मल आदमी थे. उनकी जिन्दगी में सब ही पहलू और निशान—चाहे वह समाजी हों चाहे राजकाजी, चाहे एख़लाक़ी और चाहे आत्मिक या रूहानी—अपनी ऊँचाई और बुलन्दी पर मौजूद रहते थे, और एक ही वक्त़ में एक साथ मौजूद रहते थे. इन सब में एक अनोखा तवाज़ुन या समतोल रहता था. बापू का काम करने का ढंग कुछ ऐसा निराला था कि इनमें से कोई भी पहलू कभी नज़रअन्दाज़ नहीं होता था. मगर उनके प्रेमियों और पैरोकारों में यह समतोल पैदा न हो सका. इसलिये वह इन पहलुओं में से किसी एक ही की तरक़्क़ी और सुधार को अपना मक़सद और फ़र्ज़ बना लेने पर मजबूर होते रहे. जिन्दगी के दूसरे पहलुओं से उनका कोई ताल्लुक़ ही बाक़ी न रहा. नतीजा यह है कि जिन्दगी को एकाई की जो तस्वीर बापू के सामने थी, इनमें पैदा न हुई. इसी वजह से किसी एक मरकज़ पर पूरी तरह से जम सकना और मिल कर उस पर जुट जाना इनके लिये नामुमकिन हो गया.

असल बात यह है कि बापू ने अपनी जिन्दगी के अलग अलग पहलुओं में एक ऐसा घुलामिला और मुकम्मल समतोल पैदा

कर लिया था जिसकी मिसाल दुनिया के इतिहास में मिलना मुश्किल है. उनके सामने इन्सानी ज़िन्दगी एक इकाई थी जिसकी एक समूची हस्ती है. उनका ख़याल था कि अगर हम इसके टुकड़े कर देगें तो इसकी असलियत को और इसके सुभाव को नहीं समझ सकेगें और न हम इससे पूरा फ़ायदा ही उठा पायँगे. हमारे जिस्म की तरह ज़िन्दगी भी एक मुकम्मल हस्ती है जिसमें रूह या जान है. इसके हर हिस्से का एक दूसरे के साथ वैसा ही नाता है जैसा हाड़ मांस में या ख़ून और बदन में होता है. नैतिकता या एख़लाक़ियात और अध्यात्मिकता यानी रूहानियात को इन्सानी ज़िन्दगी में बापू वही जगह देते थे जो बदन में दिमाग़ और रीढ़ की हड्डी की है. इस लिये ज़िन्दगी के किसी पहलू से भी नाता अलग कर देने की कोशिश करना या इसके किसी एक ख़ास पहलू पर ही अपना सारा ध्यान व ताक़त लगा देने का नतीजा उनकी राय में यह होगा कि हम अपनी बढ़ौती के असली रास्ते से भटक जायँगे.

यह बापू की बुनियादी तालीम थी. लेकिन हम इस तालीम से पूरा फ़ायदा न उठा सके. नतीजा यह हुआ कि बापू के प्रेमियों में से वह लोग, जिन्होंने रूहानियात को अपना मक़सद बनाया, समाजी और राजकाजी झंझटों से एक दम अलग हो गये. उन्होंने अपने सामने ज़िन्दगी का एक ही मक़सद रखा—आध्यात्मिक तरक़्क़ी.

बापू इस दुनिया और उस दुनिया में कोई भेद नहीं करते थे. उनके सामने ज़िन्दगी और मौत अलग अलग चीज़ें नहीं थीं. वह

जिन्दगी और मौत को ही नहीं बल्कि कुल सृष्टि को वहदत (एकता) का एक ऐसा समूचा और सच्चा स्वरूप मानते थे कि जिसमें पिछले या अगले की कोई गुन्जाइश ही नहीं थी. उनके खयाल में इस वहदत का एक मुकम्मल वजूद है जो न बाँटा जा सकता है न जिसकी कोई हद है और न जो मारा या मिटाया ही जा सकता है. उनको यह भी विश्वास था कि इस संसार व्यापी और अमर स्वरूप के अन्दर इन्सान की भलाई और तरक्क़ी का चाहे वह दीन की हो चाहे दुनिया की, एक ही रास्ता है—त्याग सेवा और प्रेम. ज्ञान, भक्ति और कर्मयोग बापू के लिये अखन्ड थे. इसलिये जिन्दगी की कशमकश से दूर भागना चाहे वह रूहानी मक़सदों के हासिल करने के लिये ही क्यों न हो—बापू की सीधी राह से भटक जाना था.

इसी तरह बापू के प्रेमियों का एक दूसरा गिरोह था जिसने रचनात्मक प्रोग्राम को चलाना अपना मक़सद बना लिया. वह भी असली राजनीति के दायरे से बाहर हो गया. इस गिरोह के लिये बापू यह चाहते थे कि यह राजकाजी जिन्दगी की असहयोग वाली झंझटों और एख़लाक़ी गिरावटों से अलग रहे. इससे उनका यह मंशा था कि यह हिस्सा उनके आन्दोलनों की नैतिक या एख़लाक़ी सतहों को ऊँचा रखने का फ़र्ज़ अदा कर सकेगा. मगर नतीजा यह हुआ कि इन लोगों ने रचनात्मक काम को असली राजनीति के दायरे से बाहर समझ लिया. हुकूमत के सीधे सुधार की कोशिश करना या उसकी पालिसियों को अपने असूलों और क़ायदों के मुताबिक़ पाबन्द बनाने के लिये उसे मजबूर करना—

इनके खयाल में रचनात्मक काम का कोई असली हिस्सा नहीं था. इनके इस ख़याल ने, जैसा कि हम कह चुके हैं, रचनात्मक प्रोग्रामों को नीरस और बेजान कर दिया.

जब तक बापू ज़िन्दा थे और परदेसी सरकार से लड़ाई जारी थी हमारे इस नासमझी के ख़तरनाक नतीजे साफ़ साफ़ सामने न आ सके. लेकिन हमारी आज की हालत साफ़ बताती है कि हम बापू के असली असूलों और मक़सदों से कितने दूर हो गये हैं. बापू अपने व्यवहारिक जीवन में तो सर से पाँव तक राजनिति की लड़ाइयों में या इनकी तैयारियों में डूबे रहते थे. जब तक विदेशी राज क़ायम था बापू का कहना था कि मैं अपनी ज़िन्दगी का एक एक छन इस हुकूमत से लड़ने में या लड़ने की तैयारी में ख़र्च करता रहता हूँ, क्योंकि जब तक मुल्क को आज़ादी न मिल जाय मेरे लिये ज़िन्दगी और यह जंग दोनों एक हैं. इनमें से किसी को भी मैं एक छन के लिये नज़र अन्दाज़ नहीं करता. यह ज़रूर है कि ज़रूरत के लिहाज़ से मेरे प्रोग्रामों के रूप बदलते रहते हैं. हम यह भी जानते हैं कि मरते दम तक उनकी यह जंग बराबर जारी रही. उनकी आख़िरी वसीयत इस बात का सबूत है. इसकी प्रस्तावना में उन्होंने कहा है कि अब तक मुल्क को असली आज़ादी किसी माने में भी हासिल नहीं हुई है. और इसकी ख़ातिर हमें अपनी जंग को बराबर जारी रखना है.

बापू का कहना था कि अगर कोई मेरे असूलों और काम करने के ढंगों को पूरी तरह समझना चाहे तो वह मेरी बातों पर नहीं बल्कि मेरे कामों पर ध्यान दे. अगर वह इन्हें पूरी तरह समझ

लेगा तो मेरी ज़िन्दगी का सारा गुर उसकी समझ में आजायगा. फिर अगर हम बापू की ज़िन्दगी में से उसका राजनीति से ताल्लुक़ रखने वाला हिस्सा निकाल दें तो वह बेजान सी रह जाती है और अधूरी तो हो ही जाती है. इसमें ज़रा भी शक नहीं कि बापू ख़ुद राजनीति से बहुत दूर ऊंचे और पहुंचे हुए थे. उनका सर हमेशा आकाश की ऊँचाइयों से टक्करें लेता था लेकिन इसमें भी शक नहीं कि उनके पैर धरती पर ऐसे जमे रहते थे कि व्यवहारिकता या असलियत (Practicalism) वास्तविकता या असलियत (Realism) और भौतिकता या माद्दियत (Materialism) के बड़े से बड़े पुजारी उनके सामने हमेशा झुकते रहते थे. उनके जीवन के राजकाजी पहलुओं को ओझल करना एक समूची, सुन्दर औ अमिट तसवीर को बिगाड़ देना और उजाड़ देना है. यह ऐसा ही है जैसे हम किसी इन्सान के जिस्म से गोश्त, पोस्त, रग-पट्ठे सब निकाल कर उसकी हड्डियों के पिंजर को अपने सामने रख कर उसे असली चीज़ समझ लें. बापू राष्ट्र के सुधारक और हर इन्सान के सेवक थे. दुनिया की हालत इस वक़्त ऐसी हो गई है कि हमारे असली जीवन की सच्ची इसलाह बिना राजकाजी सुधार के नहीं हो सकती. अगर बापू राजकाजी सुधार को अपना ख़ास मक़सद न बनाते तो इससे उनके सारे मिशन का ही ख़ातमा हो जाता. सच तो यह है कि बापू के जीवन के इस पहलू को हमने वह जगह ही न दी जो इसे मिलनी चाहिये थी. इसीलिये हम बापू के रचनात्मक प्रोग्राम के असली मक़सद से बहुत दूर हो गये हैं.

मगर इससे भी ज़्यादा बदनसीबी की बात एक और हो गई. वह यह कि बापू के साथियों का तीसरा दल जो राजनीति में गया और जिसकी तादाद दूसरे दलों से बहुत ही ज़्यादा थी, उस दल ने बापू की तालीमों और तरीक़ों को दिल से स्वीकार नहीं किया. पच्छिम का इसके ऊपर इतना गहरा और अमिट असर था कि बापू की कोशिश से वह मिट न सका. राजकाजी कामयाबी पाने और ताक़त मिलने के साथ साथ यह असर और भी गहरा रंग पकड़ता गया. बापू की मौत के वक़्त तक यह हालत बदल न सकी. इसका यह नतीजा है कि हमारे देश का राज काजी रूप-रंग कुछ ऐसा हो रहा है मानो इस देश में बापू कभी पैदा ही नहीं हुए थे. असल बात यह है कि बापू की ज़िन्दगी का बेहतरीन हिस्सा इस गिरोह को मुल्क पर विजयी बनाने की कोशिश में ख़त्म हुआ था. एक लम्बे अरसे तक अपने मक़सदों को हासिल करने की उनकी सारी उम्मीदें इसी गिरोह के साथ घुली-मिली रही थीं. और यही नहीं बल्कि अपने इन्हीं प्रेमियों को पीछे रख कर बापू अपने आप को हमेशा इसी दल पर क़ुरबान करते रहते थे. इसलिये देश की जनता पर भी यह ज़बरदस्त असर पड़ गया है कि यह दल बापू का सच्चा अनुयायी है. इसका नतीजा यह हुआ कि जब यह गिरोह बापू के असूलों और आदर्शों से हट कर पच्छिम का प्रेमी और अनुयायी बना तो बापू के मिशन के पूरे होने में वह दुशवारियाँ और ख़तरे पैदा हो गये जो दुनिया की कोई दूसरी ताक़त पैदा न कर सकती थी. आज

बापू के मिशन की कामयाबी के रास्ते में यही सबसे बड़ी रुकावट है.

मगर यह सारी दिक्कतें ऊपरी और कुछ देरी हैं. इन्सानी जिन्दगी की आत्मिक या रूहानी ताक़तें और अन्दोलन—चाहे हम उन्हें देख सकें या न देख सकें—अपना काम बराबर करते रहते हैं. हजरत ईसा के गुज़र जाने के सौ साल बाद उनका सदेश मौजूदा बाइबिल के रूप में दुनिया के सामने आया था. मुहम्मद साहब ने अपनी नबूवत के पहले तेरह साल की खेंचातानी और तनमारी के बाद १८२ मुसलमान बनाये थे. इनमें से लगभग सब ही अपने जान व माल की हिफ़ाजत के लिये अपना वतन छोड़ देने पर मजबूर हो गये थे. मगर इसके बाद दस साल के अन्दर ही सारा अरब मुसलमान हो गया और अगले तैंतीस साल के भीतर इसलाम दुनिया के कोने कोने तक पहुँच गया. महात्मा बुद्ध के जीते जी उनके मिशन का असर हिन्दुस्तान पर भी बहुत थोड़ा पड़ सका था मगर आज यह असर तमाम इन्सानी जीवन में इस तरह घर किये हुए है जिस तरह भौतिक या माद्दी दायरे मे बिजली. असल बात यह है कि अगर हम किसी पहुँची हुई और आलीशान रूहानी हस्ती की जिन्दगी पर नज़र डालेंगे, वह बुद्ध, मुहम्मद, ईसा या कोई भी हो, तो हमें एक ही सच्चाई नजर आयगी. वह यह कि इन जन सेवकों के मिशनों की कामयाबी इनकी जिन्दगी के मुक़ाबले में इनकी मौत के बाद हज़ारहा गुनी ज्यादा होती रहती है. राजे,

महाराजे, शहंशाहों के राज उनकी मौत के बाद ख़त्म हो जाते हैं. लेकिन जो राज या हुकूमतें यह जन सेवक लोगों के दिलों, भावनाओं और जज़्बों पर क़ायम करते हैं वह उनके मरने के बाद भी हमेशा फूलती-फलती और फैलती रहती हैं.

हम इन महात्माओं के मिशन का अन्दाज़ा उन धर्मों या मज़हबों की मौजूदा हालत से नहीं लगा सकते जो आज दुनिया में इनके कहे पर चलने का दावा कर रहे हैं. यह सब धर्म तो उन नैतिक और रूहानी बाढ़ों या सैलाबों के भौतिक (माद्दी) गत-चित्र (पत्र अन्दाज़े) हैं जिनकी लहरें दुनिया में फैल-फैल कर अपना कम कर चुकी हैं. और आज भी कह रही हैं कि यह तो वह कीड़े-खाये सांचे हैं जो अपने टूटने और मिटने के लिये दूसरे ऐसे ही सैलाबों का इन्तज़ार कर रहे हैं वह सैलाब चाहे राजनीति की तरफ़ से आवें या रूहानियत या अध्यात्मिकता की तरफ़ से आवें. सारे संसार की पहुँची हुई महान आत्मायें पहले दिन से लेकर आज तक हमेशा एक ही रूहानी और नैतिक संदेश दुनिया में पहुँचाती रही हैं. यह संदेश 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (अख़ूवते इन्सानी) का है. इनके इसी संदेशों ने इन्सानी दुनिया में वह सारे पहलू और बीज पैदा किये हैं जिन्हें हम इन्सानियत कहते हैं. इन्हीं संदेशों से वह असूल और कारवाइयाँ, वह भले और बुरे के भेद, वह मुहब्बत और नफ़रत के रिश्ते और ताल्लुक़ पैदा हुए जिनके गारे और ईंटों की मदद से हमारी कलचरों, सभ्यताओं और तहज़ीबों की इमारतें तैयार होकर खड़ी हुईं

हैं और आज दुनिया में जितने भी राजकाजी आन्दोलन हैं वह बड़ी राज़ी-ख़ुशी और खुले दिल के साथ, जान में या अनजान में, इन्हीं संदेशों को पूरा करने में लगे हुए हैं. इन सबका भी एक ही सच्चा ध्येय है—'वसुधैव कुटुम्बकम्' की स्थापना, अख़ूवते इन्सानी की तकमील. बापू ने अपने से पहले आने वाले सारे आलीशान पीरों, पैग़म्बरों और फ़क़ीरों की सिर्फ़ तसदीक़ ही नहीं की है, सिर्फ़ इन संदेशों की वहदत (एकता) को ही रोशन नहीं किया है, बल्कि उन्होंने संसार के सामने एक नया नैतिक और आध्यात्मिक साधन लाकर रख दिया है जो इसकी बढ़ोत्तरी के रास्ते से उन सारी रुकावटों और मुसीबतों को मुस्तक़िल तौर पर दूर कर सकता है, जो इतिहास के शुरू से ही इस रास्ते की सबसे बड़ी दुशवारियाँ साबित होती रही हैं. आज दुनिया ऐसे संदेशों की प्यासी और ऐसे साधन की हाजत में है. आज यह ख़ुद ही परेशान है अपनी उन ग़लत कारवाइयों के हौलनाक नतीजों से जिन्होंने इसे घायल कर दिया और झकझोड़ दिया है और इसकी जान को ख़तरे में डाले हुए हैं. बापू का संदेश इसके लिये मरहम और अमृत है. ऐसे संदेश इन्सानी इतिहास में कभी नजरअन्दाज़ नहीं हुए. वह ऊपरी और कुछ देरी बेरुख़ी और लापरवाही जो आजहम बापू के असली आन्दोलन की तरफ़ से देख रहे हैं, कभी क़ायम नहीं रह सकती. हमें पूरा भरोसा है कि दुनिया इसका स्वागत करेगी और इसका पूरा पूरा लाभ उठायगी.

लेकिन सवाल यह है कि यह कब होगा और तब तक हमारा हिन्दुस्तान क्या करेगा. इसमें शक नहीं कि बापू की मौत ने चारों तरफ़ गहरा सन्देह पैदा कर दिया है. असल में बापू ही अपने जीवन में इस आन्दोलन के अगुआ और राह दिखाने वाले थे. इसके निज़ाम में उनका वही मुक़ाम था जो सूरज का दुनिया के निज़ाम में है. उनकी रूहानी कशिश या शक्ति मुख़तलिफ़ और एक दूसरे के ख़िलाफ़ दिखाई पड़ने वाली हस्तियों और जमातों को एक मरकज़ पर खेंच लेती थी. वह हर आला और अदना इन्सान से—चाहे वह किसी भी क़ाबलियत और जमात का क्यों न हो—एक ही तरह अपने मक़सदों को पूरा करने में काम ले लिया करते थे. इस सूरज के डूब जाने से सारा निज़ाम बिखरा हुआ सा दिखलाई पड़ता है. मगर सूरज के डूबने से उसके निज़ाम में कोई असली या देरपा तबदीली थोड़ी पैदा होती है. वह ताक़तें जिन्होंने बापू को पैदा किया था अपनी जगह पर वैसी ही बाक़ी हैं. इसलिये किसी बुनियादी इन्क़लाब का सवाल पैदा ही नहीं होता. यह विचार कि जब बापू अपनी ज़िन्दगी में ख़ुद ही कुछ न कर सके तो उनके अनुयायी बेचारे क्या कर सकेंगे बिलकुल बे बुनियाद और बेमानी है. असलियत यह है कि बापू के अनोखे और शानदार जीवन ने और उससे भी कहीं ज़्यादा अनोखे और शानदार बलिदान ने हमारे मुल्क पर ही नहीं बल्कि तमाम दुनिया पर अपनी गहरी छाप डाल दी है. जो नैतिक और रूहानी तूफ़ान उनकी वजह से पैदा हुआ उसकी मौजें—चाहे वह हमें दिखलाई न पड़ें—दुनिया की ज़िन्दगी में हिलोरें ले रही हैं. यह सब जानते हैं

कि जहाँ धरती के तले बारूदी सुरंगें बिछाई जाती हैं वहाँ ए
चिन्गारी भी बहुत ही जबरदस्त नतीजे पैदा कर सकती है.
चिन्गारी का असर करने का तरीक़ा कुदरत के क़ानूनों के मातहत
है. कुदरत के क़ानूनों की तरह नैतिकता या एख़लाक़ के क़ानून
भी अचल और अटल हैं. जो रूहानी सुरंग बापू के आत्मबल ने
इन्सानी जीवन में फैला दी थी उसमें उनके बेमिसाल बलिदान ने
लाज़िमी तौर पर और भी ज्यादा गर्मी और तेजी पैदा कर दी
है. हवा तैयार है. देखना यह है कि इसमें चिन्गारी आती किधर
से है.

बहुत कुछ मुमकिन यही है कि यह चिन्गारी उन्हीं लोगों
आयगी जिन्होंने नेकनियती के साथ अपने जीवन को बापू के
मिशन को पूरा करने के लिये न्योछावर कर दिया है. इसमें शक
नहीं कि ऐसे लोगों की तादाद मुल्क में बहुत कम है. लेकिन
सत्याग्रह का यह एक बुनियादी असूल है कि इसमें तादाद की
कोई ख़ास अहमियत नहीं होती. चन्द हस्तियाँ ही, अगर वह
सच्ची सत्याग्रही हैं, तो देश की बड़ी से बड़ी सेवा कर सकती
हैं और इसे बड़े से बड़े ख़तरों से बचा लेंगी. हम सब देख चुके
हैं कि बापू ने कैसे अकेले एक सत्याग्रही की हैसियत से अंग्रेज़ी
हुकूमत का मुक़ाबला किया और बहुत बड़े पैमाने पर कामयाबी
पाई. हम यह भी देख चुके हैं कि उन्होंने अकेले ही फ़िरक़ेवाराना
तूफ़ान पर कितना गहरा और कितना बड़ा असर डाला. इससे
ज्यादा उम्मीद और हिम्मत दिलाने वाली बात क्या हो सकती है?
यह भी साफ़ ज़ाहिर है कि बापू की सारी कामयाबी का असली

रन उनका गोश्त और हड्डियाँ न थीं बल्कि वही असूल और
रवाइयाँ थीं जिनकी उन्होंने हमें बराबर तीस साल तक असूली
ौर अमली तालीम दी है. बापू चले गये लेकिन उनके सारे
ासूल और काम करने के तौर-तरीक़े आज भी जिन्दा हैं. हम
ह चुके हैं कि दुनिया की महान आत्मायें अपनी सारी ताक़त
ौर ऊँचाई अपने आप को कुछ नैतिक असूलों का पाबन्द बनाकर
ासिल करती हैं. फिर वह अपने बड़े बड़े तजरबों की रोशनी में
न्हीं असूलों की बारीकियाँ और गहराइयाँ खोलकर पूरे ब्योरे के
ाथ दुनिया के सामने पेश करती हैं और अपने व्योहार से इन
असूलों की ताक़त के नज़ारे लोगों को दिखला कर उनके अन्दर
न असूलों की असलियत का विश्वास और इनकी ताक़त का
हसास पैदा कराती हैं. तो फिर जब सूरत यह हो और जब
मारी तालीम, शिक्षा-दीक्षा के लिये हमारी पुरानी तहज़ीब का
भंडार मौजूद ही हो, जब बापू की तालीम और उनके बेमिसाल
क़ारनामे और कामयाब अनुभव हमारी आँखों के सामने हों, तो
फिर हमें कमी किस बात की है, घबराना किस चीज़ से है ? ज़रूरत
महज़ इस पर तैयार हो जाने की और इस पर जुट जाने की है.
अगर बापू के प्रेमी और अनुयायी एकमत होकर उनकी आख़िरी
वसीयत के पूरा करने को अपना अकेला मक़सद बना लें तो
दुनिया की कोई ताक़त नहीं है कि जिसका मुक़ाबला वह कामयाबी
के साथ न कर सकें. लक्ष्य पर पहुँचने की कोशिश ही हमारी सफलता
की असली कुन्जी है. जिनका यह विश्वास है कि दुनिया की
खेंचातानियों के बीच आख़िरी और असली सूरत में नैतिक असूल

औरता क़तें ही अनैतिक असूल और ताक़तों पर हमेशा विज
पाते हैं और जो इस विजय को समाजी और क़ुदरती क़ानूनों
नतीजा समझते हैं उनके लिये इस रास्ते पर चलने में गिरने
उठने का कामयाबी या ना कामयाबी का सवाल ही पैदा न
होता. अपने लक्ष्य को सामने रखकर उसकी तरफ़ बढ़ने
भाव और कोशिश—यही उनका जीवन है.

बापू के भक्त इस लक्ष्य की तरफ़ बढ़ें या न बढ़ें मगर देश
जनता बहुत अरसे तक इससे बेख़बर नहीं रह सकती. बापू
मिशन ही इसकी सच्ची तरक़्क़ी और बेहतरी का अकेला ज़रि
है. देश का कोई ख़ास दल बापू का प्रेमी या अनुयायी हो या
हो, मगर इससे इन्कार नहीं हो सकता कि जनता उनकी सच्
प्रेमी है और उन पर जान दे देने वाली है. बापू जनता के दु
दर्द को हमेशा के लिये दूर कर देना चाहते थे. वह जनता
अन्दर वह नैतिक ताक़त पैदा करना चाहते थे जिससे वह अप
देश की सच्ची मालिक और रक्षक बन सके. वह जनता के अन्द
अपनी पुरानी तहज़ीब को उन आध्यात्मिक ऊँचाइयों का अन्दा
पैदा कराना चाहते थे जिन्होंने इसे दुनिया में हमेशा हरा-भ
और ख़ुश रखा है, इसका सर हमेशा ऊँचा उठाया है और इ
इज्जत दी है. हम कह चुके हैं कि मुद्दतों से ही यह हमारी पुरा
तज़ीब दुनिया के कोने कोने को नैतिक और रूहानी ख़ुरा
पहुँचाने की सेवा करती रही है. आज दुनिया अपने इतिहास
एक बहुत ही ख़तरनाक दौर से गुज़र रही है. इसके बहते हु
सैलाब में बापू हिमालय की ऊँची चोटी पर खड़े होकर अप

तेजमय किरनों से दुनिया की तूफ़ानज़दा बरबाद क़ौमों को असली जीवन देने वाले किनारे की राह दिखा रहे हैं. हमारी पुरानी सभ्यता ने सदियों से डूबने वालों की आहें और दर्द भरी पुकारें सुनकर संसार की बेहतरी और हिदायत के लिये इस तेजमय ज्योति को पैदा किया है. हमारा देश हमेशा से इस ज्योति का मानने वाला और पालने-पोसने वाला रहा है. आज भी यही हमारा कर्त्तव्य है, यही हमारा फ़र्ज़ है कि जिस महायज्ञ में हिस्सा लेने के लिये बापूने अपने जीवन के जगमगाते कारनामों और अपने बलिदान की तेजमय ज्योति से हमें दावत दी है उस यज्ञ को कामयाब बनावें. यही एक अकेला रास्ता हैं हमारी मुक्ति का, यही एक अकेला रास्ता है दुनिया की निजात का.

आज के शहीद

(सम्पादक श्री० रतन लाल बंसल)

आज के शहीद में उन बहादुरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी.

आज के शहीद में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने फूट और नफ़रत के अंधेरे में रोशनी बनकर दूसरों को रस्ता दिखाया.

आज के शहीद में देश पिता महात्मा गांधी के साथ-साथ श्री गणेश शंकर विद्यार्थी, श्री लाल मोहन सेन, श्री बसन्त राव हेंगिष्टे, जनाब रज्जब अली, श्री शचीन्द्रनाथ मित्र, मीर मक़बूल शेरवानी श्री स्मृतीश बनर्जी और जनाब शोएबुल्ला ख़ाँ वग़ैरा के जी और बलिदान की कहानियाँ पढ़कर आप सोचने के लिये मज हो जायँगे कि धर्म के सच्चे सेवक यह शहीद थे या वह फ़िरक़ा परस्त नेता जो बात-बात में धर्म और दीन का नाम लेकर इन्सानों को इन्सानों से नफ़रत करना सिखाते हैं.

अगर आपको इन्सानियत पर विश्वास और राष्ट्र पिता महात्मा गांधी के मिशन से प्रेम है तो आप इस किताब को न सिर्फ़ ख़ुद पढ़ें बल्कि अपने दोस्तों को भी पढ़ने की सलाह दें.

सुन्दर जिल्द और आर्ट पेपर पर छपी आठ तस्वीरों के सा इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया रक्खा गया है. किताब उ और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है.

मैनेजर 'नया हिन्द' ४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद.